المملكة العربية السعودية

547

وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد

हिस्नुल मुस्लिम

(क़ुरआन व हदीस की दुआयें)

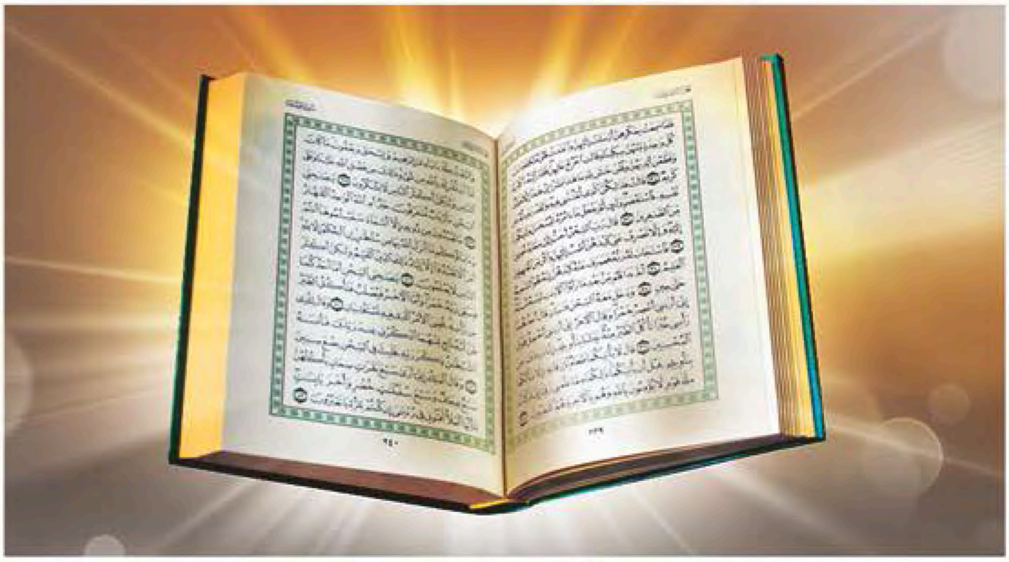

मुद्रक व प्रकाशक

मंत्रिमंडल इस्लामिक विषय, औक़ाफ़ एवं आमन्त्रण व निर्देश

सऊदी अरब

وكالة المطبوعات والبحث العلمي

info@islam.org.sa

हिस्नुल मुस्लिम

(क़ुरआन व हदीस की दुआयें)

लेखक

डा॰ सईद बिन अली अल-क़हतानी

अनुवादक

अबू फैसल-आबिद सनाउल्लाह मदनी

मुद्रक व प्रकाशक

मंत्रिमंडल इस्लामिक विषय, औक़ाफ़ एवं

आमन्त्रण व निर्देश

सऊदी अरब

1436 H

ح وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد، ١٤٣٢ هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر
القحطاني، سعيد بن علي بن وهف
حصن المسلم باللغة الهندية. / سعيد بن علي بن وهف القحطاني.- الرياض، ١٤٢٧هـ
٢٠٨ ص؛ ١٢ × ١٧ سم.
ردمك: ٦-٤٥٣-٢٩-٩٩٦٠
١- الأدعية والأوراد
أ- العنوان
ديوي ٢١٢,٩٣ ١٤٢٥/٥٤١٥

رقم الإيداع: ١٤٢٥/٥٤١٥
ردمك: ٦-٤٥٣-٢٩-٩٩٦٠

الطبعة الثانية عشرة
١٤٣٦هـ

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
ज़िक्र की फ़ज़ीलत	११
नींद से जागने के बाद की दुआयें	२०
कपड़ा पहनते समय की दुआ	२६
नया कपड़ा पहनने की दुआ	२६
नया कपड़ा पहनने वाले को क्या दुआ दी जाये	२७
कपड़ा उतारे तो क्या पढ़े ?	२७
शौचालय में दाख़िल होने की दुआ	२८
शौचालय से निकलने की दुआ	२८
वुज़ू शुरू करते समय की दुआ	२९
वुज़ू से फ़ारिग़ होने के बाद की दुआ	२९
घर से निकलते समय की दुआ	३०
घर में दाख़िल होते समय की दुआ	३१
मस्जिद की ओर जाने की दुआ	३२
मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ	३४
मस्जिद से निकलने की दुआ	३५
अज़ान की दुआयें	३५
नमाज़ शुरू करने की दुआयें	३८
रुकूअ की दुआयें	४६

रुकूअ से उठने की दुआ ४७
सजदे की दुआयें...४९
दोनों सजदों के बीच बैठने की दुआयें ५२
सजदये तिलावत की दुआ ५२
तशह्हुद की दुआ ५४
नबी करीम ﷺ पर दरूद ५४
आख़िरी तशह्हुद के बाद और सलाम
फेरने से पहले की दुआयें ५६
नमाज़ से सलाम फेरने के बाद की दुआयें ६३
इस्तिख़ारा की दुआ ७०
सुबह और शाम के अज़कार ७४
सोते समय की दुआयें..९४
रात को करवट बदलते समय की दुआ....................१०५
नींद में बेचैनी और घबराहट तथा वहशत (डर) की दुआ...१०५
कोई आदमी बुरा ख़्वाब (सपना) देखे तो क्या करे? १०६
कुनूते वित्र की दुआ...१०७
वित्र का सलाम फेरने के बाद की दुआ ११०
ग़म (चिन्ता) और फ़िक्र से मुक्ति पाने की दुआ...........१११
बेक़रारी तथा बेचैनी की दुआ (दुर्घटना के समय की दुआ).. ११२
दुश्मन तथा शासनाधिकारी से मुलाक़ात के समय की दुआ..११४
शासक के अत्याचार से बचने की दुआ ११५
दुश्मन पर बद्दुआ ११७

जब किसी क़ौम से डरता हो तो क्या कहे?............... ११८
जिसे अपने ईमान में शक होने लगे तो वह यह दुआ पढ़े.... ११८
क़र्ज (श्रृण) की अदायगी के लिए दुआ ११९
नमाज़ में या क़ुरआन पढ़ते समय उत्पन्न
होने वाले वस्वसों से बचने की दुआ........................ १२०
उस आदमी की दुआ जिस पर कोई काम मुश्किल
तथा कठिन हो जाये १२१
गुनाह कर बैठे तो कौन सी दुआ पढ़े और क्या करे? १२२
वह दुआयें जो शैतान और उसके वस्वसों को दूर करती हैं . १२३
जब कोई ऐसा वाक़िआ हो जाये जो उस की इच्छा
और मर्ज़ी के विरूद्ध हो या कोई काम उसकी ताक़त,
शक्ति और क्षमता से बाहर हो जाये तो क्या कहे ?...... १२४
जिसके यहाँ कोई संतान (औलाद) पैदा हो उसे किस
प्रकार मुबारकबाद (दुआ) दी जाये और जिसे मुबारकबादी
दी जा रही हो वह मुबारकबाद देने वाले के लिए क्या कहे?. १२६
बच्चों को कौन से कलिमात के साथ पनाह दी जाये......१२७
बीमार पुर्सी के समय मरीज़ के लिए दुआ..................१२७
बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत...................................१२८
उस रोगी की दुआ जो अपने जीवन से निराश हो चुका हो.. १२९
जो व्यक्ति मरने के क़रीब हो उसे यह कलिमा
पढ़ाया जाये १३१
जिसे कोई मुसीबत पहुँचे वह यह दुआ पढ़े................१३२
मृतक की आँखें बन्द करते समय की दुआ.................१३२

नमाज़े जनाज़ा की दुआ १३३
बच्चे की नमाज़े जनाज़ा के दौरान की दुआ १३६
ताज़ियत (मृतक के घर वालों को तसल्ली देना) की दुआ ... १३८
मय्यत को क़ब्र में दाख़िल करते समय की दुआ १३९
मय्यत को दफ़न करने के बाद की दुआ १४०
क़ब्रों की ज़ियारत की दुआ..................................... १४०
हवा चलते समय की दुआ...................................... १४१
बादल गरजते समय पढ़ी जाने वाली दुआ १४२
वर्षा माँगने की कुछ दुआयें १४३
वर्षा उतरते समय की दुआ १४४
वर्षा समाप्त होने के बाद की दुआ १४४
वर्षा रुकवाने के लिए दुआ १४५
नया चाँद देखते समय की दुआ १४५
रोज़ा खोलते समय की दुआ.................................. १४६
खाना खाने से पहले की दुआ १४७
खाने से फ़ारिग़ होने के बाद की दुआ...................... १४८
मेहमान की दुआ खाना खिलाने वाले मेज़बान के लिए... १४९
जो आदमी कुछ पिलाये या पिलाने की इच्छा करे
उस के लिए दुआ १५०
जब किसी घर वालों के यहाँ रोज़ा इफ़्तारी करे तो
उनके लिए दुआ करे.. १५०
दुआ जब खाना हाज़िर हो और रोज़ादार रोज़ा न खोले ...१५१

रोज़ादार को जब कोई गाली दे तो क्या कहे? १५१
पहला फल देखने के समय की दुआ........................१५२
छींक की दुआ...१५२
जब काफ़िर छींकते समय अलहम्दुलिल्लाह कहे तो
उसके लिए क्या कहा जाये...............................१५३
शादी करने वाले के लिए दुआ १५३
शादी करने वाले की अपने लिए दुआ और सवारी
ख़रीदने की दुआ १५४
जिमाअ (सम्भोग) से पहले की दुआ १५५
ग़ुस्सा (क्रोध) समाप्त करने की दुआ १५५
किसी बीमारी या मुसीबत में मुब्तला आदमी को देखे
तो यह दुआ पढ़े १५६
मजलिस में पढ़ने की दुआ १५६
मजलिस के गुनाह दूर करने की दुआ
(मजलिस का कफ़्फ़ारा)....................................... १५७
जो आदमी कहे "ग़फ़ारल्लाहु लका" अर्थात अल्लाह
तुझे बख़्श दे उसके लिए दुआ............................ १५९
जो अच्छा सुलूक (व्योहार) करे उसके लिए दुआ......... १५९
वह दुआ जिसके पढ़ने से आदमी दज्जाल के
फ़ितने से सुरक्षित रहता है १६०
जो आदमी कहे "मुझे तुम से अल्लाह के लिए
मुहब्बत है" उसके लिए दुआ.............................१६१

जो आदमी तुम्हारे लिए अपना माल पेश करे
उसके लिए दुआ १६१
क़र्ज (श्रृण) अदा करते समय क़र्ज देने वाले
के लिए दुआ १६२
शिर्क से बचने की दुआ..१६२
जो आदमी कहे : "अल्लाह तुझे बरकत दे" तो उसके
लिए क्या दुआ की जाये १६३
बदफ़ाली को मकरूह समझने की दुआ १६३
सवारी पर सवार होने की दुआ..........................१६४
सफ़र (यात्रा) की दुआ..१६५
किसी गाँव या शहर में दाख़िल होने की दुआ १६७
बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ..........................१६८
सवारी के फ़िसलने या गिरने के समय की दुआ...........१६९
मुसाफ़िर की दुआ मोक़ीम के लिए १६९
मोक़ीम आदमी की दुआ मुसाफ़िर के लिए................ १७०
सफ़र के बीच (दौरान) तस्बीह और तकबीर १७१
मुसाफ़िर की दुआ जब सुबह करे १७१
सफ़र के दौरान जब मुसाफ़िर किसी मंजिल
(मोक़ाम) पर उतरे उस समय की दुआ १७२
सफ़र से वापसी की दुआ..१७२
खुश करने वाली या ना पसंदीदा चीज़ पेश
आने पर क्या कहे? १७३

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलात (दरूद) भेजने की फ़ज़ीलत.................................. १७४
सलाम का फैलाना १७६
जब काफ़िर सलाम कहे तो उसे किस प्रकार जवाब दिया जाये १७८
मुर्ग़ बोलने और गदहा हींगने के समय की दुआ.......... १७९
रात में कुत्तों का भूँकना (तथा गदहों का हींगना) सुन कर यह दुआ पढ़े.. १८०
उस आदमी के लिए दुआ जिसे तुम ने बुरा भला कहा हो या गाली दी हो.. १८१
कोई मुस्लिम जब किसी मुस्लिम की प्रशंसा करे १८१
जब किसी मुसलमान आदमी की प्रशंसा की जाये तो वह क्या कहे ?.. १८२
हज या उमरा का इहराम बाँधने वाला कैसे तलबिया कहे १८३
हज्रे अस्वद वाले कोने पर अल्लाहु अकबर कहना चाहिए.. १८३
रुक्ने यमानी और हज्रे अस्वद के बीच (दरमियान) की दुआ..१८४
सफ़ा और मरवा पर ठहरने की दुआ....................... १८५
अरफ़ा के दिन (९ ज़िलहिज्जा) की दुआ.................... १८६
मशअरे हराम के पास की दुआ १८७
जमरात की रमी के समय हर कंकरी के साथ तकबीर .. १८७

तअज्जुब या ख़ुशी के वक्त की दुआ १८८
ख़ुशख़बरी मिलने पर क्या करे? १८८
जो आदमी अपने बदन में दर्द (तकलीफ़)
महसूस करे वह कौन सी दुआ पढ़े? १८९
जिसको अपनी ही नज़र लगने का भय
हो तो क्या कहे ? १८९
घबराहट के समय क्या कहा जाये? १९०
जानवर ज़िब्ह करते या क़ुर्बानी करते
समय की दुआ १९०
सरकश शैतानों की ख़ुफ़िया तदबीरों के
तोड़ के लिए दुआ १९१
अल्लाह से क्षमा (बख़्शिश) माँगना तथा तौबा व इस्तिग़फ़ार
एवं क्षमा याचना करना १९२
तस्बीह (سُبْحَانَ الله), तहमीद (الحمد لله), तहलील
(لا إله إلا الله) और तक्बीर (الله أكبر) की फ़ज़ीलत........ १९५
नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
तस्बीह कैसे पढ़ते थे २०५
मुख़तलिफ़ (अनेक प्रकार की) नेकियाँ
और जामिअ आदाब २०५

ज़िक्र की फ़ज़ीलत

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं

﴿فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلاَ تَكْفُرُونِ﴾

(البقرة:١٥٢)

इसलिए तुम मेरा स्मरण (ज़िक्र) करो मैं भी तुम्हें याद करूँगा तथा कृतज्ञ रहो एवं कृतघ्नता से बचो | (सूर: बक़रा-१५२)

﴿يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا﴾

(الأحزاب:٤١)

हे ईमान वालो! अल्लाह तआला का अत्याधिक स्मरण करो | (सूर: अल-अहज़ाब-४१)

﴿وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا﴾ (الأحزاب:٣٥)

तथा अत्याधिक अल्लाह का स्मरण करने वाले पुरूष तथा स्मरण करने वाली औरतें, अल्लाह ने उन के लिए (विस्तृत) मोक्ष एवं बहुत बड़ा

प्रतिफल तैयार कर रखा है। (सूर: अल-अहज़ाब: ३५)

﴿وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالآصَالِ وَلاَ تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ﴾ (الأعراف:٢٠٥)

और अपने रब का अपने मन में विनीत एवं भयभीत होकर स्मरण करता रह प्रात: एवं संध्या काल में उच्च स्वर से आवाज़ को कम करके तथा अचेतों की गणना में न होना। (सूर: अल-आराफ़-२०५)

وَقَالَ ﷺ: ((مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لاَ يَذْكُرُ رَبَّهُ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ)) (البخارى مع الفتح ١١/٢٠٨)

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: (उस आदमी की मिसाल जो अपने रब का स्मरण करता है और जो अपने रब का स्मरण नहीं करता जीवित और मृत की तरह है। (अल-बुख़ारी)

मुस्लिम की रिवायत में है :

((مَثَلُ الْبَيْتِ الَّذِيْ يُذْكَرُ الله فِيْهِ وَالْبَيْتِ الَّذِيْ لاَ يُذْكَرُ الله فِيْهِ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ)) (المسلم ١/٥٣٩)

उस घर की मिसाल जिसमें अल्लाह का स्मरण किया जाये और उस घर की मिसाल जिसमें अल्लाह का स्मरण न किया जाये ज़िन्दा और मुर्दा की तरह है। (मुस्लिम १/५३९)

وَقَالَ ﷺ: ((أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ، وَأَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيْكِكُمْ، وَأَرْفَعِهَا فِيْ دَرَجَاتِكُمْ وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالْوَرِقِ، وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ أَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوا أَعْنَاقَهُمْ وَيَضْرِبُوْا أَعْنَاقَكُمْ؟)) قَالُوْا بَلَى. قَالَ: "ذِكْرُ الله تَعَالَى"

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: (क्या मैं तुम्हें वह कार्य न बताऊँ जो तुम्हारे सब कामों से बेहतर तुम्हारे स्वामी के निकट सब से पवित्र, तुम्हारे पदों में सब से बुलन्द और

तुम्हारे सोना-चाँदी ख़र्च करने से बेहतर है और तुम्हारे लिए इस से भी बेहतर है कि तुम अपने दुश्मनों से मिलो तुम उनकी गर्दनें काटो और वे तुम्हारी गर्दनें काटें। सहाबा ने कहा क्यों नहीं ज़रूर बतलाईये। आप ने फ़रमाया अल्लाह तआला का स्मरण करना। (अत-त्रिमिज़ी ५/४५९, इब्ने माजा २/१२४५ और देखिये सहीह इब्ने माजा २/३१६ और सहीह अत-त्रिमिज़ी ३/१३९)

وَقَالَ ﷺ: ((أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي، فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي، وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلأٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلأٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ شِبْراً تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعاً وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعاً تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعاً، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं (मैं अपने बन्दे के गुमान के अनुसार हूँ जो वह मेरे विषय में रखता है। और जब वह मुझे स्मरण करता है तो मैं उस के साथ होता हूँ। यदि वह मुझे अपने हृदय में स्मरण

करता है तो मैं उसे अपने हृदय में स्मरण करता हूँ और अगर वह किसी सभा (जमाअत) में मुझे स्मरण करता है तो मैं उसे ऐसी सभा (जमाअत) में स्मरण करता हूँ जो उस से बेहतर है और अगर वह एक बालिश्त मेरे क़रीब आये तो मैं एक हाथ उस के क़रीब आता हूँ और अगर वह एक हाथ क़रीब आये तो मैं दोनों हाथ फैलाने के बराबर उस के क़रीब आता हूँ और अगर वह चल कर मेरे पास आये तो मैं दौड़ कर उस के पास आता हूँ। (अल-बुख़ारी ८/१७१, मुस्लिम ४/२०६१ और शब्द बुख़ारी के हैं)

((وَعَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً قَالَ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ شَرَائِعَ الإِسْلاَمِ قَدْ كَثُرَتْ عَلَيَّ فَأَخْبِرْنِي بِشَيْءٍ أَتَشَبَّثُ بِهِ قَالَ: ((لاَ يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْباً مِنْ ذِكْرِ اللهِ)) وَقَالَ ﷺ:

और अब्दुल्लाह बिन बुस्र फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मुझ पर इस्लाम के अहकाम बहुत अधिक हो गये हैं, इसलिए आप मुझे कोई एक वस्तु बतायें जिसे मैं दृढ़ता के साथ पकड़

लूँ । आप ने फ़रमाया कि तेरी ज़ुबान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र (स्मरण) से तर रहे । (अत-त्रिमिज़ी ५/४५८, इब्ने माजा २/१२४६ और देखिए सहीह अत-त्रिमिज़ी ३/१३९ तथा सहीह इब्ने माजा २/३१७)

وَقَالَ ﷺ: ((مَنْ قَرَأَ حَرْفاً مِنْ كِتَابِ اللهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ، وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا، لاَ أَقُولُ: ﴿الم﴾ حَرْفٌ، وَلَكِنْ: أَلِفٌ حَرْفٌ، وَلاَمٌ حَرْفٌ، وَمِيْمٌ حَرْفٌ))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति अल्लाह की किताब में से एक हर्फ़ (शब्द) पढ़े उस के लिए इस के बदले में दस नेकियाँ मिलती हैं । मैं यह नहीं कहता कि अलिफ़ लाम मीम एक हर्फ़ (शब्द) है बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़ है, लाम एक हर्फ़ है और मीम एक हर्फ़ है । (अत-त्रिमिज़ी ५/१७५ सहीह अल त्रिमिज़ी ३/९ और देखिये सहीहुल जामिइस्सग़ीर ५/३४०)

وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَنَحْنُ فِي الصُّفَّةِ فَقَالَ: ((أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنْ يَغْدُوَ كُلَّ

يَوْمٍ إِلَى بُطْحَانَ أَوْ إِلَى الْعَقِيْقِ فَيَأْتِيْ مِنْهُ بِنَاقَتَيْنِ كَوْمَاوَيْنِ فِيْ غَيْرِ إِثْمٍ وَلَا قَطِيْعَةِ رَحِمٍ؟)) فَقُلْنَا : يَا رَسُولَ اللهِ نُحِبُّ ذَلِكَ. قَالَ: ((أَفَلَا يَغْدُو أَحَدُكُمْ إِلَى الْمَسْجِدِ فَيُعَلِّمُ، أَوْ يَقْرَأُ أَيَتَيْنِ مِنْ كِتَابِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ خَيْرٌ لَهُ مِنْ نَاقَتَيْنِ، وَثَلَاثٌ خَيْرٌ لَهُ مِنْ ثَلَاثٍ، وَأَرْبَعٌ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَرْبَعٍ، وَمِنْ أَعْدَادِهِنَّ مِنَ الإِبِلِ))

उकबा बिन आमिर ﷺ फ़रमाते हैं कि हम सुफ्फा में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से निकले और फ़रमाया: (तुम में से कौन है जिसे यह पसन्द हो कि हर दिन बुतहान अथवा अक़ीक़ घाटी की ओर जाये और वहाँ से बड़ी-बड़ी कोहानों वाली दो ऊँटनियाँ लेकर आये और उसे उस में न कोई गुनाह हो और न रिश्तों नातों को तोड़ना।) हम ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल हम सभी लोग यह पसन्द करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तो तुम में से कोई मस्जिद में क्यों नहीं जाता ताकि अल्लाह की किताब की दो आयतें सीखे

या सिखाये या पढ़े। यह उस के लिए दो ऊँटनियों से बेहतर हैं। तीन आयतें हों तो तीन ऊँटनियों से बेहतर हैं। और चार आयतें चार ऊँटनियों से। इसी प्रकार जितनी आयतें हों उतने ऊँटों से बेहतर हैं। (मुस्लिम १/५५३)

وَقَالَ ﷺ: ((مِنْ قعدَ مَقْعَداً لَمْ يَذْكُرِ اللهَ فِيْهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللهِ تِرَةٌ، وَمَنِ اضْطَجَعَ مَضْجَعَاً لَمْ يَذْكُرِ اللهَ فِيْهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللهِ تِرَةٌ))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति किसी ऐसी जगह बैठा जिस में उस ने अल्लाह का स्मरण न किया तो वह अल्लाह की तरफ से उस पर हानि का कारण होगी और जो व्यक्ति किसी जगह लेटा जिस में उस ने अल्लाह का स्मरण न किया तो वह उस पर अल्लाह की ओर से हानिकारक सिद्ध होगी। (अबू दाऊद ४/२६४ और देखिये सहीहुल जामिअ् ५/३४२)

وَقَالَ ﷺ: ((مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا لَمْ يَذْكُرُوْا اللهَ فِيْهِ،

وَلَمْ يُصَلُّوا عَلَى نَبِيِّهِمْ إِلاَّ كَانَ عَلَيْهِمْ تِرَةٌ فَإِنْ شَاءَ عَذَّبَهُمْ وَإِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُمْ))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

जब कोई क़ौम किसी मजलिस में बैठे और उस जगह उन्होंने अल्लाह का स्मरण न किया और अपने नबी पर दरूद व सलात न पढ़ी हो तो ऐसी मजलिस उन के लिए हानिकारक सिद्ध होगी, फिर अगर अल्लाह चाहे तो ऐसी क़ौम को अज़ाब दे या उन्हें क्षमा कर दे। (अत-त्रिमिज़ी और देखिये सहीह अत-त्रिमिज़ी ३/१४०)

وَقَالَ ﷺ: ((مَا مِنْ قَوْمٍ يَقُوْمُوْنَ مِنْ مَجْلِسٍ لاَ يَذْكُرُوْنَ اللهَ فِيْهِ إِلاَّ قَامُوا عَنْ مِثْلِ جِيْفَةِ حِمَارٍ وَكَانَ لَهُمْ حَسْرَةً))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

जब कोई क़ौम ऐसी मजलिस से उठती है जिसमें उन्होंने अल्लाह का स्मरण न किया हो तो वह मुर्दार तथा बद्बूदार गदहे की तरह होकर उठती है और वह मजलिस उन के लिए निराशाजनक साबित होगी।

(अबू दाऊद ४/२६४, मुस्नद अहमद २/३८९ और देखिये सहीहुल जामिअ् ५/१७६)

१- नींद से जागने के बाद की दुआयें

١-((الْحَمْدُ لله الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ))

१. सब प्रशंसाये उस अल्लाह के लिये हैं जिसने हमें मारने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की ओर उठ कर जाना है| (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ ११/११३, मुस्लिम ४/२०८३)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

(जो आदमी रात को किसी भी समय जागे और जागने के बाद यह दुआ पढ़े तो उसे क्षमा कर दिया जाता है, फिर यदि कोई दुआ करे तो उस की दुआ क़ुबूल होती है, फिर यदि उठ खड़ा हो वुज़ू करे और नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ क़ुबूल होती है |)

٢- ((لاَ إِلَهَ الاَّ اللهُ وَحْدَه لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيءٍ قَدِيرٌ، سُبْحَانَ اللهُ وَالْحَمْدُ لله

وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوةَ إِلاَّ بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمْ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ))

२. कोई पूजनीय नहीं परन्तु केवल अकेला अल्लाह, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य है और उसी के लिए प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह पाक है और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है और बुलन्दी तथा अज़मत वाले अल्लाह की मदद के बिना न किसी चीज़ (बुराई) से बचने की और न कुछ (नेकी) करने की शक्ति है। ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे। (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ ३/३९, शब्द इब्ने माजा के हैं, सहीह इब्ने माजा २/३३५)

٣- ((الْحَمْدُ للهِ الَّذِي عَافَانِيْ فِيْ جَسَدِيْ وَرَدَّ عَلَيَّ رُوْحِيْ وَأَذِنَ لِيْ بِذِكْرِهِ))

३. सब प्रशंसायें अल्लाह के लिये हैं जिस ने मेरे बदन को हर प्रकार की बीमारियों से स्वच्छ रखा

और मेरे प्राण को मेरे बदन में लौटा दिया और मुझे अपने ज़िक्र (वर्णन) की क्षमता प्रदान की। (अत-त्रिमिज़ी ५/४७३ और सहीह अत-त्रिमिज़ी ३/१४४)

٤- ﴿ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَاخْتِلاَفِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لآيَاتٍ لأُولِي الأَلْبَابِ ٥ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَى جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلاً سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ٥ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ٥ رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الأَبْرَارِ ٥ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَى رُسُلِكَ وَلاَ تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لاَ تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ٥ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لاَ أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِنْكُمْ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلأُدْخِلَنَّهُمْ

جَنَّات تَجْرِي مِـنْ تَحْتِـهَا الأَنْـهَارُ ثَوَابًا مِنْ عِنْـدِ اللَّـهِ وَاللَّـهُ
عِنْدَهُ حُسْـنُ الثَّوَابِ o لاَ يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّـبُ الَّذِيـنَ كَفَـرُوا فِي
الْبِلادِ o مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُـمَّ مَأْوَاهُمْ جَـهَنَّمُ وَبِئْـسَ الْمِـهَادُ o لَكِـنْ
الَّذِيـنَ اتَّقَـوْا رَبَّـهُمْ لَـهُمْ جَنَّاتٌ تَجْـرِي مِـنْ تَحْتِـهَا الأَنْـهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلاً مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَـا عِنْـدَ اللَّـهِ خَيْرٌ لِلأَبْـرَارِ o
وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّـهِ وَمَـا أُنْـزِلَ إِلَيْكُـمْ وَمَـا
أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَـاشِعِينَ لِلَّـهِ لاَ يَشْـتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًـا قَلِيـلاً
أُولَئِكَ لَـهُمْ أَجْرُهُـمْ عِنْـدَ رَبِّـهِمْ إِنَّ اللَّـهَ سَرِيعُ الْحِسَـابِ o
يَاأَيُّـهَا الَّذِيـنَ آمَنُـوا اصْـبِرُوا وَصَـابِرُوا وَرَابِطُـوا وَاتَّقُـوا اللَّـهَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾ (آل عمران: ١٩٠-٢٠٠)

नि:संदेह आकाशों और धरती के बनाने में, रात और दिन के हेर-फेर में, बुद्धिमानों के लिये निशानियाँ हैं। जो खड़े; बैठे और लेटे हर हालत में अल्लाह को याद करते हैं। और आकाशों तथा धरती की सृष्टि पर विचार करते हैं। और कहते हैं ऐ हमारे पालनकर्ता तूने इन्हें अकारण नहीं पैदा किया है। तू पवित्र है

अत: हमें नरक के अज़ाब से बचा ले। ऐ हमारे पालनकर्ता जिसको तूने नरक में डाला तो अवश्य उसको आप ने अपमानित किया और ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं। ऐ हमारे रब हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की ओर पुकार रहा था कि लोगो अपने रब पर ईमान लाओ। तो हम ईमान ले आये। ऐ हमारे रब अब तू हमारे पापों को क्षमा कर दे और हमारी बुराईयाँ हम से मिटा दे। और मरने के बाद हमें नेक बन्दों के साथ कर दे। ऐ हमारे रब तूने जिन-जिन चीज़ों के विषय में हम से अपने पैग़म्बरों के मुख से वायदे किये हैं वह हमें प्रदान कर, और क़ियामत के दिन हमें अपमानित न करना, इस में कुछ संदेह नहीं कि तू वायदा के विपरीत नहीं करता। अत: उन के पालनहार ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की कि तुम में किसी कार्यकर्ता के कर्मों को चाहे वह पुरूष हो अथवा स्त्री मैं कदापि विफल नहीं करता। तुम आपस में एक दूसरे से हो, इसलिए वह लोग जिन्होंने हिजरत किया और अपने घरों से निकाल दिये गये और जिन्हें मेरे मार्ग में कष्ट दिया

गया और जिन्होंने की धर्मयुद्ध किया और शहीद किये गये अवश्य मैं उनको बुराईयाँ उन से दूर कर दूँगा और अवश्य उनको उस स्वर्ग में ले जाऊँगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। यह हैं पुण्य अल्लाह की ओर से अल्लाह ही के पास श्रेष्ठ प्रत्युपकार है। नगरों में काफ़िरों की यातायात तुझे धोखे में न डाल दे। यह तो बहुत ही थोड़ा लाभ है उसके पश्चात उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरा स्थान है। परन्तु जो लोग अपने प्रभु से डरते रहे उनके लिए जन्नत है जिनके नीचे नहरें बह रही हैं उनमें वे सदैव रहेंगे। यह अल्लाह की ओर से अतिथि हैं और पुण्य कर्म करने वालों के लिए अल्लाह के पास जो कुछ भी है वह सर्वश्रेष्ठ एवं उत्तम है और अवश्य अहले किताब में से भी कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह पर ईमान लाते हैं और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है और जो उनकी ओर उतारा गया उस पर भी अल्लाह से डर करते हैं और अल्लाह की आयतों को छोटे-छोटे मूल्यों पर नहीं बेचते उनका बदला उनके रब के पास है। नि:संदेह अल्लाह शीघ्र ही हिसाब लेने वाला

है । ऐ ईमान वालो तुम धैर्य रखो और एक-दूसरे को थामे रखो और धर्मयुद्ध के लिए तैयार रहो ताकि तुम लक्ष्य को पहुँचो। (सूरः आले इमरान : १९०-२००)

२- कपड़ा पहनते समय की दुआ

٥- ((الْحَمْدُ لله الَّذِي كَسَانِيْ هَذَا (الثَّوبَ) وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّى وَلاَ قُوَّةٍ))

५. सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे यह (कपड़ा) पहनाया और मेरी किसी ताक़त एवं शक्ति के बग़ैर मुझे प्रदान किया । (अबू दाऊद, अत-त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और देखिये इर्वाउल् ग़लील ७/४७)

३- नया कपड़ा पहनने की दुआ

٦- ((اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ كَسَوْتَنِيهِ أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِهِ وَخَيْرِ مَا صُنِعَ لَهُ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ))

६. ऐ अल्लाह तेरे ही लिये सब प्रशंसायें हैं, तूने मुझे यह पहनाया, मैं तुझ से इस की भलाई और जिस चीज़ के लिए इसे बनाया गया है उसकी भलाई चाहता हूँ। और इसकी बुराई से और जिस चीज़ के लिए बनाया गया है उसकी बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। (अबू दाऊद, अत-त्रिमिज़ी, बग़वी और देखिये शैख़ अलबानी (رحمه الله) की किताब मुख़्तसर शमाइलित त्रिमिज़ी पृष्ठ ४७)

४- नया कपड़ा पहनने वाले को क्या दुआ दी जाये

٧- ((تُبْلِي وَيُخلِفُ اللهُ تَعَالَى))

७. तू इसे पुराना करे और अल्लाह तआला इस के बाद और अधिक वस्त्र प्रदान करे। (अबू दाऊद ४/४१, और देखिये सहीह अबू दाऊद २/७६०)

٨- ((إِلْبَسْ جَدِيْداً وَعِشْ حَمِيْداً وَمُتْ شَهِيْداً))

८. नया कपड़ा पहन। और खुशगवार जीवन गुज़ार और शहीद हो के मर। (इब्ने माजा २/११७८, बग़वी १२/४१ और देखिये सहीह इब्ने माजा २/२७५)

५. कपड़ा उतारे तो क्या पढ़े ?

٩- ((بِسْمِ اللهِ))

९. अल्लाह के नाम के साथ। (त्रिमिज़ी २/५०५ सहीहुल जामिअ् ३/२०३ और देखिये इर्वाउल-ग़लील हदीस ४९)

६- शौचालय में दाख़िल होने की दुआ

١٠- (([بِسْمِ اللهِ] اَللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ))

१०. [अल्लाह के नाम से] ऐ अल्लाह मैं ख़बीसों और ख़बीसनियों से तेरी पनाह चाहता हूँ। (बुख़ारी १/४५, मुस्लिम १/२८३ शुरू में बिस्मिल्लाह की वृद्धि सुनन सईद बिन मंसूर में है, देखिये फ़तहुलबारी १/२४४)

७- शौचालय से निकलने की दुआ

١١- ((غُفْرَانَكَ))

(ऐ अल्लाह मैं) तेरी क्षमा चाहता हूँ। (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा और देखिये ज़ादुल मआद २/३८७)

८- वुज़ू शुरू करते समय की दुआ

١٢ - ((بِسْمِ اللهِ))

१२. अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ)। (अबू दाऊद, इब्ने माजा, मुस्नद अहमद और देखिये इर्वाउल ग़लील १/१२२)

९- वुज़ू से फ़ारिग़ होने के बाद की दुआ

١٣ - ((أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ))

१३. मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बन्दे और रसूल हैं। (मुस्लिम १/२०९)

١٤ - ((اللّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ))

१४. ऐ अल्लाह मुझे बहुत अधिक तौबा करने वालों में से बना दे, और बहुत अधिक पाक साफ़ रहने वालों में से बना दे। (त्रिमिज़ी १/७८ और देखिये सहीह त्रिमिज़ी १/१८)

١٥ - ((سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَن لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ))

१५. ऐ अल्लाह तू हर ऐब से पाक है। केवल तेरे लिए प्रशंसा है, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। मैं तुझ से क्षमा चाहता हूँ और तुझ ही से क्षमायाचना करता हूँ। (इमाम नसाई की किताब अमलुल यौमि वल्लैलह पृष्ठ १७३ और देखिये इर्वाउल् ग़लील १/१३५ तथा २/९४)

१०- घर से निकलते समय की दुआ

١٦ - ((بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ))

१६. अल्लाह के नाम से। मैंने अल्लाह पर भरोसा किया और अल्लाह की मदद के बिना न किसी चीज़ (गुनाह) से बचने की ताकत है न कुछ (नेकी) करने की। (अबू दाऊद ४/३२५, त्रिमिज़ी ५/४९० और देखिये सहीह अत-त्रिमिज़ी ३/१५१)

١٧ - ((اللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوْذُ بِكَ أَنْ أَضِلَّ أَوْ أُضَلَّ أَوْ أَزِلَّ أَوْ أُزَلَّ أَوْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلَمَ أَوْ أجهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ))

१७. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह मांगता हूं (इस बात से) कि मैं गुमराह हो जाउं या मुझे गुमराह किया जाये, या फिसल जाउं या मुझे फिसलाया जाये, या मैं किसी पर ज़ुल्म करूं या कोई मुझ पर ज़ुल्म करे, या मैं किसी पर जिहालत व नादानी करूं या कोई मुझ पर जिहालत व नादानी करे। (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, निसाई, इब्ने माजा, देखिये सहीह त्रिमिज़ी ३/१५२ और सहीह इब्ने माजा २/३३६)

११- घर में दाख़िल होते समय की दुआ

١٨ - ((بِسْمِ اللهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللهِ خَرَجْنَا وَعَلَى رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا))

१८. अल्लाह के नाम से हम दाख़िल हुए, अल्लाह के नाम के साथ निकले और अपने रब ही पर हम ने भरोसा किया, फिर वह अपने घर वालों को सलाम करे। (अबू दाऊद ४/३२५ और इसकी सनद को शैख़ इब्ने बाज़ (رحمه الله) ने तोहफ़तुल अख़्यार में हसन कहा है, देखिये पृष्ठ २८, और सहीह मुस्लिम में है कि जब आदमी अपने घर में दाख़िल होते समय और खाना खाते समय अल्लाह का (ज़िक्र) स्मरण करता है तो शैतान कहता है तुम्हारे लिए रात गुज़ारने की जगह है न खाना। मुस्लिम २०१८)

१२- मस्जिद की ओर जाने की दुआ

١٢- (اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْراً، وَفِيْ لِسَانِيْ نُوْراً، وَفِيْ سَمْعِيْ نُوْراً، وَفِيْ بَصَرِيْ نُوْراً، وَمِنْ فَوْقِيْ نُوْراً، وَمِنْ تَحْتِيْ نُوْراً، وَعَنْ يَمِيْنِيْ نُوْراً، وَعَنْ شِمَالِيْ نُوْراً، وَمِنْ أَمَامِيْ نُوْراً، وَمِنْ خَلْفِيْ نُوْراً، وَاجْعَلْ فِيْ نَفْسِيْ نُوْراً، وَأَعْظِمْ لِيْ نُوْراً، وَعَظِّمْ لِيْ نُوْراً، وَاجْعَلْ لِيْ نُوْراً، وَاجْعَلْنِيْ نُوْراً، اَللّٰهُمَّ أَعْطِنِيْ نُوْراً، وَاجْعَلْ فِيْ عَصَبِيْ

نُوْراً، وَفِيْ لَحْمِيْ نُوْراً، وَفِيْ دَمِيْ نُـوْراً وَفِـيْ شَعْـرِيْ نُـوْراً، وَفِيْ بَشَرِيْ نُوْراً، [اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِيْ نُوْراً فِيْ قَبْرِيْ وَنُوْراً فِـيْ عِظَامِيْ] [وَزِدْنِيْ نُوْراً، وَزِدْنِـيْ نُـوْراً، وَزِدْنِـيْ نُـوْراً] [وَهَـبْ لِيْ نُوْراً عَلَى نُوْرٍ]»

१९. ऐ अल्लाह मेरे हृदय में नूर बना दे और मेरी ज़ुबान में भी, और मेरे कानों में भी नूर और मेरी आंखों में भी नूर, मेरे ऊपर भी नूर और मेरे नीचे भी नूर, और मेरे दायें भी नूर तथा बायें भी नूर, और मेरे आगे भी नूर तथा पीछे भी नूर, और मेरे प्राण में भी नूर भर दे। और मेरे लिए नूर को विशाल तथा बहुत अधिक बड़ा बना दे, और मेरे लिए नूर भर दे, और मुझे नूर बना दे। ऐ अल्लाह मुझे नूर प्रदान कर और मेरी मांस पेशियों (पट्ठों) में नूर भर दे, और मेरे मांस में नूर भर दे, और मेरे ख़ून में नूर पैदा कर दे, और मेरे बालों में भी नूर बना दे और मेरे चमड़े में भी नूर भर दे। [बुख़ारी हदीस नं० ६३१६, ११/११६ मुस्लिम १/५२६, ५२९, ५३० (७६३)] ऐ अल्लाह मेरी क़ब्र में मेरे लिए नूर बना दे और मेरी हड्डियों

में भी नूर बना दे। (अत-त्रिमिज़ी ३४१९, ५/४८३ और मेरा नूर अधिक कर और मेरा नूर अधिक कर और मेरा नूर अधिक कर। (इमाम बुख़ारी ने अदबुल मफ़रद में रिवायत किया है। ६९५ पृष्ठ २५८ तथा अलबानी की सहीहुल अदबिल मफरद ५३६) और मुझे बहुत अधिक नूर प्रदान कर। (देखिए फ़तहुलबारी ११/११८)

१३- मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ

٢٠ - ((أَعُوذُ بِاللهِ العَظِيْمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ)) (١) [بِسْمِ اللهِ، وَالصَّلاَةُ] (٢) [وَالسَّلاَمُ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ] (٣) ((اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ)) (٤)

२०. मैं अज़मत वाले अल्लाह की और उस के करीम चेहरे की और उस के हमेशा से रहने वाले राज्य की पनाह चाहता हूँ मर्दूद शैतान से। अल्लाह के नाम से (दाख़िल होता हूँ) और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम पर दरूद व सलाम हो। ऐ अल्लाह मेरे लिए अपने रहमत के दरवाज़े खोल दे। (१. अबू दाऊद देखिए सहीहुल जामिअ् हदीस ४५९१, २. इबनुस्सुन्नी हदीस ८८, शैख़ अलबानी (رحمه الله) ने इसे हसन कहा है। ३. अबू दाऊद १/१२६ देखिए सहीहुल जामिअ् १/५२८, ४. मुस्लिम १/४९४)

इब्ने माजा में फ़ातिमा (رضي الله عنها) से रिवायत है :

((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ))

ऐ अल्लाह तू मेरे गुनाहों को बख़्श दे, ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे। (शैख़ अलबानी ने इसे इस के शवाहिद की बिना पर सहीह कहा है, देखिये सहीह इब्ने माजा १/ १२८,१२९)

१४- मस्जिद से निकलने की दुआ

٢١ - ((بِسْمِ اللهِ، وَالصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ اللَّهُمَّ اعْصِمْنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ))

२१. अल्लाह के नाम के साथ और दरूद व सलाम नाज़िल (अवतरित) हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर। ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह मुझे मर्दूद शैतान से बचा। (हदीस नं॰ २० की रिवायात की तख़रीज़ देखिए और शब्द (اللّٰهُمَّ اعْصِمْنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْم) की वृद्धि (ज़्यादती) इब्ने माजा ने की है, देखिये सहीह इब्ने माजा १/१२९)

१५- अज़ान की दुआयें

२२. मोअज़्ज़िन के जवाब में वही कलिमा कहे जो मोअज़्ज़िन कह रहा हो परन्तु हय्या अलस्सलात तथा हय्या अलल् फ़लाह (आओ नमाज़ के लिए आओ कामयाबी की ओर) के जवाब में कहे :

((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ))

कोई नहीं शक्ति और न कोई क्षमता मगर अल्लाह की सहायता से। (बुख़ारी १/१५२, मुस्लिम १/२८८)

२३. मोअज़्ज़िन के (अश्हदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह और अश्हदुअन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह) पढ़ने के बाद

यह दुआ पढ़े :

((وأَنَـا أَشْـهَدُ أَن لاَ إلـهَ إلاَّ اللهُ وَحْـدَه لا شَرِيْـكَ لَـهُ و أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُه وَرَسُـوْلُهُ رَضِيْـتُ بِـاللهِ رَبًّا، وَبِمُحَمَّـدٍ رَسُـوْلاً وَبِالإِسْلاَمِ دِيْنًا))

२३. और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं और नि:संदेह मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस के बन्दे तथा रसूल हैं, मैं अल्लाह को अपना रब मान कर और मुहम्मद ﷺ को अपना रसूल मान कर और इस्लाम को अपना दीन मान कर प्रसन्न हूँ। (इब्ने ख़ुज़ैमा १/२२०, मुस्लिम १/२९०)

२४. मोअज़्ज़िन के जवाब से फ़ारिग़ होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलात (दरूदे मस्नून) पढ़े। (मुस्लिम १/२८८)

٢٥- ((اللّٰهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْـوَةِ التَّامَّـةِ وَالصَّلاَةِ الْقَائِمَـةِ آتِ مُحَمَّـدًا الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَـةَ وَابْعَثْـهُ مَقَامـاً مَحْمُـوْداً الَّـذِيْ وَعَدْتَّهُ)) [إِنَّكَ لاَ تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ]

२५. ऐ अल्लाह! ऐ इस मुकम्मल दावत और क़ायम सलात के रब ! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वसीला और फ़ज़ीलत प्रदान कर और उस मुक़ामे महमूद पर खड़ा कर जिसका तूने उन से वायदा किया है । निःसंदेह तू वायदा ख़ेलाफ़ी नहीं करता । (बुख़ारी १/१५२, दोनों कोस्ट के बीच के शब्द बैहक़ी के हैं, १/४१०, इसकी सनद बेहतर है, देखिये शैख़ बिन बाज़ (ﷺ) की किताब तुह्फ़तुल अख़्यार पृष्ठ ३८)

२६. अज़ान और इक़ामत (तकबीर) के बीच अपने लिए दुआ करे क्योंकि उस समय दुआ रद्द नहीं की जाती । (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद, अहमद, देखिये इर्वाउल् ग़लील १/२६२)

१६- नमाज़ शुरू करने की दुआयें

अल्लाहु अकबर कह कर नमाज़ शुरू करे और इन दुआओं में से कोई दुआ पढ़े :

٢٧ - ((اللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ ، اللّٰهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُنَقَّى

الثَّوْبُ الأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ ، اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي مِن خَطَايَايَ بِالْمَاءِ والثَّلْجِ وَالْبَرَدِ))

२७. ऐ अल्लाह मेरे और मेरे पापों के बीच पूरब तथा पश्चिम जितनी दूरी कर दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरे पापों से इस तरह पाक व साफ़ कर दे जिस तरह सफेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह मुझे मेरे पापों से बर्फ़, जल और ओलों के साथ धो दे। (बुख़ारी १/१८१, मुस्लिम १/४१९)

٢٨- ((سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلا إِلَهَ غَيْرُكَ))

२८. ऐ अल्लाह तू पाक और पवित्र है, हर प्रकार की प्रशंसा केवल तेरे ही लिये है। बाबरकत है तेरा नाम और बुलन्द है तेरी शान और तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, नसाई, इब्ने माजा और देखिये सहीह त्रिमिज़ी १/७७ और सहीह इब्ने माजा १/१३५)

٢٩- ((وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ

حَنِيْفاً وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ إِنَّ صَلاَتِيْ، وَنُسُكِيْ،
وَمَحْيَايَ، وَمَمَاتِيْ لله رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، لاَ شَرِيْكَ لَهُ وَبِذَلِكَ
أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ. اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ
أَنْتَ. أَنْتَ رَبِّيْ وَأَنَا عَبْدُكَ، ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاعْتَرَفْتَ بِذَنْبِيْ
فَاغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ جَمِيْعاً إِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلاَّ أَنْتَ.
وَاهْدِنِيْ لأَحْسَنِ الأَخْلاَقِ لاَ يَهْدِيْ لأَحْسَنِهَا إِلاَّ أَنْتَ،
وَاصْرِفْ عَنِّيْ سَيِّئَهَا، لاَ يَصْرِفُ عَنِّيْ سَيِّئَهَا إِلاَّ أَنْتَ لَبَّيْكَ
وَسَعْدَيْكَ، وَالْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدَيْكَ وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ أَنَا بِكَ
وَإِلَيْكَ تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ))

२९. मैंने अपना चेहरा उस ज़ात की ओर फेर लिया, जिस ने आकाशों और धरती की रचना की, एक्सू (एकाग्रचित) होकर और मैं मुशरिकों में से नहीं हूँ। मेरी नमाज़ मेरी कुर्बानी, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। उसका कोई साझी नहीं और मुझे इसी अक़ीदे पर विश्वास रखने का आदेश दिया गया है और मैं मुसलमानों में से हूँ। ऐ अल्लाह तू ही बादशाह है तेरे सिवा कोई

सच्चा माबूद नहीं, तू ही मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूँ । मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया है और अपने पापों को स्वीकार (इक़रार) करता हूँ। इसलिए मेरे सारे गुनाहों को बख़्श दे, क्योंकि तेरे सिवा कोई अन्य गुनाहों को नहीं बख़्श सकता। और मुझे सब से अच्छे अख़लाक़ (स्वभाव) की ओर हिदायत दे और सब से अच्छे अख़लाक़ की ओर हिदायत तेरे सिवा कोई नहीं दे सकता, और मुझ से सब बुरे अख़लाक़ दूर कर दे, तेरे सिवा कोई भी मुझ से बुरे अख़लाक़ दूर नहीं कर सकता। ऐ अल्लाह मैं उपासना के लिए हाज़िर हूँ, तेरी प्रशंसा के लिए हाज़िर हूँ और हर प्रकार की भलाई तेरे हाथों में है और बुराई की निस्बत तेरी ओर नहीं की जा सकती। मैं तेरी तौफ़ीक़ से हूँ और तेरी ओर हूँ, तू बरकत वाला और बुलन्द है, मैं तुझ से क्षमा माँगता हूँ और तौबा करता हूँ। (मुस्लिम १/५३४)

٣٠- ((اللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ ، وَإِسْرَافِيْلَ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرضِ. عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ. إِهْدِنِيْ لِمَا اخْتُلِفَ فِيْهِ

مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ إِنَّكَ تَهْدِي مَنْ تَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيْمٍ))

३०. ऐ अल्लाह ! जिब्राईल, मीकाईल और इस्राफ़ील के रब, आकाशों और धरती के पैदा करने वाले, ग़ायब और हाज़िर को जानने वाले, अपने बन्दों के बीच तू ही उस चीज़ के विषय में निर्णय करेगा जिस में वे इख़्तिलाफ़ करते थे। हक़ की जिन बातों में इख़्तिलाफ़ हो गया है, तू अपनी अनुमति से मुझे सत्य की ओर हिदायत दे दे। निःसंदेह तू जिसे चाहता है सीधी राह की ओर हिदायत देता है। (मुस्लिम १/५३४)

٣١- ((اللهُ أكبرُ كَبِيْراً، اللهُ أكبرُ كَبِيْراً، اللهُ أكبرُ كَبِيْراً، وَالْحَمْدُ للهِ كَثِيْراً، وَالْحَمْدُ للهِ كَثِيْراً، وَالْحَمْدُ للهِ كَثِيْراً، وَسُبْحَانَ اللهِ بُكْرَةً وَّأَصِيْلاً (तीन बार पढ़े) أَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ مِنْ نَفْخِهِ وَنَفْثِهِ وَهَمْزِهِ))

३१. अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा, अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा, अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा और हर प्रकार की बहुत अधिक प्रशंसा केवल

अल्लाह के लिए है, और हर प्रकार की बहुत अधिक प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए है, और हर प्रकार की बहुत अधिक प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए है। और अल्लाह की मैं पवित्रता बयान करता हूँ, सुबह व शाम (यह दुआ तीन बार पढ़े) मैं अल्लाह की पनाह पकड़ता हूँ, शैतान मर्दूद से उसकी फूँक से, उसके थुकथुकाने से और उसके चोके से। (अर्थात शैतान के दुर्भावना, षड़यन्त्र, मक्र व फ़रेब तथा वस्वसा से अल्लाह की पनाह (शरण) चाहता हूँ।) (अबू दाऊद १/२०३, इब्ने माजा १/२६५, मुस्नद अहमद ४/८५ और मुस्लिम ने इसे इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि एक बार हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक आदमी ने कहा: "अल्लाहु अकबर कबीरा वल्हम्दुलिल्लाहि कसीरा व सुब्हानल्लाहि बुक्रतौं व असीला" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फ़लाँ फ़लाँ शब्द के साथ दुआ माँगने वाला कौन है ? उपस्थित लोगों में से एक व्यक्ति ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैं हूँ। आप ने फ़रमाया मुझे इन शब्दों से आश्चर्य

हुआ कि इन के लिए आकाश के दरवाज़े खोले गये। (मुस्लिम १/४२०)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब रात को तहज्जुद के लिए उठते तो यह दुआ पढ़ते :

(اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُوْرُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ، [وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ] [وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ] [وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ مَلِكُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ] [وَلَكَ الْحَمْدُ] [أَنْتَ الْحَقُّ، وَوَعْدُكَ الْحَقُّ، وَقَوْلُكَ الْحَقُّ، وَلِقَاءُكَ الْحَقُّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالنَّبِيُّونَ حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ] [اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ، وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ. فَاغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ، وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ، وَمَا أَعْلَنْتُ] [أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ

الْمُؤَخِّرُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ] [أَنْتَ إِلَهِيْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ]

३२. ऐ अल्लाह तेरे लिए ही प्रशंसा है, तू ही आकाशों और धरती का नूर है और (उनका भी नूर है) जो उन में हैं और तेरे ही लिए हर प्रकार की प्रशंसा है, तू ही आसमानों और ज़मीन का व्यवस्थापक है और (उन का भी व्यवस्थापक है) जो उन में हैं | और तेरे ही लिए हर प्रकार की प्रशंसा है, तू ही आसमानों और ज़मीन का रब है और (उनका भी रब है) जो उन में हैं | और तेरे ही लिए हर प्रकार की प्रशंसा है, तेरे ही लिए आसमानों तथा ज़मीन की बादशाही है और जो कुछ उन में है | और तेरे ही लिए हर प्रकार की प्रशंसा है तू आसमानों तथा ज़मीन का राजा है और केवल तेरे ही लिए प्रशंसा है | तू ही हक़ है और तेरा वायदा सत्य है और तेरी बात हक़ है और तुझ से मुलाक़ात हक़ है और स्वर्ग हक़ है, और नरक हक़ है और सारे पैग़म्बर हक़ हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हक़ हैं, और क़ियामत हक़ है | ऐ अल्लाह मैं तेरे लिए मुसलमान हुआ और तुझ पर मैंने भरोसा किया और तुझी पर मैं ईमान

लाया और तेरी ही ओर रुजूअ किया और तेरी मदद तथा तेरे भरोसे पर और तेरे लिए मैंने दुश्मन से झगड़ा किया और तुझ को अपना हाकिम माना। इसलिए मेरे गुनाह बख़्श दे जो मैंने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैंने छिपा कर किया और जो मैंने ज़ाहिर में किया। तू ही सब से पहले था और तू ही बाद में भी रहेगा तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू ही मेरा सच्चा माबूद है तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ ३/३, ११/११६, १३/३७१, ४२३, ४६५, मुस्लिम १/५३२

१७- रुकूअ की दुआये

٣٣- ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ))

३३. मेरा महान रब पवित्र है। (तीन बार पढ़े) (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, अहमद और देखिये सहीह त्रिमिज़ी १/८३)

٣٤- ((سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ))

३४. ऐ अल्लाह तू पाक है, ऐ हमारे रब तेरे ही लिए

हर प्रकार की प्रशंसा है, ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे। (बुख़ारी १/९९, मुस्लिम १/३५०)

٣٥- ((سُبُّوحٌ، قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلائِكَةِ وَالرُّوحِ))

३५.बहुत पाकीज़गी वाला, बहुत मोक़द्दस है फ़रिश्तों तथा रूह (जिब्रील) का रब। (मुस्लिम १/३५३, अबू दाऊद १/२३०)

٣٦- ((اللَّهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ خَشَعَ لَكَ سَمْعِي، وَبَصَرِي، وَمُخِّي، وَعَظْمِي، وَعَصَبِي، وَمَا اسْتَقَلَّ بِهِ قَدَمِي))

३६. ऐ अल्लाह मैं तेरे ही लिए झुका (रुकूअ किया) और तुझ पर ईमान लाया और तेरे लिए इस्लाम धर्म क़ुबूल किया और तेरे भय से तेरे विनीत हो गये (झुक गये) मेरे कान, मेरी आँख, मेरा मग़ज, (भेजा) मेरी हड्डियाँ, मेरे पठ्ठे और (मेरा पूरा बदन) जिसे मेरे दोनों पैर उठाये हुए हैं। (मुस्लिम १/५३४, त्रिमिज़ी, नसाई तथा अबू दाऊद)

٣٧- ((سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوْتِ وَالْمَلَكُوْتِ، وَالْكِبْرِيَاءِ، وَالْعَظْمَةِ))

३७. पाक है बहुत अधिक शक्ति रखने वाला, बड़े मुल्क वाला और बड़ाई तथा अज़मत वाला अल्लाह। (अबू दाऊद १/२३०, नसाई, अहमद और इसकी सनद हसन है)

१८- रुकूअ से उठने की दुआ

٣٨- ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ))

३८. सुन ली अल्लाह ने जिस ने उसकी प्रशंसा की। (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ २/२८२)

٣٩- ((رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْداً كَثِيْراً طَيِّباً مُبَارَكاً فِيْهِ))

३९. ऐ हमारे रब और तेरे ही लिए अनेक प्रकार की प्रशंसा है, बहुत अधिक प्रशंसा, जिस में बरकत की गई हो। (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ २/२८४)

٤٠- (مِلءَ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءَ الأَرْضِ ، وَمِلْءَ مَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ ،اللهُمَّ لا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلا يَنْفَعُ ذَا الجَدِّ مِنْكَ الجَدُّ)

४०. ऐ हमारे पालनहार ! तेरे ही लिए प्रशंसा है आकाशों और धरती के बराबर, और जो कुछ उन दोनों के बीच है उस के बराबर और उस चीज़ के बराबर जो इस के बाद तू चाहे, तू प्रशंसा और बुज़र्गी वाला है, बन्दा ने जो कुछ प्रशंसा की उस का (तू) हक़दार है, और हम सब के सब तेरे ही बन्दे हैं, ऐ अल्लाह ! जो तू देना चाहे उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जो तू रोक दे उसे कोई देने वाला नहीं, और किसी धनवान को उसका धन तेरे अज़ाब से नहीं बचा सकता (मुस्लिम १/३४६)

१९- सजदे की दुआयें

٤١- ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الأَعْلَى))

४१. मेरा महान रब पवित्र है। (इस दुआ को तीन बार पढ़े) अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, अहमद और देखिये सहीह त्रिमिज़ी १/८३)

٤٢- ((سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللّٰهُمَّ اغفِرْ لِيْ))

४२. पाक है तू ऐ अल्लाह, ऐ हमारे रब और हर प्रकार की प्रशंसा तेरे ही लिए है, ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे। (बुख़ारी १/९९, मुस्लिम १/३५०)

٤٢- ((سُبُّوْحٌ، قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ))

४२. बहुत पाकीज़गी वाला, बहुत मोक़द्दस है फ़रिश्तों तथा रूह (जिब्रील) का रब। (मुस्लिम १/३५३, अबू दाऊद १/२३०)

٤٤- ((اَللّٰهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ، تَبَارَكَ اللهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ))

४४. ऐ अल्लाह मैंने तेरे ही लिए सजदा किया और तेरे ऊपर ईमान लाया, तेरा ही फ़रमाबरदार (आज्ञाकारी) बना, मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए

सजदा किया जिस ने उसे पैदा किया, उसकी सूरत बनाई और कानों में सूराख़ बनाये और आँखों के शेग़ाफ़ बनाये, बरकत वाला है अल्लाह जो तमाम बनाने वालों से अच्छा है। (मुस्लिम १/५३४)

٤٥- ((سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوْتِ وَالْمَلَكُوْتِ، وَالْكِبْرِيَاءِ، وَالْعَظْمَةِ))

४५. पाक है बहुत अधिक शक्ति वाला, बड़े मुल्क वाला और बड़ाई तथा अज़मत वाला अल्लाह। (अबू दाऊद १/२३०, नसाई, अहमद तथा अलबानी ने इसे सहीह कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद १/१६६)

٤٦- ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ كُلَّهُ، دِقَّهُ وَجِلَّهُ، وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ وَعَلاَنِيَتَهُ وَسِرَّهُ))

४६. ऐ अल्लाह ! मेरे छोटे, बड़े, पहले, पिछले, ज़ाहिर और पोशीदा तमाम गुनाहों को बख़्श दे। (मुस्लिम १/३५०)

٤٧- ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ، لاَ أُحْصِيْ ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ))

४७. ऐ अल्लाह मैं तेरे ग़ुस्से (क्रोध) से तेरी प्रसन्नता की पनाह चाहता हूँ और तेरी सज़ा से तेरी माफ़ी (क्षमा) की पनाह चाहता हूँ, और मैं तुझ से तेरी पनाह चाहता हूँ, मैं पूरी तरह तेरी प्रशंसा नहीं कर सकता, तू उसी तरह है जिस तरह तूने खुद (स्वयं) अपनी प्रशंसा की है। (मुस्लिम १/२५२)

२०- दोनों सजदों के बीच बैठने की दुआयें

٤٨- ((رَبِّ اغْفِرْ لِيْ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ))

४८. ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे, ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे। (अबू दाऊद १/२३१ और देखिये सहीह इब्ने माजा १/१४८)

٤٩- ((اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ، وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَاجْبُرْنِيْ وَعَافِنِيْ، وَارْزُقْنِيْ وَارْفَعْنِيْ))

४९. ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे और मुझ पर दया कर और मुझे हिदायत दे और मेरे नुकसान पूरे कर दे और मुझे आफ़ियत दे और मुझे रोज़ी दे और मुझे बुलन्द कर। (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और

देखिए सहीह अत-त्रिमिज़ी १/९०, सहीह इब्ने माजा १/१४८)

२१- सजदये तिलावत की दुआ

٥٠- ((سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ ﴿فَتَبَارَكَ اللهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ﴾))

५०. मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सजदा किया जिस ने उसे पैदा किया, अपनी ताक़त व क्षमता से उस के कान में सूराख़ और आँखों में शेग़ाफ़ बनाये, अत: बरकत वाला है अल्लाह जो सब बनाने वालों से अच्छा है। (त्रिमिज़ी २/४७४, अहमद ६/३० और हाकिम ने इसे रिवायत करके सहीह कहा है, इमाम ज़हबी ने भी इस बात की पुष्टि की है (१/२२०) और "फ़तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ीन" शब्द की वृद्धि भी हाकिम की है।

٥١- ((اللَّهُمَّ اكْتُبْ لِي بِهَا عِنْدَكَ أَجْراً، وَضَعْ عَنِّي بِهَا وِزْراً، وَاجْعَلْهَا لِي عِنْدَكَ ذُخْراً، وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ))

५१- ऐ अल्लाह मेरे लिए (इस सजदे) के बदले में अपने पास पुण्य लिख ले और इसके माध्यम से मेरे ऊपर से गुनाहों के बोझ उतार दे और इसे मेरे लिए अपने पास नेकियों का भंडार बना दे और इसे मेरी ओर से इस तरह क़ुबूल कर ले जिस तरह तूने अपने बन्दे दाऊद की ओर से क़ुबूल किया था। (त्रिमिज़ी २/४७३, और इमाम हाकिम ने इसे सहीह कहा है तथा इमाम ज़हबी ने भी इस बात की पुष्टि की है। १/२१९)

२२- तशह्हुद की दुआ

٥٢- ((التَّحِيَّاتُ لله وَالصَّلوَاتُ والطَّيِّبَاتُ السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَاالنَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادَ اللهِ الصَّالِحِيْنَ، أَشْهَدُ ان لاَ إِلهَ إِلاَّ اللهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ))

५२. ज़बान, बदन तथा माल के माध्यम से की जाने वाली सारी उपासनायें (इबादतें) अल्लाह ही के लिए हैं, सलाम हो तुझ पर ऐ नबी और अल्लाह की

रहमत और उसकी बरकतें, सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना के लायक़ नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ १/१३ और मुस्लिम १/३०१)

२३- नबी करीम ﷺ पर दरूद

٥٣- ((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ))

५३. ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल कर मुहम्मद पर और मुहम्मद की संतान पर, जिस प्रकार तूने रहमत नाज़िल की इब्राहीम पर और इब्राहीम की संतान पर, निःसंदेह तू प्रशंसा वाला बुज़ुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह बरकत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की संतान पर, जिस प्रकार तूने बरकत नाज़िल की इब्राहीम पर और इब्राहीम की संतान पर, नि:संदेह तू प्रशंसा और बुज़ुर्गी वाला है। (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ ६/४०८)

٥٤- ((اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ عَلَى أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيْم إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ))

५४. ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल कर मुहम्मद पर और मुहम्मद की पत्नियों तथा संतान पर, जिस प्रकार तूने रहमत नाज़िल की इब्राहीम की संतान पर, और बरकत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप की बीवियों तथा संतान पर, जिस प्रकार तूने बरकत नाज़िल की इब्राहीम की संतान पर, नि:संदेह तू प्रशंसा और बुज़ुर्गी वाला है। (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ ६/४०७ और मुस्लिम १/३०६ शब्द मुस्लिम के हैं।)

२४- आख़िरी तशहहुद के बाद और सलाम फेरने से पहले की दुआयें

٥٥- ((اللَّهُمَّ إِنِّى اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ))

५५- ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ, क़ब्र के अज़ाब से और नरक के अज़ाब से और ज़िन्दगी तथा मौत के फ़ित्ने से और मसीहे दज्जाल के फ़ित्ने की बुराई से ।(बुख़ारी २/१०२ और मुस्लिम १/४१२ तथा शब्द मुस्लिम के हैं)

٥٦- ((اللَّهُمَّ إِنِّى أَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ القَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، اللَّهُمَّ إِنِّى أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْمأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ))

५६. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ क़ब्र के अज़ाब से, और तेरी पनाह चाहता हूँ मसीहे दज्जाल के फ़ित्ने से, और तेरी पनाह चाहता हूँ ज़िन्दगी और

मौत के फ़ित्ने से। ऐ अल्लाह नि:संदेह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ गुनाह से और क़र्ज़ (ऋण) से। (बुख़ारी १/२०२ तथा मुस्लिम १/४१२)

٥٧- ((اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْماً كَثِيراً، وَلاَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلاَّ أَنْتَ، فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ))

५७. ऐ अल्लाह मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया और तेरे सिवा कोई अन्य गुनाहों को नहीं क्षमा कर सकता। इस लिए मुझे अपने ख़ास फ़ज़्ल से बख़्श दे और मुझ पर दया कर, नि:संदेह तू क्षमा करने वाला बहुत अधिक दया करने वाला है। (बुख़ारी ८/१६८ तथा मुस्लिम ४/२०७८)

٥٨- ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ، وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ، وَمَا أَعْلَنْتُ، وَمَا أَسْرَفْتُ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُوَخِّرُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ))

५८. ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे जो मैंने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैंने छिपाकर किया

और जो मैंने ज़ाहिर में किया और जो मैंने ज़्यादती की और जिसे तू मुझ से अधिक जानता है, तू ही पहले करने वाला है तू ही पीछे करने वाला है, तेरे सिवा कोई इबादत (उपासना) के लायक़ नहीं। (मुस्लिम १/५३४)

٥٩- ((اَللّٰهُمَّ أَعِنِّيْ عَلَى ذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ))

५९. ऐ अल्लाह अपनी याद, अपने शुक्र और अपनी अच्छी पूजा (इबादत) पर मेरी सहायता कर। (अबू दाऊद २/८६, नसाई ३/५३ और शैख़ अलबानी ने सहीह अबू दाऊद में सहीह कहा है, १/२८४)

٦٠- ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْزَلِ الْعُمْرِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ))

६०. ऐ अल्लाह मैं कंजूसी से तेरी पनाह चाहता हूँ और बुज़दिली से तेरी पनाह चाहता हूँ और इस बात से तेरी पनाह चाहता हूँ कि निकम्मी उम्र की ओर

लौटाया जाऊँ और मैं दुनिया के फितने और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ ६/३५)

٦١- ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وأَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ))

६१- ऐ अल्लाह मैं तुझ से स्वर्ग का सवाल करता हूँ और नरक से तेरी पनाह चाहता हूँ। (अबू दाऊद और देखिये सहीह इब्ने माजा २/३२८)

٦١- ((اَللّٰهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبَ وَقُدْرَتِكَ عَلَى الْخَلْقِ أَحْيِنِيْ مَا عَلِمْتَ الْحَيَاةَ خَيْراً لِيْ وتَوَفَّنِيْ إِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْراً لِيْ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ خَشْيَتَكَ فِيْ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، وَأَسْأَلُكَ كَلِمَةَ الْحَقِّ فِيْ الرِّضَا وَالْغَضَبِ، وَأَسْأَلُكَ الْقَصْدَ فِيْ الْغِنَى وَالْفَقْرِ، وَأَسْأَلُكَ نَعِيْماً لاَ يَنْفَدُ، وَأَسْأَلُكَ قُرَّةَ عَيْنٍ لاَ تَنْقَطِعُ، وَأَسْأَلُكَ الرِّضَا بَعْدَ الْقَضَاءِ، وَأَسْأَلُكَ بَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ، وَأَسْأَلُكَ لَذَّةَ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ وَالشَّوْقَ إِلَى لِقَائِكَ فِيْ غَيْرِ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ وَلاَ فِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ. اَللّٰهُمَّ زَيِّنَّا بِزِيْنَةِ الإِيْمَانِ وَاجْعَلْنَا هُدَاةً مُهْتَدِيْنَ))

६२. ऐ अल्लाह मैं तेरे ग़ैब जानने और मख़लूक़ पर कुदरत रखने के साथ सवाल करता हूँ कि मुझे उस समय तक ज़िन्दा रख जब तक तू ज़िन्दगी मेरे लिए बेहतर जाने और मुझे उस समय मृत्यु दे जब वफ़ात मेरे लिए बेहतर जाने। ऐ अल्लाह निःसंदेह मैं ग़ायब और हाज़िर होने की हालत में तुझ से तेरे भय का सवाल करता हूँ और प्रसन्न तथा क्रोधित होने की हालत में तुझ से हक़ बात कहने की तौफ़ीक़ का सवाल करता हूँ और तुझ से अमीरी तथा ग़रीबी में मियाना रवी का सवाल करता हूँ और तुझ से ऐसी नेमत का सवाल करता हूँ जो कभी भी समाप्त न हो और आँखों की ऐसी ठंडक का सवाल करता हूँ जो समाप्त न हो और तुझ से तेरे फैसले पर राज़ी रहने का सवाल करता हूँ और तुझ से मौत के बाद जो जीवन है उस की ठंडक (प्रफुल्लता) का सवाल करता हूँ और तुझ से तेरे चेहरे की ओर देखने की लज़्ज़त और तेरी मुलाक़ात के शौक़ का सवाल करता हूँ, बिना किसी तकलीफ़देह मुसीबत और गुमराह करने वाले फितने के। ऐ अल्लाह हमें ईमान की ज़ीनत (शोभा) से मुज़य्यन (सुसज्जित) फ़रमा

और हमें हिदायत देने वाला और हिदायत पाने वाला बना दे। (नसाई ३/५४, अहमद ४/३६४ तथा अलबानी ने इसे सहीह अन-नसाई में सहीह कहा है, १/२८१)

٦٣- ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ يَا اللهُ بِأَنَّكَ الْوَاحِدُ الأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ أَنْ تَغْفِرَ لِيْ ذُنُوْبِيْ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ))

६३. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के माध्यम से कि तू अकेला, एक तथा बेनियाज़ है, जिसने न किसी को जना और न वह किसी से जना गया है और न ही उसका कोई साझी है कि तू मुझे मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे, नि:संदेह तू ही बख़्शने वाला दयालु है। (नसाई ३/५२, अहमद ४/३३८ और शैख़ अलबानी (रहिमुल्लाह) ने इसे सहीह अन-नसाई में सहीह कहा है, १/२८१)

٦٤- ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْدُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ وَحْدَكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ، أَلْمَنَّانُ، يَا بَدِيْعَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ

يَا ذَا الجَلاَلِ وَ الإِكرَامِ، يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ»

६४. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के साथ कि अनेक प्रकार की प्रशंसा तेरे ही लिये है, तेरे सिवा कोई इबादत (उपासना) के लायक़ नहीं, तू अकेला है तेरा कोई साझी नहीं, बेहद एहसान करने वाला, ऐ आसमानों तथा ज़मीन को बनाने वाले, ऐ बुज़ुर्गी तथा इज़्ज़त वाले, ऐ ज़िन्दा और क़ायम रखने वाले मैं तुझ से जन्नत का सवाल करता हूँ और आग से तेरी पनाह चाहता हूँ। (अबू दाऊद, नसाई, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और देखिये सहीह इब्ने माजा २/३२९)

٦٥ - «اَللّهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِأَنِّيْ أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ الأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ»

६५. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के माध्यम से कि मैं गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह

है तेरे सिवा कोई अन्य उपासना के लायक़ नहीं। तू अकेला है, बेनियाज़ है जिस से न कोई पैदा हुआ और न तो वह किसी से पैदा हुआ है और न ही कोई उसका साझी है। (अबू दाऊद २/६२, त्रिमिज़ी ५/५१५, इब्ने माजा २/१२६७, अहमद ५/३६० और देखिये सहीह इब्ने माजा २/३२९ तथा सहीह त्रिमिज़ी ३/१६३)

२५- नमाज़ से सलाम फेरने के बाद की दुआयें

٦٦- ((أَسْتَغْفِرُ الله، أَسْتَغْفِرُ الله، أَسْتَغْفِرُ الله))

६६. मैं अल्लाह से बख़िशश माँगता हूँ।

((اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ و مِنكَ السَّلَامُ ، تَبَارَكْتَ يَا ذَا الجَلَالِ وَالإِكرَامِ))

ऐ अल्लाह तू ही सलामती वाला है और तुझी से सलामती है, ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले तू बड़ी बरकत वाला है। (मुस्लिम १/४१४)

٦٧ - ((لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَـهُ، لَـهُ الْمُلْـكُ وَلَـهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))

६७. अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य है, और उसी के लिए सब प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह जो कुछ तू दे उसको कोई रोकने वाला नहीं, और जिस चीज़ से तू रोक दे उसको कोई देने वाला नहीं और दौलतमंद को उसकी दौलत तेरे अज़ाब से छुटकारा (लाभ) न देगी। (बुख़ारी १/२५५ तथा मुस्लिम १/४१४)

٦٨ - ((لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَـهُ، لَـهُ الْمُلْـكُ وَلَـهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لاَ حَولَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِـاللهِ، لاَ إِلـهَ إِلاَّ اللهُ وَلاَ نَعْبُـدُ إِلاَّ إِيـاهُ لَـهُ النِّعْمَـةُ وَلَـهُ الْفَضْـلُ وَلَـهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لاَ إِلـهَ إِلاَّ اللهُ مُخْلِصِيْـنَ لَـهُ الدِّيـنَ وَلَـو كَـرِهَ الْكَافِرُونَ))

६८. अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य है, और उसी के लिए सब प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। न बचने की ताक़त है न कुछ करने की शक्ति मगर अल्लाह (की मदद) के साथ। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, और उस के सिवा हम किसी की इबादत नहीं करते, उसी के लिए नेमत है और उसी के लिए फ़ज़्ल और उसी के लिए अच्छी प्रशंसा है। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, हम अपनी इबादत उसी के लिए ख़ालिस करते हैं चाहे काफिरों को बुरा ही लगे। (मुस्लिम १/४१५)

٦٩- ((سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ للهِ، وَاللهُ أَكْبَرُ ३३ बार لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ))

६९. अल्लाह पाक है और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य है, और उसी के लिए

सब प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है।

जो आदमी हर नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े उस के गुनाह माफ़ कर दिये जाते है चाहे वे समुद्र के झाग के बराबर हों। (मुस्लिम १/४१८)

٧٠- بِسْمِ اللهِ الرَّحمَنِ الرَّحِيْم ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَد ○ اللَّهُ الصَّمَدُ○ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ○ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ﴾ (الإخلاص: ١-٤)

بِسْمِ اللهِ الرَّحمَنِ الرَّحِيْم ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ○ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ○ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ○ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴾ (الفلق: ١-٥)

بِسْمِ اللهِ الرَّحمَنِ الرَّحِيْم ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ○ مَلِكِ النَّاسِ ○ إِلَهِ النَّاسِ ○ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ○ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ○ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ﴾ (الناس: ١-٦)

७०. अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं कृपालु है।

• (आप) कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह तआला किसी के आधीन नहीं सभी उसके आधीन हैं। न उससे कोई पैदा हुआ न उसे किसी ने पैदा किया तथा न कोई उसका समकक्ष है।

• आप कह दीजिए कि मैं प्रातः के रब की शरण में आता हूँ। हर उस वस्तु की बुराई से जो उसने पैदा की है। तथा अंधेरी रात्रि की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाये। तथा गाँठ (लगाकर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से। तथा द्वेष करने वाले की बुराई से भी जब वह द्वेष करे।

• आप कह दीजिए कि मैं लोगों के प्रभु की शरण में आता हूँ। लोगों के स्वामी की (और) लोगों के पूजने योग्य की (शरण में) शंका डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में शंका डालता है (चाहे) वह जिन्न में से हो अथवा मनुष्य में से।

हर नमाज़ के बाद एक बार और मग़रिब तथा फ़ज्र

की नमाज़ के बाद तीन बार पढ़ना चाहिए। (अबू दाऊद २/८६, नसाई ३/६८ और देखिये सहीह त्रिमिज़ी २/८, इन तीनों सूरतों को मुऔवेज़ात कहा जाता है, देखिये फ़तहुलबारी ९/६२)

७१. हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़े :

﴿اللَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لاَ تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلاَ نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلاَّ بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلاَ يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلاَّ بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ وَلاَ يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ﴾ (البقرة:٢٥٥)

७१. अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूजनीय) नहीं, वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है, सबको क़ायम रखने वाला है, उसको न उँघ आती है न निंद्रा (नींद), आसमान और ज़मीन की सब चीज़ें उसी की हैं, कौन है जो उसके पास किसी की सिफ़ारिश (अनुसन्शा) करे, उसकी आज्ञा के बिना, वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है, और लोग उसके

ज्ञान में से कुछ नहीं घेर (मालूम) सकते, परन्तु जितना अल्लाह चाहे, और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने घेरे में ले रखा है, और उन दोनों की सुरक्षा उसको थका नहीं सकती और वह महान और बहुत बड़ा है। (जो व्यक्ति हर नमाज़ के बाद इसे पढ़ता है उसको मौत के सिवाय कोई वस्तु स्वर्ग में दाख़िल (प्रवेश) होने से नहीं रोक सकती। नसाई अमलुल यौमे वल्लैलह नं॰ १०० और इब्ने सुन्नी नं॰ १२१ और अलबानी ने इसे सहीहुल जामिअ् में सहीह कहा है, ५/३३९ तथा सिलसिलतुल अहादीस अस्सहीह २/६९७ नं॰ ९७२)

٧٢- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ))

७२. अल्लाह के सिवा कोई सत्य माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य है, और उसी के लिए सब प्रशंसा है, वही जीवन प्रदान करता है तथा वही मृत्यु प्रदान करता है और वह प्रत्येक वस्तु पर सर्वशक्तिमान है। (दस बार मग़रिब और फ़ज्र की नमाज़ के बाद। त्रिमिज़ी

५/५१५, अहमद ४/२२७ तथा ज़ादुल मआद देखिए १/३००)

٧٣- ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسأَلُكَ عِلْماً نَافِعاً، وَرِزْقاً طَيِّباً، وَعَمَلاً مُتَقَبَّلاً))

७३. ऐ अल्लाह! मैं तुझ से लाभ देने वाले ज्ञान, पवित्र रोज़ी और क़ुबूल होने वाले अमल का सवाल करता हूँ।

फ़ज्र की नमाज़ का सलाम फेरने के बाद यह दुआ पढ़े। (इब्ने माजा और देखिए सहीह इब्ने माजा १/१५२ तथा मजमउज़्ज़वाइद १०/१११)

२६- इस्तिख़ारा की दुआ

नमाज़े इस्तिख़ारा का बयान :

[इस्तिख़ारा कहते हैं किसी काम की भलाई तलब करना, जब किसी को कोई जायज़ काम मिसाल के तौर पर (उदाहरणार्थ) निकाह, तेजारत, सफ़र, या किसी नये काम की इब्तिदा (प्रारम्भ) आदि का इरादा हो तो उसको चाहिए कि दो रकअत ख़ुशूअ,

ख़ुज़ूअ आजिज़ी व इंकिसारी, इत्मिनान व सुकून से इस्तिख़ारा की नियत से नमाज़ पढ़े, इसका कोई ख़ास (निश्चित) तरीक़ा नहीं है, आम (साधारण) नमाज़ों की तरह दो रकअत पढ़ कर इस्तिख़ारा की यह मशहूर (प्रसिद्ध) दुआ पढ़े और अपनी ज़रूरत ज़ाहिर करे, फिर नमाज़े इस्तिख़ारा और दुआ वग़ैरा के बाद दिल जिस बात पर मुतमईन हो जाये उस पर अमल करे। इस्तिख़ारा केवल एक बार किया जाता है, एक ही चीज़ या काम के लिए बार-बार इस्तिख़ारा करना साबित नहीं, ऐसे ही किसी से इस्तिख़ारा करवाना भी दुरुस्त नहीं। (अनुवादक)]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें तमाम कामों में इस्तिख़ारा करने की तालीम (शिक्षा) देते जिस तरह हमें क़ुरआन की किसी सूरा की तालीम देते, आप फ़रमाते कि तुम में से कोई आदमी जब किसी काम की इच्छा करे तो फ़र्ज़ के सिवा दो रकअतें अदा करे फिर यह दुआ पढ़े:

((اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلاَ أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلاَ أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلاَّمُ الْغُيُوْبِ، اَللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الأَمْرَ (وَيُسَمِّي حَاجَتَهُ) خَيْراً لِيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ أَمْرِيْ -أَو قَالَ: عَاجِلِه وَآجِلِهِ- فَاقْدُرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ لِيْ فِيْهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنْ هَذَا الأَمْرَ شَرٌّ لِيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ أَمْرِيْ -أَوْ قَالَ: عَاجِلِه وَآجِلِهِ- فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِيْ بِهِ))

ऐ अल्लाह मैं तेरे इल्म की सहायता (मदद) से भलाई तलब करता हूँ और तेरी क़ुदरत की मदद से क़ुदरत (ताकत) माँगता हूँ। और तुझ से तेरा अज़ीम फ़ज़्ल माँगता हूँ। बेशक तू ही क़ुदरत रखता है, और मैं क़ुदरत नहीं रखता और तू ही जानता है और मैं नहीं जानता, और तू ही ग़ैबों (परोक्ष) का जानने वाला है। ऐ अल्लाह अगर तू जानता है कि यह काम (उस काम का नाम ले) मेरे लिए दीन और मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार में या आप ने कहा (इस

दुनिया के लिए या आख़िरत के लिए) बेहतर है तो इस काम को मेरे लिए बेहतर कर दे और इसको मेरे लिए सरल बना दे, फिर मेरे लिए उसमें बरकत दे, और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे दीन और ज़िन्दगी और अन्जामे कार या आप ने कहा (इस दुनिया के लिए या आख़िरत के लिए) बुरा है तो तू इस काम को मुझ से फेर दे और मुझको उस काम से फेर दे, और मेरे लिए भलाई मुहैया (एकत्रित) कर दे वह जहाँ कहीं हो, फिर उस काम के लिए मुझ को राज़ी और आमादा कर दे। (बुख़ारी ७/१६२)

(जो कोई अल्लाह तआला से भलाई तलब करे और मोमिनों से विचार करे और कार्य पूरा होने तक दृढ़ निश्चय रहे तो उसे पछतावा नहीं होता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿وَشَاوِرْهُمْ فِي الأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ﴾

और काम का परामर्श उनसे किया करें फिर जब आप का दृढ़ निश्चय हो जाये तो अल्लाह पर भरोसा करें। ३/१५९)

२७- सुबह और शाम के अज़कार

सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो अकेला है और दरूद व सलाम हो ऐसे नबी पर जिसके बाद कोई नबी न होगा। (हज़रत अनस से रिवायत है कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे ऐसे लोगों के साथ बैठना हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान में से चार ग़ुलामों को आज़ाद करने से अधिक पसन्द है जो फ़ज्र की नमाज़ से सूर्य निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करते है मुझे ऐसे लोगों के साथ बैठना चार (ग़ुलाम) आज़ाद करने से अधिक पसन्द है जो अस्र की नमाज़ से सूर्य डूबने तक अल्लाह का ज़िक्र करें। (अबू दाऊद ३६६७ और शैख़ अलबानी ने इसे हसन कहा है देखिए सहीह अबू दाऊद २/६९८)

٧٥- أَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ﴿اللَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لاَ تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلاَ نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلاَّ بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ

أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلاَ يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلاَّ بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ وَلاَ يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ﴾ (البقرة:٢٥٥)

७५. मैं धुत्कारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ। अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूजनीय) नहीं, वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है, सबको क़ायम रखने वाला है, उसको न उँघ आती है न निंद्रा (नींद), आसमान और ज़मीन की सब चीज़ें उसी की हैं, कौन है जो उसके पास किसी की सिफ़ारिश (अनुसन्शा) करे, उसकी आज्ञा के बिना, वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है, और लोग उसके ज्ञान में से कुछ नहीं घेर (मालूम) सकते, परन्तु जितना अल्लाह चाहे, और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने घेरे में ले रखा है, और उन दोनों की सुरक्षा उसको थका नहीं सकती और वह महान और बहुत बड़ा है।

जो आदमी सुबह के समय आयतल कुर्सी पढ़ ले तो वह शैतान व जिन्नात के शर व फ़ितने से शाम तक

के लिए महफ़ूज़ हो जाता है और जो आदमी शाम के समय पढ़ ले तो सुबह तक के लिए शैतान व जिन्नात के शर व षड़यन्त्र से महफ़ूज़ हो जाता है। (हाकिम ने इसे रिवायत किया है। १/५६२)

٧٦- بِسْمِ اللهِ الرَّحمَنِ الرَّحِيْمِ ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَد O اللَّهُ الصَّمَدُO لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْO وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ﴾ (الإخلاص: ١-٤)

بِسْمِ اللهِ الرَّحمَنِ الرَّحِيْمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ O مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ O وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ O وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِO وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴾ (الفلق: ١-٥)

بِسْمِ اللهِ الرَّحمَنِ الرَّحِيْمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ O مَلِكِ النَّاسِ O إِلَهِ النَّاسِ O مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِO الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ O مِنْ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ﴾ (الناس: ١-٦)

७०. अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो

अत्यन्त दयालु एवं कृपालु है।

• (आप) कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह तआला किसी के आधीन नहीं सभी उसके आधीन हैं। न उससे कोई पैदा हुआ न उसे किसी ने पैदा किया तथा न कोई उसका समकक्ष है।

• आप कह दीजिए कि मैं प्रात: के रब की शरण में आता हूँ। हर उस वस्तु की बुराई से जो उसने पैदा की है। तथा अंधेरी रात्रि की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाये। तथा गाँठ (लगाकर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से। तथा द्वेष करने वाले की बुराई से भी जब वह द्वेष करे।

• आप कह दीजिए कि मैं लोगों के प्रभु की शरण में आता हूँ। लोगों के स्वामी की (और) लोगों के पूजने योग्य की (शरण में) शंका डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में शंका डालता है (चाहे) वह जिन्न में से हो अथवा मनुष्य में से।

जो आदमी ऊपर की तीनों सूरतें सुबह के समय तीन बार पढ़ ले और शाम के समय तीन बार पढ़ ले तो

ये सूरतें उस के लिए हर चीज़ के बदले में काफ़ी हैं। (अबू दाऊद ४/३२२, त्रिमिज़ी ५/५६७ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८२)

٧٧- ((أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لله ، وَالْحَمْدُ لله، لاَ إِلَهَ إلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِيْ هَذَا الْيَوْمِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهُ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْ هَذَا الْيَوْمِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ، وَسُوْءِ الْكِبَرِ رَبِّ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِيْ النَّارِ وَعَذَابٍ فِيْ الْقَبْرِ))

७७. हम ने सुबह की और अल्लाह के मुल्क ने सुबह की[1] और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए राज्य है, और उसी के लिए ही प्रशंसा है और वह प्रत्येक वस्तु पर सर्वशक्तिमान है । ऐ मेरे रब! आज के इस दिन में जो ख़ैर व भलाई है और जो इस दिन के बाद ख़ैर व

[1] और जब शाम के समय पढ़े तो यह कहे : أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لله

भलाई है मैं तुझ से इसका सवाल करता हूँ।[1] और इस दिन के शर (बुराई) से और इस के बाद वाले दिन के शर से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ मेरे रब! मैं सुस्ती और बुढ़ापे की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ मेरे रब! मैं नरक के अज़ाब और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। (मुस्लिम ४/२०८८)

٧٨- ((اللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا، وَبِكَ أَمْسَيْنَا، وَبِكَ نَحْيَا، وَبِكَ نَمُوتُ، وَإِلَيْكَ النُّشُورُ))

७८. ऐ अल्लाह तेरे ही नाम से हम ने सुबह की और तेरे ही नाम से हम ने शाम की[2] और तेरे ही नाम से हम ज़िन्दा हैं और तेरा ही नाम लेते हुए हम मरेंगे

---

[1] और जब शाम के समय पढ़े तो इस प्रकार कहे :

((رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِيْ هَذِهِ اللَّيلَةِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّمَا بَعْدَهَا))

[2] और जब शाम को पढ़े तो यह कहे:

((اللَّهُمَّ بِكَ أَمْسَيْنَا وَبِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ، وَإِلَيْكَ الْمَصِيْرُ))

और तेरी ही ओर लौट कर जाना है। (त्रिमिज़ी ५/५५६ और देखिये सहीह त्रिमिज़ी ३/१४२)

٧٩- ((اللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لاَ إِلَهَ إِلا أَنْتَ ، خَلَقْتَنِيْ وَأَنَـا عَبْـدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوْذُ بكَ مِـنْ شَرِّ مَـا صَنَعْتُ أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيّ وَأَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِـيْ فَإِنَّـهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلاَّ أَنْتَ))

७९. ऐ अल्लाह तू ही मेरा प्रभु है, तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं अपनी ताक़त के अनुसार तेरे प्रतिज्ञा तथा वायदे पर क़ायम हूँ। मैंने जो कुछ किया उसकी शर (बुराई) से तेरी पनाह चाहता हूँ, अपने ऊपर नेमत का इक़रार करता हूँ और अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ इसलिए मुझे बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा दूसरा पापों को नहीं बख़्श सकता।[1] (बुख़ारी ७/१५०)

---

[1] जो आदमी इस दुआ पर यक़ीन रखते हुए शाम को पढ़ ले और उसी रात उसका इन्तिक़ाल (देहान्त) हो जाये तो ऐसा आदमी स्वर्ग में दाख़िल होगा और ऐसे ही अगर यह दुआ सुबह को पढ़ ले और उसी दिन मर जाये तो स्वर्ग में दाख़िल होगा। (बुख़ारी ७/१५०)

٨٠- ((اللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَصْبَحْتُ أُشْهِدُكَ وَأُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ، وَمَلاَئِكَتَكَ وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ، أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لاَ إِلَهَ إِلا أَنْتَ وَحْدَكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ، وَأَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ))

८०. ऐ अल्लाह मैंने इस हाल में सबुह की[1] कि तुझे गवाह बनाता हूँ और तेरा अर्श उठाने वालों को, तेरे फ़रिश्तों को और तेरी तमाम मख़लूक़ को गवाह बनाता हूँ कि तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई साझी नहीं और नि:संदेह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं ।[2] (अबू दाऊद ४/३१७ और इमाम बुख़ारी (رحمه الله) की किताब अल-अदबुल मुफ़रद हदीस नं॰ १२०१)

٨١- ((اللّٰهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ))

---

[1] और जब शाम का समय हो तो यह दुआ पढ़े : ((اللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَمسيت))

[2] जो आदमी यह दुआ सुबह को चार या शाम को चार बार पढ़ ले तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम (नरक) से आज़ाद कर देते हैं ।

८१. ऐ अल्लाह मुझ पर या तेरी मख़लूक़ में से किसी पर जिस नेमत ने भी सुबह की है[1] वह केवल तेरी ओर से है। तू अकेला है तेरा कोई साझी नहीं, इसलिए तेरे ही लिए प्रशंसा है और तेरे ही लिए शुक्र है।(जिस ने यह दुआ सुबह के समय पढ़ी तो उसने उस दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिस ने यह दुआ शाम के समय पढ़ी तो उसने उस रात्रि का शुक्र अदा कर दिया। अबू दाऊद ४/३१८, शैख़ इब्ने बाज़ (رحمه الله) ने इस की सनद को हसन कहा है। देखिये तुहफ़तुल अख़यार पृष्ठ संख्या २४)

٨٢- ((اللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ، لاَ إِلَهَ إِلا أَنْتَ. اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ، وَالْفَقْرِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لاَ إِلَهَ إِلا أَنْتَ))

---

[1] और जब शाम का समय हो तो यह पढ़े :

((اللّٰهُمَّ مَا أَمْسَى بِيْ مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ))

तीन बार सुबह और तीन बार शाम को पढ़ना चाहिए।

८२. ऐ अल्लाह मुझे मेरे बदन में आफ़ियत दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरे कानों में आफ़ियत दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरी आँखों में आफ़ियत दे। तेरे सिवा कोई पूजा के योग्य (लायक़) नहीं। ऐ अल्लाह मैं कुफ़्र और मुहताजगी से तेरी पनाह चाहता हूँ और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ, तेरे सिवा कोई पूजा के लायक़ नहीं। (अबू दाऊद ४/३२४, अहमद ५/४२ अमलुल्यौमि वल्लैला हदीस नं॰ २२, इसकी सनद हसन है।)

٨٣- ((حَسْبِيَ اللهُ لاَ إِلَـهَ إِلاَّ هُـوَ عَلَيْـهِ تَوَكَّلْـتُ وَهُـوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم))

सात बार सुबह और सात बार शाम को पढ़े तो अल्लाह उस के लिए काफ़ी होगा।

८३. मुझे अल्लाह ही काफ़ी है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, मैंने उसी पर भरोसा किया और वही अर्शे अज़ीम का रब है। (अबू दाऊद

४/३२१ और इसकी सनद शुऐब और अब्दुल क़ादिर अरनाउत ने सहीह कहा है, देखिये ज़ादुल मआद २/३७६)

٨٤- ((اللّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، اللّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِيْنِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي، وَمَالِي اللّهُمّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللّهُمّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ، وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِيْنِي وَعَنْ شِمَالِي وَمِنْ فَوْقِي وَأَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي))

८४. ऐ अल्लाह मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत में आफ़ियत और क्षमा का सवाल करता हूँ, ऐ अल्लाह मैं अपने दीन, अपनी दुनिया, अपने परिवार और अपने माल में तुझ से क्षमा और आफ़ियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह मेरी पर्दा वाली चीज़ पर पर्दा डाल दे और मेरी घबराहटों को सुकून में बदल दे। ऐ अल्लाह मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरे दायें ओर से, मेरे बायें ओर से और मेरे ऊपर से मेरी सुरक्षा कर और इस बात से मैं तेरी अज़मत की पनाह

चाहता हूँ कि अचानक अपने नीचे से हेलाक किया जाऊँ । (अबू दाऊद और इब्ने माजा, देखिए सहीह इब्ने माजा २/३३२)

٨٥- ((اللَّهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيْكَه أَشْهَدُ أَن لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ وَأَن اَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِيْ سُوْءاً أَوأَجُرَّهُ إِلَى مُسْلِمٍ))

८५. ऐ अल्लाह, ऐ ग़ैब तथा हाज़िर को जानने वाले, आकाशों एवं धरती को पैदा करने वाले, हर चीज़ के पालनहार और मालिक! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, अपने नफ़्स के शर से और शैतान के शर एवं उस के साझा से और इस बात से कि मैं अपनी जान के विषय में दुरविचार करूँ या किसी अन्य मुस्लिम के बारे में दुरविचार करूँ। (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद और देखिये सहीह त्रिमिज़ी ३/१४२)

٨٦- ((بِسْمِ اللهِ الَّذِيْ لاَ يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِيْ الأَرْضِ

तीन बार पढ़े ((وَلاَ فِيْ السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ))

८६. उस अल्लाह के नाम के साथ जिस के नाम के साथ धरती तथा आकाश में कोई चीज़ हानि नहीं पहुँचाती और वही सुनने वाला तथा जानने वाला है। (अबू दाऊद ४/३२३, त्रिमिज़ी ५/४६५ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३३२)[1]

٨٧- ((رَضِيْتُ بِاللهِ رَبًّا، وَبِالإِسْلاَمِ دِيْنًا، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا))

८७. मैं अल्लाह के प्रभु होने पर राज़ी हूँ और इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने पर। (त्रिमिज़ी ५/४६५ और त्रिमिज़ी ४६५)[2]

---

[1] जो आदमी इस दुआ को सुबह तीन बार और शाम को तीन बार पढ़ ले तो उसे कोई चीज़ हानि नहीं पहँचा सकती। (सहीह इब्ने माजा २/३३२ और शैख़ इब्ने बाज़ (रहिमुल्लाह) ने इसे हसन कहा है। देखिए तुहफ़तुल अख़यार पृष्ठ ३९)

[2] जो आदमी इस दुआ को सुबह तीन बार और शाम को तीन बार पढ़ा करे तो अल्लाह तआला ऐसे आदमी से क़ियामत के दिन राज़ी तथा प्रसन्न होंगे। (मुस्नद अहमद ४/३३७, अबू दाऊद ४/३१८,

٨٨- ((يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ أَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ وَلاَ تَكِلْنِيْ إِلَى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ))

८८. ऐ जीवित, ऐ सहायक आधार! मैं तेरी ही रहमत से फ़रियाद करता हूँ, मेरे तमाम काम दुरुस्त कर दे और आँख झपकने के बराबर भी मुझे मेरे नफ़्स के हवाले न कर। (हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है। १/५४५, सहीह तरग़ीब व तरहीब १/२७३)

٨٩- ((أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لله رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسأَلُكَ خَيْرَ هَذَا الْيَوْمِ، فَتْحَهُ، وَنَصْرَهُ وَنُوْرَهُ، وَبَرْكَتَهُ، وَهُدَاهُ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ))

८९. हम ने सुबह की और अल्लाह रब्बुल आलमीन[1] के मुल्क ने सुबह की। ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस दिन

अत-त्रिमिज़ी ५/४६५ और इब्ने बाज़ (रहिमुल्लाह) ने तुहफ़तुल अख़यार में हसन कहा है, पृष्ठ ३९)

[1] और शाम के समय कहे :

((أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لله رَبِّ الْعَالَمِيْنَ))

की भलाई[1] इस की फ़त्ह व मदद, इसकी नूर व बरकत और इसकी हिदायत का सवाल करता हूँ और इस दिन की बुराई तथा इस के बाद वाले दिनों की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ। (अबू दाऊद ४/३२२ इस की सनद हसन है, देखिए ज़ादुल मआद २/२७३)

٩٠- ((أَصْبَحنَا عَلَى فِطْرَةِ الإِسْلاَمِ، وَعَلَى كَلِمَةِ الإِخْلاَصِ وَعَلَى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى مِلَّةِ أَبِيْنَا إِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ))

९०. हम ने फ़ितरते इस्लाम[2] और कलिमये इख़्लास तथा अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन और अपने बाप इब्राहीम की मिल्लत पर सुबह की जो हनीफ़ व मुस्लिम थे और वह मुश्रिकों

---

[1] और शाम के समय कहे :

((اَللّهُمَّ إِنِّيْ أَسأَلُكَ خَيْرَ هَذِه اللَّيْلَةِ فَتْحَهَا، وَنَصْرَهَا وَنُوْرَهَا، وَبَرَكَتَهَا، وَهُدَاهَا، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا))

[2] शाम के समय कहे :((أَمْسَيْنَا عَلَى فِطْرَةِ الإِسْلاَمِ)): हम ने फ़ितरत इस्लाम पर शाम की।

में से न थे। (अहमद ३/४०६,४०७ और सहीहुल-जामिअ ४/२०९)

٩١- ((سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ))

९१. मैं अल्लाह की प्रशंसा के साथ-साथ उसकी पवित्रता बयान करता हूँ। (जो व्यक्ति इस दुआ को सौ बार सुबह और सौ बार शाम पढेगा क़ियामत के दिन कोई व्यक्ति उसके अमल (कर्म) से बेहतर अमल लेकर नहीं आयेगा, यदि कोई उसके बराबर या उससे अधिक बार कहे (तो वह उससे बेहतर हो सकता है) मुस्लिम ४/२०७९)

٩٢- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ))

९२. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य है, और उसी के लिए सब प्रशंसा है, और वह प्रत्येक वस्तु पर सर्वशक्तिमान है। (दस बार, देखिए सहीह तरग़ीब व तरहीब १/२७२ और तुहफ़तुल अख़यार पृष्ठ ४४, अथवा एक बार सुस्ती के समय, अबू दाऊद ४/३१९, इब्ने माजा और अहमद

४/६० देखिए सहीह अबू दाऊद ३/९५७ और सहीह इब्ने माजा २/३३१ और ज़ादुल मआद २/३७७)

٩٣- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ))

९३. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य है, और उसी के लिए सब प्रशंसा है, और वह प्रत्येक वस्तु पर सर्वशक्तिमान है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो आदमी सुबह के समय इस दुआ को सौ (१००) बार पढ़े तो उसे दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और उस के एक सौ गुनाह माफ़ किये जायेंगे और एक सौ नेकियां उसके नाम लिखी जायेंगी, और उसकी बरकत से उस दिन शाम तक शैतान के षड़यन्त्र से सुरक्षित रहेगा, और कोई व्यक्ति उससे बेहतर अमल लेकर नहीं आयेगा, यदि कोई आदमी उस से अधिक बार कहे [तो वह उस से बेहतर हो सकता है] (बुख़ारी ४/९५ तथा मुस्लिम ४/२०७१)

٩٤- ((سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، عَدَدَ خَلْقِهِ، وَرِضَا نَفْسِهِ، وَزِنَةَ عَرْشِهِ، وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ)) सुबह के समय तीन बार

९४. अल्लाह पाक है और उसी के लिए अनेक प्रकार की प्रशंसा है, उसकी मख़लूक़ की तादाद के बराबर और उसकी अपनी इच्छा अनुसार और उस के अर्श के वज़न के बराबर और उसके कलिमात (अर्थात अल्लाह का ज्ञान, विद्या तथा उसकी हिक्मतें) की सियाही के बराबर। (मुस्लिम ४/२०९०)

٩٥- ((اَللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْماً نَافِعاً، وَرِزْقاً طَيِّباً، وَعَمَلاً مُتَقَبَّلاً))

९५. ऐ अल्लाह मैं तुझ से नफ़ा देने वाले इल्म (ज्ञान) और पवित्र रोज़ी और क़ुबूल होने वाले अमल का सवाल करता हूँ। (इब्ने माजा ९२५, यह दुआ सुबह के समय पढ़े)

٩٦- ((أَسْتَغْفِرُ اللهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ)) प्रतिदिन १०० बार

९६. मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ तथा उसी से

तौबा करता हूँ। (बुख़ारी फ़तहुल बारी के साथ ११/१०१, मुस्लिम ४/२०७५)

٩٧- ((أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ))

शाम के समय तीन बार पढ़े :

९७. मैं अल्लाह के मुकम्मल (सम्पूर्ण) कलिमात के साथ उन तमाम चीज़ों की बुराई से पनाह चाहता हूँ जो उस ने पैदा की हैं। (जो व्यक्ति इस दुआ को शाम के समय तीन बार पढ़े तो उसे उस रात्रि ज़हरीले जानवर का डसना (काटना) हानि नहीं पहुँचायेगा। अहमद २/२९०, देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८७ और इब्ने माजा २/२६६)

٩٨- ((اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ))

९८. ऐ अल्लाह हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम भेज। यह दस बार कहे।

((اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اللّٰهُمَّ

بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيْم إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ))

ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल कर मुहम्मद पर और मुहम्मद की संतान पर, जिस प्रकार तूने रहमत नाज़िल की इब्राहीम पर और इब्राहीम की संतान पर, निःसंदेह तू प्रशंसा वाला बुज़ुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह बरकत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संतान पर, जिस प्रकार तूने बरकत नाज़िल की इब्राहीम पर और इब्राहीम की संतान पर, निःसंदेह तू प्रशंसा और बुज़ुर्गी वाला है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जो व्यक्ति सुबह के समय १० बार मुझ पर दरूद व सलाम पढ़े तो उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत नसीब होगी। (सहीह तरग़ीब व तरहीब १/२७३ और मजमउज़्ज़वाइद १०/१२०) [लेकिन शर्त यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम पढ़ने वाला मोवह्हिद तथा तौहीद परस्त मुसलमान हो]

२८- सोते समय की दुआयें

٩٩- بِسْمِ اللهِ الرَّحمَنِ الرَّحِيْم ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَد ٥اللَّهُ الصَّمَدُ٥ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ٥ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ﴾ (الإخلاص: ١-٤)

بِسْمِ اللهِ الرَّحمَنِ الرَّحِيْم ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ٥ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ٥ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ٥وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ٥ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴾ (الفلق: ١-٥)

بِسْمِ اللهِ الرَّحمَنِ الرَّحِيْم ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ٥ مَلِكِ النَّاسِ ٥ إِلَهِ النَّاسِ ٥ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ٥ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ﴾ (الناس: ١-٦)

९९. अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं कृपालु है।

• (आप) कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह तआला किसी के आधीन नहीं सभी उसके आधीन हैं। न उससे कोई पैदा हुआ न उसे किसी ने पैदा किया तथा न कोई उसका समकक्ष है।

• आप कह दीजिए कि मैं प्रात: के रब की शरण में आता हूँ। हर उस वस्तु की बुराई से जो उसने पैदा की है। तथा अंधेरी रात्रि की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाये। तथा गाँठ (लगाकर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से। तथा द्वेष करने वाले की बुराई से भी जब वह द्वेष करे।

• आप कह दीजिए कि मैं लोगों के प्रभु की शरण में आता हूँ। लोगों के स्वामी की (और) लोगों के पूजने योग्य की (शरण में) शंका डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में शंका डालता है (चाहे) वह जिन्न में से हो अथवा मनुष्य में से।

١٠٠ - ﴿اللَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لاَ تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلاَ نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ

عِنْدَهُ إِلاَّ بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلاَ يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلاَّ بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ وَلاَ يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ﴾

(البقرة:٢٥٥)

१००. अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूजनीय) नहीं, वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है, सबको क़ायम रखने वाला है, उसको न उँघ आती है न निंद्रा (नींद), आसमान और ज़मीन की सब चीज़ें उसी की हैं, कौन है जो उसके पास किसी की सिफ़ारिश (अनुसन्शा) करे, उसकी आज्ञा के बिना, वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है, और लोग उसके ज्ञान में से कुछ नहीं घेर (मालूम) सकते, परन्तु जितना अल्लाह चाहे, और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने घेरे में ले रखा है, और उन दोनों की सुरक्षा उसको थका नहीं सकती और वह महान और बहुत बड़ा है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि आदमी जब सोने के लिए बिस्तर पर आये और

आयतुल कुर्सी पढ़ ले तो अल्लाह की ओर से उस के लिए मुहाफ़िज़ (निरीक्षक) मोक़र्रर (नियुक्त) कर दिया जाता है और सुबह तक उस के क़रीब शैतान नहीं आ सकता (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ४/४८७)

١٠١ - ﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ○ لاَ يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلاَّ وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لاَ تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلاَ تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلاَ تُحَمِّلْنَا مَا لاَ طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلاَنَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ﴾ (البقرة: ٢٨٥، ٢٨٦)

१०१. रसूल उस चीज़ पर ईमान लाये जो उसकी ओर अल्लाह की ओर से उतारी गई और मुसलमान भी ईमान लाये। यह सब अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाये, उसके रसूलों में से किसी के मध्य

हम मतभेद नहीं करते, उन्होंने कहा कि हम ने सुना और अनुकरण किया, हम तुझ से क्षमा चाहते हैं। हे हमारे रब! और हमें तेरी ही ओर लौटना है, अल्लाह किसी भी आत्मा पर उसके सामर्थ्य से अधिक बोझ नहीं डालता, जो पुण्य वह करे वह उस के लिए है और जो बुराई वह करे वह उस पर है, हे हमारे रब! यदि हम भूल गये हों अथवा ग़लती की हो, तो हमें न पकड़ना। हे हमारे प्रभु! हम पर वह बोझ न डाल जो हम से पहले लोगों पर डाला था। हे हमारे प्रभु! हम पर वह बोझ न डाल जो हमारे सामर्थ्य में न हो और हमें क्षमा कर दे और हमें मोक्ष प्रदान कर और हम पर दया कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफ़िर समुदाय पर विजय प्रदान कर।

(जो कोई इन दोनों आयतों को रात के समय पढ़ता है तो उस के लिए यह काफ़ी है। फ़तहुलबारी ९/९४ तथा मुस्लिम १/५५४)

١٠٢ - ((باسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعُهُ فَإِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَارْحَمْهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ))

१०२. तेरे ही नाम[1] से ऐ मेरे रब मैंने अपना पहलू (करवट) रखा और तेरे ही नाम से इसे उठाऊँगा। इसलिए अगर तू मेरी जान (प्राण) को रोक ले तो उस पर दया तथा कृपा कर और अगर उसे छोड़ दे तो तू उसकी सुरक्षा कर, जैसाकि तू अपने नेक बन्दों की सुरक्षा करता है। (बुख़ारी ११/१२६ तथा मुस्लिम ४/२०८४)

١٠٣- ((اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ خَلَقْتَ نَفْسِي وَأَنْتَ تَوَفَّاهَا لَكَ مَمَاتُـهَا وَمَحْيَاهَا إِنْ أَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا، وَإِنْ أَمَتَّهَا فَاغْفِرْ لَـهَا. اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ))

१०३. ऐ अल्लाह तूने ही मेरी जान (प्राण) पैदा की और तू ही उसे मृत्यु देगा, तेरे ही हाथ में उसको मारना और ज़िन्दा रखना है। अगर तू इसे ज़िन्दा रखे तो इस की सुरक्षा कर और अगर इसे मृत्यु दे

---

[1] जब तुम में से कोई व्यक्ति अपने बिस्तर से उठे और फिर दूसरी बार उसकी ओर आये तो उसे अपनी चादर के दामन को तीन बार झाड़े और बिस्मिल्लाह कहे, क्या पता उसके बाद उस पर क्या वस्तु आ गई हो और जब बिस्तर पर लेटे तो यह दुआ पढ़े ....)

तो इसे क्षमा कर दे। ऐ अल्लाह मैं तुझ से आफ़ियत का सवाल करता हूँ। (मुस्लिम ४/२०८३, अहमद के शब्द हैं २/७९)

١٠٤ - ((اَللّٰهُمَّ قِنِيْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ))

१०४. ऐ अल्लाह मुझे अपने अज़ाब से बचा, जिस दिन तू अपने बन्दों को उठायेगा। (अबू दाऊद के शब्द हैं ४/३११ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४३)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सोने का इरादा करते तो अपना दायाँ हाथ अपने रुख़सार (गाल) के नीचे रखते फिर तीन बार ऊपर लिखी गई दुआ पढ़ते।

١٠٥ - ((بِاسْمِكَ اَللّٰهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا))

१०५. ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम से मरता हूँ और ज़िन्दा होता हूँ। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ११/११३ तथा मुस्लिम ४/२०८३)

١٠٦ - ((سُبْحَانَ اللهِ، ३३ बार وَالْحَمْدُ للهِ، ३३ बार وَاللهُ أَكْبَرُ ३४ बार))

१०६. अल्लाह पाक है और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है और अल्लाह सब से बड़ा है।

[रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि अल्लाहु अन्हुमा) से फ़रमाया: क्या मैं तुम दोनों को वह चीज़ न बताऊँ जो तुम्हारे लिए नौकर (ख़ादिम) से बेहतर है।] जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो ३३ बार सुब्हानल्लाह कहो और ३३ बार अलहम्दुलिल्लाह कहो और ३४ बार अल्लाहु अकबर कहो यह तुम्हारे लिए नौकर से बेहतर है। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ७/७१, मुस्लिम ४/२०९१)

١٠٧ - ((اَللّهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ، وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى، وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالإِنْجِيْلِ، وَالْفُرْقَانِ، أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ. اَللّهُمَّ أَنْتَ الأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُوْنَكَ شَيْءٌ اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ))

१०७. ऐ अल्लाह! ऐ सातों आकाशों के प्रभु और अर्शे अज़ीम के रब! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब, दाने और गुठली को फाड़ने वाले, तौरात इंजील और फ़ुरक़ान उतारने वाले, मैं हर उस चीज़ की बुराई तथा शर से तेरी पनाह चाहता हूँ, जिस की पेशानी तू पकड़े हुए है। ऐ अल्लाह! तू ही अव्वल है, पस तुझ से पहले कोई चीज़ नहीं और तू ही आख़िर है, पस तेरे बाद कोई चीज़ नहीं। तू ही ज़ाहिर है पस तुझ से ऊपर कोई चीज़ नहीं, और तू ही बातिन है पस तुझ से छिपी कोई चीज़ नहीं। हमारा क़र्ज अदा कर दे और हमें मुहताजगी के बदले में ग़नी कर दे। (मुस्लिम ४/२०८४)

١٠٨ - ((اَلْحَمْدُ لله الَّذِيْ أَطْعَمَنَا، وَسقَانَا، وَكَفَانَا، وَآوَانَا، فَكَمْ مِمَّنْ لاَ كَافِيَ لَهُ وَلاَ مُؤْوِيَ))

१०८. सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया और हमें काफ़ी हो गया और हमें ठिकाना दिया, पस कितने ही लोग ऐसे हैं जिन्हें कोई किफ़ायत करने वाला नहीं न कोई ठिकाना देने वाला है। (मुस्लिम ४/२०८५)

١٠٩ - ((اللّٰهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرضِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيْكَه أَشْهَدُ أَن لاَ إِلٰهَ إِلاَّ أَنْتَ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ وأن اَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِيْ سُوْءاً أَوأَجُرَّهُ إِلَى مُسْلِمٍ))

१०९. ऐ अल्लाह, ऐ ग़ैब तथा हाज़िर को जानने वाले, आकाशों एवं धरती को पैदा करने वाले, हर चीज़ के पालनहार और मालिक! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, अपने नफ़्स के शर से और शैतान के शर एवं उस के साझा से और इस बात से कि मैं अपनी जान के विषय में दुरविचार करूँ या किसी अन्य मुस्लिम के बारे में दुरविचार करूँ। (अबू दाऊद ४/३१७ और देखिये सहीह त्रिमिज़ी ३/१४२)

١١٠ - ((يَقْرَأُ ﴿الم﴾ تَنْزِيْلَ السَّجْدَةِ وتَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ))

११०. आप ﷺ उस समय तक नहीं सोते थे जब तक कि आप ﴿الم تَنْزِيْلَ السَّجْدَةِ﴾ सूरतुस-सजद: और

وَتَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ न पढ़ लेते थे। (त्रिमिज़ी, नसाई और देखिए सहीहुल जामिअ ४/२५५)

١١١- ((اَللّٰهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَا مِنْكَ إِلاَّ إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ))

१११. [1]ऐ अल्लाह मैंने अपने नफ़्स (प्राण) को तेरे सुपुर्द कर दिया और अपना काम तेरे सुपुर्द कर दिया और अपना चेहरा तेरी ओर फेर लिया और अपनी पीठ तेरी ओर झुकाई, तेरी ओर रग़बत करते हुए और तुझ से डरते हुए, तेरे दर के सिवा न कोई पनाह की जगह है और न भाग कर जाने की। मैं ईमान लाया तेरी किताब पर जो तूने उतारी और तेरे उस नबी पर जो तूने भेजा। (बुख़ारी) फ़तहुल बारी के साथ ११/११३ तथा मुस्लिम ४/२०८१ आप ने

[1]जब तुम सोने चलो तो नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू कर लो फिर दायें करवट पर लेट कर यह दुआ पढ़ो।

इस दुआ को पढ़ने वाले के बारे में फ़रमाया: "अगर तुम्हारी मृत्यु हो जाये तो तुम्हारी मृत्यु फ़ितरते (इस्लाम) पर होगी |")

२९- रात को करवट बदलते समय की दुआ

हज़रत आईशा रज़ि अल्लाह अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को जब करवट बदलते तो यह दुआ पढ़ते थे :

١١٢- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ))

११२. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, जो अकेला तथा शक्तिशाली है | आकाशों और धरती तथा उनके बीच की सारी चीज़ों का रब जो बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत क्षमा करने वाला है | (इसे हाकिम ने रिवायत करके सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है | १/५४०, देखिए सहीहुल जामिअ ४/२१३)

३०- नींद में बेचैनी और घबराहट तथा वहशत (डर) की दुआ

١١٣ - ((أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ، وَشَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونَ))

११३. मैं अल्लाह के सम्पूर्ण कलिमात की पनाह चाहता हूँ, उसके क्रोध और उसकी सज़ा से, उसके बन्दों के शर से, शैतानों के चोकों से और इस बात से कि वे मेरे पास हाज़िर हों। (अबू दाऊद ४/१२ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१७१)

३१- कोई आदमी बुरा ख़्वाब (सपना) देखे तो क्या करे?

११४.(१) बायीं ओर तीन बार थूके। (मुस्लिम ४/१७७२)
(२) शैतान और अपने इस ख़्वाब की बुराई से तीन बार अल्लाह की पनाह माँगे। (मुस्लिम ४/१७७२ तथा १७७३)

(३) किसी को वह ख़्वाब (सपना) न सुनाये। (मुस्लिम ४/१७७२)

(४) जिस पहलू पर वह लेटा हो उसे बदल दे।
(मुस्लिम ४/१७७३)

११५. (५) यदि इच्छा हो तो उठ कर नमाज़ पढ़े।
(मुस्लिम ४/१७७३)

३२- कुनूते वित्र की दुआ

١١٦- ((اللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ، وَعَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ، وَتَوَلَّنِي فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ، وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ، وَقِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ، فَإِنَّكَ تَقْضِي وَلاَ يُقْضَى عَلَيْكَ، إِنَّهُ لاَ يَذِلُّ مَنْ وَالَيْتَ، (وَلاَ يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ)، تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ))

११३. ऐ अल्लाह तूने जिन लोगों को हिदायत दी है उन्हीं हिदायत पाने वाले लोगों में से मुझे भी कर दे और जिन लोगों को तूने आफ़ियत दी है उन्हीं के साथ मुझे भी आफ़ियत दे और जिन का तू वाली बना है उन्हीं के साथ-साथ मेरा भी वाली बन जा और तूने जो कुछ मुझे प्रदान किया है उस में मेरे

लिए बरकत दे, जो फ़ैसले तूने किए हैं उनकी बुराई से मुझे सुरक्षित रख, क्योंकि तू ही फ़ैसला करता है और तेरे विरूद्ध कोई भी फ़ैसला नहीं कर सकता, जिस का तू दोस्त बन जाये वह कभी रूस्वा नहीं हो सकता, और जिस का तू दुश्मन बन जाये उसे कोई सम्मान नहीं दे सकता। ऐ हमारे प्रभु! तू ही इज़्ज़त वाला और बुलन्द है। (सहीह त्रिमिज़ी १/१४४ और सहीह इब्ने माजा १/१९४ इरर्वावुल ग़लील २/१७१)

١١٧ - ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ، لاَ أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ، أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ))

११७. ऐ अल्लाह मैं तेरी नाराज़गी से भाग कर तेरी प्रसन्नता की ओर पनाह चाहता हूँ और तेरी सज़ा से तेरी क्षमा की पनाह चाहता हूँ, और तुझ से तेरी पनाह चाहता हूँ, मैं तेरी पूरी प्रशंसा बयान करने की शक्ति नहीं रखता, तू उस तरह है जिस तरह तूने ख़ुद अपनी प्रशंसा की है। (सहीह त्रिमिज़ी ३/१८०, सहीह इब्ने माजा १/१९४ और इर्वावुल ग़लील २/१७५)

١١٨ - ((اللَّهُمَّ إِيَّاكَ نَعْبُدُ، وَلَكَ نُصَلِّي وَنَسْجُدُ، وَإِلَيْكَ نَسْعَى وَنَحْفِدُ، نَرْجُوا رَحْمَتَكَ، وَنَخْشَى عَذَابَكَ، إِنَّ عَذَابَكَ بِالْكَافِرِينَ مُلْحَقٌ، اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَعِينُكَ، وَنَسْتَغْفِرُكَ، وَنُثْنِي عَلَيْكَ الْخَيْرَ، وَلَا نَكْفُرُكَ، وَنُؤْمِنُ بِكَ، وَنَخْضَعُ لَكَ، وَنَخْلَعُ مَنْ يَكْفُرُكَ))

११८. ऐ अल्लाह! हम तेरी ही पूजा करते हैं, तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ते और सजदा करते हैं, तेरी ओर ही कोशिश और जल्दी करते हैं, तेरी रहमत की आशा रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं, तेरा अज़ाब अवश्य काफ़िरों को मिलने वाला है। ऐ अल्लाह! हम तुझ से मदद माँगते हैं, तुझी से क्षमा माँगते हैं, तेरी अच्छी प्रशंसा करते हैं, तुझ से कुफ्र नहीं करते और तुझ पर ईमान रखते हैं, और तेरे सामने झुकते हैं और जो तुझ से कुफ्र करे हम उस से अपना सम्बन्ध समाप्त करते हैं।

(शैख़ अलबानी (रहि) अपनी किताब इर्वाउल ग़लील में फ़रमाते है कि इस की सनद सहीह है। २/१७०

और यह दुआ हज़रत उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) के क़ौल से साबित है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नहीं और बैहकी ने भी इसकी सनद को सहीह कहा है। २/२११)

३३– वित्र का सलाम फेरने के बाद की दुआ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वित्र में "सब्बिहिस्मा रब्बिकल आला" और "क़ुल या अय्योहल काफ़िरून" तथा "क़ुल हुवल्लाहु अहद" पढ़ते और जब सलाम फेरते तो तीन बार कहते:

١١٩ - ((سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ (رَبِّ الْمَلاَئِكَةِ وَالرُّوحِ)))

११९. पाक है बहुत पाकीज़गी वाला बादशाह, फ़रिश्तों औ जिब्रील का रब।

नोट: तीसरी बार यह दुआ ऊँची आवाज़ से पढ़ते और आवाज़ लम्बी करते। (नसाई ३/२४४, बेरेकिट के बीच के शब्द दारक़ुतनी के हैं, २/३१ सहीह सनद के साथ)

३४- ग़म (चिन्ता) और फ़िक्र से मुक्ति पाने की दुआ

١٢٠- ((اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ ابْنُ عَبْدِكَ ابْنُ أَمَتِكَ نَاصِيَتِي بِيَدِكَ، مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ، أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَداً مِنْ خَلْقِكَ أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرآنَ رَبِيْعَ قَلْبِي، وَنُوْرَ صَدْرِي وَجَلاَءَ حُزْنِي وَذَهَابَ هَمِّي))

१२०. ऐ अल्लाह मैं तेरा बन्दा हूँ, तेरे बन्दे और तेरी बन्दी का बेटा हूँ, मेरी पेशानी तेरे ही हाथ में है, तेरा आदेश मुझ में जारी है, मेरे बारे में तेरा फैसला न्यायपूर्ण है, मैं तुझ से तेरे हर उस ख़ास नाम के माध्यम से सवाल करता हूँ जो तूने ख़ुद अपना नाम रखा है या उसे अपनी किताब में नाज़िल किया है, या अपनी मख़लूक़ में से किसी को सिखाया है, या तूने उसे अपने इल्मे ग़ैब में महफ़ूज़ कर रखा है, यह

कि क़ुरआन को मेरे दिल की बहार और मेरे सीने का नूर और मेरे ग़म को दूर करने वला और मेरी चिन्ता को समाप्त करने वाला बना दे | (मुसनद अहमद १/३९१ शैख़ अलबानी (रहि) ने इस दुआ को सहीह कहा है |

١٢١ - ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزْنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ))

१२१. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ चिन्ता और ग़म से और आजिज़ हो जाने तथा सुस्ती व काहिली से और बुख़्ल (कंजूसी) तथा बुज़दिली से और क़र्ज़ (श्रृण) के चढ़ जाने से तथा लोगों (हाकिमों) के अत्याचार तथा आक्रमण से | (बुख़ारी ७/१५८ रसूलुल्लाह यह दुआ अधिक से अधिक किया करते थे, देखिए बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ ११/१७३)

३५- बेक़रारी तथा बेचैनी की दुआ (दुर्घटना के समय की दुआ)

١٢٢ - ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ

الْعَـرْشِ الْعَظِيْـمِ ، لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ السَّـمَاوَاتِ وَرَبُّ الأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ))

१२२. अल्लाह के सिवा कोई भी उपासना के योग्य नहीं, वह अज़मत वाला तथा बुर्दबार है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं जो विशाल अर्श का रब है। अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं जो आकाशों का रब और धरती का रब तथा अर्श करीम का रब है। (बुख़ारी ७/१५४ तथा मुस्लिम ४/२०९२)

١٢٣ - ((اللَّهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُوْ فَلاَ تَكِلْنِيْ إِلَـى نَفْسِـيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ وَأَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ))

१२३. ऐ अल्लाह मैं तेरी रहमत ही की आशा रखता हूँ, इस लिए तू मुझे पलक झपकने के बराबर भी मेरे नफ़्स (आत्मा) के हवाले न कर और मेरे लिए मेरे तमाम काम ठीक कर दे, तेरे सिवा कोई भी उपासना के योग्य नहीं। (अबू दाऊद ४/३२४, अहमद ५/४२ तथा शैख़ अलबानी (रहि) ने इसे हसन कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद ३/९५९)

١٢٤ - ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِيْنَ))

१२४. तेरे सिवा कोई पूजा के योग्य नहीं, तू पाक है, नि:संदेह मैं ज़ालिमों में से हूँ। (त्रिमिज़ी ५/५२९ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१६८ तथा हाकिम ने इसे सहीह कहा है, और इमाम ज़हबी ने पुष्टि की है। १/५०५)

١٢٥ - ((اللهُ، اللهُ رَبِّيْ لاَ أُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا))

१२५. अल्लाह, अल्लाह मेरा रब है, मैं उसके साथ किसी वस्तु को साझीदार नहीं करता। (अबू दाऊद २/८७ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३३५)

३६- दुश्मन तथा शासनाधिकारी से मुलाक़ात के समय की दुआ

١٢٦ - ((اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ))

१२६. ऐ अल्लाह हम तुझी को उन के मुक़ाबले में करते हैं और उनकी शरारतों से तेरी पनाह चाहते

हैं। (अबू दाऊद २/८९ हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने भी इस पर अपनी सहमित व्यक्त की है। २/१४२)

١٢٧ - ((اَللّٰهُمَّ أَنْتَ عَضُدِيْ، وَأَنْتَ نَصِيْرِي، بِكَ أَجُوْلُ وَبِكَ أَصُوْلُ وَبِكَ أُقَاتِلُ))

१२७. ऐ अल्लाह तू ही मेरे बाज़ुओं में शक्ति पैदा करने वाला है और तू ही मेरा सहायक है, तेरे निगरानी में ही घूमता फिरता हूँ और तेरा नाम ले कर मैं हमलावर होता हूँ और तेरी सहायता से ही मैं दुश्मनों से लड़ता हूँ। (अबू दाऊद ३/४२, त्रिमिज़ी ५/५७२ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८३)

١٢٨ - ((حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ))

१२८. हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वह उत्तम संरक्षक है। (बुख़ारी ५/१७२)

३७- शासक के अत्याचार से बचने की दुआ

١٢٩ -((اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ، وَرَبَّ الْعَرْشِ

الْعَظِيْمِ، كُنْ لِيْ جَاراً مِنْ فُلاَنِ بْنِ فُلاَنٍ وَأَحْزَابِهِ مِنْ خَلاَئِقِكَ، أَنْ يَفْرُطَ عَلَيَّ أَحَدٌ مِنْهُمْ أَوْ يَطْغَى، عَزَّ جَارُكَ، وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ))

१२९. ऐ अल्लाह ! सातो आसमानों के रब और विशाल अर्श के रब, मेरे लिए फ़लाँ फ़लाँ के विरूद्ध सहायक बन जा और उन सब के जत्थों के विरूद्ध जो तेरी सृष्टि में से हैं। इस बात से कि कोई मेरे ऊपर आक्रमण करे या अत्याचार करे, जिसकी तू सहायता करे वही विजयी होगा और तेरे लिए अधिक प्रशंसा है और तेरे सिवा कोई पूजनीय नहीं। (सहीह अद्बुल मुफ़रद, ५४५)

١٣٠ - ((اَللهُ أَكْبَرُ، اَللهُ أَعَزُّ مِنْ خَلْقِهِ جَمِيْعاً، اللهُ أَعَزُّ مِمَّا أَخَافُ وَأَحْذَرُ، أَعُوذُ بِاللهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ، الْمُمْسِكِ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ أَنْ يَقَعْنَ عَلَى الأَرْضِ إِلاَّ بِإِذْنِهِ، مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فُلاَنٍ، وَجُنُودِهِ وَأَتْبَاعِهِ وَأَشْيَاعِهِ، مِنَ الْجِنِّ وَالإِنْسِ، اَللَّهُمَّ كُنْ لِيْ جَاراً مِنْ شَرِّهِمْ، جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَعَزَّ جَارُكَ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَلاَ إِلَهَ غَيْرُكَ)) यह दुआ तीन बार पढ़े।

१३०. अल्लाह महान है, अल्लाह अपनी मख़लूक़ात में सब से सर्वश्रेष्ठ है, मैं जिस चीज़ से डरता और भयभीत हूँ अल्लाह उससे कहीं अधिक सर्वशक्तिमान है। मैं अल्लाह के पनाह में आता हूँ जिस के सिवा कोई भी पूजनीय (सच्चा माबूद) नहीं, जो सातों आकाशों को धरती पर गिरने से थामे हुए है परन्तु उसकी अनुमति से। तेरे फ़लाँ बन्दे की बुराई की वजह से और उसकी सेनाओं तथा जत्थों की बुराई और षड़यन्त्र के कारण जिन्नातों तथा इंसानों में से। ऐ अल्लाह! तू मेरे लिए उनके विरूद्ध सहायक बन जा, तेरे लिए अधिक प्रशंसा है और जिसका तू सहायक बना जाये वह कामयाब हो गया और तेरा नाम उच्च है और तेरे सिवा कोई भी पूजनीय नहीं। (शैख़ अलबानी ने उसे सहीहुल अद्बिल मुफ़रद में सहीह कहा है, ५४६)

३८- दुश्मन पर बद्दुआ

١٣١ - ((اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ، سَرِيعَ الْحِسَابِ، اهْزِمِ الأَحْزَابَ، اَللّٰهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ))

१३१. ऐ अल्लाह! ऐ किताब उतारने वाले, जल्दी हिसाब लेने वाले इन जत्थों को पराजित कर दे (अर्थात शिक़स्त (परास्त) दे दे) ऐ अल्लाह! इन्हें पराजित कर दे और इन्हें सख़्त झिंझोड़ दे। (मुस्लिम ३/१३६२)

३९- जब किसी क़ौम से डरता हो तो क्या कहे

١٣٢- ((اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيهِمْ بِمَا شِئْتَ))

१३२. ऐ अल्लाह! मुझे इन से काफ़ी हो जा जिस तरह तू चाहे। (मुस्लिम ४/२३००)

४०- जिसे अपने ईमान में शक होने लगे तो वह यह दुआ पढ़े

१३३. (१) अल्लाह की पनाह माँगे। (बुख़ारी ६/३३६ और मुस्लिम १/१२०)

(२) जिस चीज़ में शंका उत्पन्न हो रही है उस विषय में और अधिक सोच-विचार करना छोड़ दे।

(फ़तहुल बारी ६/३३६, मुस्लिम १/१२०)

(३) यह दुआ पढ़े :

١٣٤- ((آمَنْتُ بِاللهِ وَرُسُلِهِ))

१३४. मैं ईमान लाया अल्लाह और उसके रसूलों पर। (मुस्लिम १/११९,१२०)

(४) अल्लाह का यह फ़रमान पढ़े :

١٣٥- ((هُوَ الأَوَّلُ، وَالآخِرُ، وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلَيْمٌ))

१३५. वही आदि है वही अन्त है, वही प्रत्यक्ष है वही अप्रत्यक्ष है और वह हर चीज़ को जानने वाला है। (अबू दाऊद, ४/३२९ शैख़ अलबानी (रहि) ने इसे सहीह अबू दाऊद में हसन कहा है। ३/९६२)

४१- क़र्ज़ (ऋण) की अदायगी के लिए दुआ

١٣٦- ((اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلاَلِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ))

१३६- ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी हलाल चीज़ों को अपनी हराम चीज़ों के विरूद्ध प्रयाप्त कर दे और मुझे अपने फ़ज़्ल व करम (कृपा) के ज़रिया अपने सिवा सभी लोगों से ग़नी कर दे। (त्रिमिज़ी ५/५६०, देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८०)

١٣٧ - «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزْنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ»

१३७. ऐ अल्लाह मैं चिन्ता और ग़म से, आजिज़ी से, सुस्ती से, कंजूसी, बुज़दिली से, अपने ऊपर क़र्ज़ (श्रृण) चढ़ जाने से, लोगों के आक्रमण और अत्याचार से तेरी पनाह चाहता हूँ। (बुख़ारी ७/१५८)

४२- नमाज़ में या क़ुरआन पढ़ते समय उत्पन्न होने वाले वस्वसों से बचने की दुआ

١٣٨ - «أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ»

१३८. मैं अल्लाह की शैतान मर्दूद से शरण चाहता हूँ।

यह पढ़ कर तीन बार बायीं ओर थूके (हज़रत

उस्मान बिन अबुल आस (रज़ि अल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! शैतान मेरे तथा मेरी नमाज़ और क़ेरात के बीच रूकावट बन जाता है। इस प्रकार कि वह नमाज़ की तादाद और क़ेरात मुझ पर ख़लत-मलत कर देता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि वह एक शैतान है जिसका नाम ख़िन्ज़ब है, जब तुम उसे महसूस करो तो तीन बार उस से अल्लाह की पनाह माँगो और बायीं तरफ़ तीन बार थुतकार दो।) (मुस्लिम ४/१७२९ इस रिवायत में उस्मान (रज़ि अल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआला ने उसे मुझ से दूर कर दिया।)

४३- उस आदमी की दुआ जिस पर कोई काम मुश्किल तथा कठिन हो जाये

١٣٩ - ((اللَّهُمَّ لاَ سَهْلَ إِلاَّ مَا جَعَلْتَهُ سَهْلاً وَأَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ إِذَا شِئْتَ سَهْلاً))

१३९. ऐ अल्लाह कोई काम आसान नहीं किन्तु जिसे तू आसान (सरल) कर दे और तू जब चाहता है तो कठिन को आसान कर देता है। (सहीह इब्ने हिब्बान हदीस नं॰ २४२७)

४४- गुनाह कर बैठे तो कौन सी दुआ पढ़े और क्या करे?

١٤٠ - ((مَا مِنْ عَبْدٍ يُذْنِبُ ذَنْباً فَيُحْسِنُ الطُّهُوْرَ، ثُمَّ يَقُوْمُ فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ يَسْتَغْفِرُ اللهَ إِلاَّ غَفَرَ اللهُ لَهُ))

१४०. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब किसी बन्दे से गुनाह सरज़द हो जाये फिर अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर दो रकअत नफ़ली नमाज़ पढ़े, फिर अल्लाह से बख़्शिश की दुआ माँगे तो अल्लाह तआला ऐसे बन्दे को बख़्श देते हैं। (अबू दाऊद २/८६, त्रिमिज़ी २/२५७ और देखिए सहीहुल १/२८३)

४५- वह दुआयें जो शैतान और उसके वस्वसों को दूर करती हैं

١٤١ - ((الاسْتِعَاذَةُ بِاللهِ مِنْهُ))

१४१. (१) शैतान से अल्लाह की पनाह माँगना। (अबू दाऊद १/२०६ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी १/७७ तथा देखिए सूरा अल-मोमिनून: ९८,९९)

١٤٢ - ((الأَذَانُ))

१४२. (२) अज़ान। (मुस्लिम १/२९१ और बुख़ारी १/१५१)

١٤٣ - ((الأذكار وقراءة القرآن))

१४३. (३) मसनून दुआयें और क़ुरआन की तिलावत।

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अपने घरों को क़ब्रें न बनाओ, शैतान उस घर से भागता है जिस में सूरा बक़रा पढ़ी जाये। (मुस्लिम १/५३९) और सुबह व शाम तथा सोने जागने की दुआयें घर में दाख़िल होने और निकलने

की दुआयें, मस्जिद में दाख़िल होने और निकलने की दुआयें भी शैतान को भगाती हैं। इसी प्रकार दूसरी मसनून दुआयें जैसे सोते समय आयतल कुर्सी पढ़ना, सूरा बक़रा की आख़िरी दो आयतें पढ़ना और जो आदमी सौ बार पढ़े ((लाइलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहू लहुल मुल्को व लहुल हम्दु वहुवा अला कुल्ले शैईन क़दीर)) तो पूरा दिन शैतान से महफ़ूज़ रहेगा, इसी प्रकार अज़ान शैतान को भगाती है।"

४६- जब कोई ऐसा वाक़िआ हो जाये जो उस की इच्छा और मर्ज़ी के विरूद्ध हो या कोई काम उसकी ताक़त, शक्ति और क्षमता से बाहर हो जाये तो क्या कहे ?

١٤٤ - ((قَدَّرَ اللهُ وَمَا شَاءَ فَعَلَ))

१४४. अल्लाह ने जो मुक़द्दर किया और उसने जो चाहा किया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ताक़तवर मोमिन अल्लाह के पास कमज़ोर मोमिन

से बेहतर और प्यारा है और दोनों में भलाई है जो काम तुम्हें नफ़ा दे उसकी इच्छा और अभिलाषा करो और अल्लाह से सहायता माँगो और बेबस होकर न बैठो और अगर तुम्हें कोई नुकसान पहुँच जाये तो यह मत कहो कि "अगर मैं इस तरह करता तो यह हो जाता" बल्कि यूँ कहो «قَدَّرَ اللهُ وَمَا شَاءَ فَعَلَ» अल्लाह ने जो तक़्दीर में लिखा था वह हुआ और अल्लाह ने जो चाहा किया। क्योंकि (अगर) का शब्द शैतान का काम शुरू कर देता है (मुस्लिम ४/२०५२)

(२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला आजिज़ रह जाने और हिम्मत हार देने पर मलामत करता है लेकिन तुम दानाई तथा होशियारी का दामन पकड़े रहो और जब कोई काम तुम्हारी क्षमता से बाहर हो जाये तो कहो «حَسْبِيَ اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ» मेरे लिए तो केवल अल्लाह ही काफ़ी है और वह उत्तम संरक्षक है। (अबू दाऊद)

४७– जिसके यहाँ कोई संतान (औलाद) पैदा हो उसे किस प्रकार मुबारकबाद (दुआ) दी जाये और जिसे मुबारकबादी दी जा रही हो वह मुबारकबाद देने वाले के लिए क्या कहे?

١٤٥ - ((بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي الْمَوْهُوبِ لَكَ، وَشَكَرْتَ الْوَاهِبَ، وَبَلَغَ أَشُدَّهُ، وَرُزِقْتَ بِرَّهُ))

१४५. अल्लाह ने तुझे जो संतान प्रदान किया है उस में बरकत दे, औलाद देने वाले अल्लाह का शुक्र अदा कर, अल्लाह उसे जवान करे और उस के माध्यम से तुझे लाभ पहुँचाये।

जिसे मुबारकबादी दी जा रही हो वह मुबारकबाद देने वाले के लिए इस प्रकार दुआ करे।

((بَارَكَ اللهُ لَكَ وبارَكَ عَلَيْكَ، وَجَزَاكَ اللهُ خَيْراً، وَرَزَقَكَ اللهُ مِثْلَهُ، وأجزل ثَوَابَكَ))

अल्लाह तेरे लिए और तेरे ऊपर बरकत दे और अल्लाह तुझे उत्तम बदला दे और जैसे अल्लाह ने

मुझे औलाद से नवाज़ा है तुझे भी नवाज़े और तुझे बहुत अधिक पुण्य दे। (देखिए नववी की अज़कार पृष्ठ संख्या ३४९)

४८- बच्चों को कौन से कलिमात के साथ पनाह दी जाये

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि अल्लाहु अन्हुमा) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हसन और हुसैन को इन कलिमात के द्वारा पनाह दिया करते थे :

١٤٦- ((أُعِيْذُ كُمَا بِكَلِمَـاتِ اللهِ التَّامَّـةِ مِـنْ كُـلِّ شَيْطَـانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لاَمَّةٍ))

१४६. मैं तुम दोनों को हर शैतान और ज़हरीले जानवर से और हर लग जाने वाली नज़र से अल्लाह के मुकम्मल कलिमात के साथ पनाह देता हूँ। (बुख़ारी ४/११९)

४९-बीमार पुर्सी के समय मरीज़ के लिए दुआ

(१) (रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी बीमार के पास बीमार

पुर्सी के लिए जाते तो उसे फ़रमाते ।)

١٤٧ - ((لاَ بَأس طَهُوْرٌ إِنْ شَاءَ اللهُ))

१४७. कोई हर्ज नहीं यह बीमारी अल्लाह ने चाहा तो (गुनाहों से) पाक (पवित्र) करने वाली है । (बुख़ारी १०/११८)

(२) कोई मुसलमान ऐसे मरीज़ की बीमार पुर्सी करे जिसकी मौत का समय न आ पहुँचा हो और सात बार यह दुआ पढ़े तो अल्लाह के हुक्म से उसे शिफ़ा मिल जाती है ।

١٤٨ - ((أَسْأَلُ اللهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ أَنْ يَشْفِيَكَ))

१४८. मैं बड़ी अज़मत वाले अल्लाह से जो अर्शे अज़ीम का रब है सवाल करता हूँ कि वह तुझे रोग मुक्ति दे । (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/२१० और सहीहुल जामिअ ५/१८०)

५०- बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत

١٤٩ - قال ﷺ ((إِذَا عَادَ الرجُلُ أَخَاهُ الْمسلِمَ مَشَى فِي

خِرَافَةِ الجَنَّةِ حَتَّى يَجلِسَ فَإِذَا جَلَسَ غَمَرَتْهُ الرَّحْمَةُ، فَإِنْ كَانَ غُدْوَةً صَلَّى عَلَيهِ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ حَتَّى يُمْسَي، وَإِنْ كَانَ مَسَاءً صَلَّى عَلَيْهِ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ حَتَّى يُصْبِحَ))

१४९. हज़रत अली (रज़ि अल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना कि "आदमी जब अपने मुस्लिम भाई की बीमार पुर्सी के लिए जाता है तो समझ लो कि वह फलों तथा मेवों वाली स्वर्ग में चल रहा है यहाँ तक कि वह बैठ जाये, और जब वह वहाँ मरीज़ के पास पहुँच कर बैठता है तो उसे अल्लाह की रहमत ढाँप लेती है, अगर सुबह के समय गया हो तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उस के लिए दुआ करते रहते हैं और अगर शाम के समय गया हो तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सुबह तक दुआ करते रहते हैं। (त्रिमिज़ी, इब्ने माजा, अहमद और देखिए सहीह इब्ने माजा १/२४४, सहीह त्रिमिज़ी १/२८६ तथा शैख़ अहमद शाकिर ने भी इसे सहीह कहा है।)

५१- उस रोगी की दुआ जो अपने जीवन से निराश हो चुका हो

١٥٠- ((اَللّـهُمَّ اغْفِـرْلِـيْ وَارحَمْنِـيْ وَأَلْحِقْنِـيْ بِـالرَّفِيْقِ الأَعْلَى))

१५०. ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे, मुझ पर दया कर और मुझे रफ़ीक़ आला के साथ मिला दे। (बुख़ारी ७/१० मुस्लिम ४/१८९३)

हज़रत आईशा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु के समय अपने दोनों हाथों को पानी में डाल कर मुँह पर फेरते थे और फ़रमाते थे :

١٥١- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ إِنَّ لِلْمَوْتِ لَسَكَرَاتٍ))

१५१. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, नि:संदेह मौत के लिए सख़्तियाँ हैं। (फ़तहुल बारी ८/१४४)

١٥٢- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ، لاَ إِلَهَ

إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ لَـهُ الْمُلْـكُ وَلَـهُ الْحَمْدُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ))

१५२. अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं, और अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई भी उपासना के योग्य नहीं, वह अकेला है, अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं, उसका कोई साझी नहीं, अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं, उसी के लिए राज्य है, और उसी के लिए हर प्रकार की प्रशंसा है, अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं और न बचने की ताक़त है और न कुछ करने की मगर अल्लाह की मदद से। (त्रिमिज़ी, इब्ने माजा शैख़ अलबानी (रहि) ने इसे सहीह कहा है देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५२ और सहीह इब्ने माजा २/३१७)

५२- जो व्यक्ति मरने के क़रीब हो उसे यह कलिमा पढ़ाया जाये

١٥٣- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ))

१५३. जिसका आख़िरी कलाम "ला इलाहा इल्लल्लाह" होगा वह जन्नत में दाख़िल होगा। (अबू दाऊद ३/१९० और देखिए सहीहुल जामिअ ५/४३२)

५३–जिसे कोई मुसीबत पहुँचे वह यह दुआ पढ़े

١٥٤ - ((إِنَّا لله وَ إِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ أْجُرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِـيْ وَأَخْلِفْ لِيْ خَيْراً مِنْهَا))

१५४. नि:संदेह हम अल्लाह ही के अधीन हैं और नि:संदेह उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मुझे मेरी मुसीबत में सवाब दे और मुझे इस के बदले में इस से बेहतर चीज़ प्रदान कर। (मुस्लिम २/६३२)

५४– मृतक की आँखें बन्द करते समय की दुआ

١٥٥ - ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِفُلاَنٍ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِـيْ الْمَـهْدِيِّيْنَ وَاخْلُفْهُ فِيْ عَقِبِهِ فِيْ الْغَابِرِيْنَ وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهُ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ وَافْسَحْ لَهُ فِيْ قَبْرِهِ وَنَوِّرْ لَهُ فِيْهِ))

१५५. ऐ अल्लाह फ़लाँ को (नाम लेकर कहे) बख़्श दे और हिदायत पाने वालों में इसका दर्जा (पद) बुलन्द कर और इस के पीछे रहने वालों में तू इसका जानशीन (प्रतिनिधि) बन जा। और ऐ रब्बुल आलमीन! हमें और इसे बख़्श दे और इस के लिए इसकी क़ब्र को कुशादा कर दे और इस की क़ब्र में रौशनी कर दे। (मुस्लिम २/६३४)

५५- नमाज़े जनाज़ा की दुआ

١٥٦ - ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، وَعَافِهِ، وَاعْفُ عَنْهُ وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ، وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ، وَاغْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ، وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ، وَأَبْدِلْهُ دَاراً خَيْراً مِنْ دَارِهِ وَأَهْلاً خَيْراً مِنْ أَهْلِهِ وَزَوْجاً خَيْراً مِنْ زَوْجِهِ، وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ، وَأَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ "وَعَذَابِ النَّارِ"))

१५६. ऐ अल्लाह इसको बख़्श दे और इस पर दया कर, और इसको आफ़ियत दे और इसको माफ़ कर दे, और इसकी मेहमानी इज़्ज़त के साथ कर। और इसकी क़ब्र को विस्तृत कर दे और इसके गुनाह को

जल, बर्फ और ओले से धुल दे। इसको गुनाहों से इस तरह साफ़ कर दे जैसे सफ़ेद कपड़ा मैल से साफ़ किया जाता है, और इसके घर से अच्छा घर बदल दे, और इस के घर वालों से अच्छे घर वाले बदल दे, और इस के जोड़े से अच्छा जोड़ा दे, और इसको स्वर्ग में दाख़िल (प्रवेश) फ़रमा और इसको क़ब्र और नरक के अज़ाब से बचा ले। (मुस्लिम २/६६३)

١٥٧ - ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنا، وَمَيِّتِنَـا، وَشَاهِدِنَـا، وَغَائِبِنـا، وَصَغِيْرِنَـا وَكَبِيْرِنَـا، وَذَكَرِنَـا وَأُنْثَانَـا. اَللّٰهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَـهُ مِنَّـا فَأَحْيِهِ عَلَى الإِسْلاَمِ وَمَـنْ تَوَفَّيْتَـهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الإِيْمَـانِ، اَللّٰهُمَّ لاَ تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ "وَلاَ تُضِلَّنَا بَعْدَهُ"))

१५७. ऐ अल्लाह हमारे ज़िन्दों और मुर्दों को बख़्श दे, और हाज़िरों और ग़ायबों को और छोटों और बड़ों को, और मर्दों तथा औरतों को। ऐ अल्लाह जिसको तू ज़िन्दा रखे उसको इस्लाम पर ज़िन्दा रख, और हम में से जिसको उठा ले (मौत दे) उसको ईमान पर उठा। ऐ अल्लाह इसके बदले से हम को महरूम

न रख और इस के बाद हम को गुमराह न कर। (इब्ने माजा १/४८०, अहमद २/२६८ और देखिए सहीह इब्ने माजा १/२५१)

١٥٨ - ((اَللّٰهُمَّ إِنَّ فُلانَ بْنَ فُلانٍ فِي ذِمَّتِكَ، وَحَبْلِ جِوَارِكَ، فَقِهِ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ، وَأَنْتَ أَهْلُ الْوَفَاءِ وَالْحَقِّ. فَاغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ))

१५८. ऐ अल्लाह फ़लाँ बिन फ़लाँ तेरे ज़िम्मे और तेरी शरण में है। इसलिए तू इसे क़ब्र की आज़माईश (परीक्षा) और नरक के अज़ाब से बचा, तू वफ़ा और हक़ वाला है, इसलिए इसे बख़्श दे और इस पर दया कर। नि:संदेह तू ही अति क्षमाशील एवं अति कृपालु है। (इब्ने माजा और देखिए सहीह इब्ने माजा १/२५१ और अबू दाऊद ३/२११)

١٥٩ - ((اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ وَابْنُ أَمَتِكَ احْتَاجَ إِلَى رَحْمَتِكَ، وَأَنْتَ غَنِيٌّ عَنْ عَذَابِهِ إِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِي حَسَنَاتِهِ وَإِنْ كَانَ مُسِيْئاً فَتَجَاوَزْ عَنْهُ))

१५९. ऐ अल्लाह यह तेरा बन्दा और तेरी बन्दी का बेटा तेरी रहमत का मुहताज है और तू इसको अज़ाब देने से ग़नी है, अगर नेकी करने वाला था तो इस की नेकियों में वृद्धि कर और अगर बुराई करने वाला था तो तू इस से क्षमा (माफ़) फ़रमा। (हाकिम ने इसे रिवायत किया और सहीह कहा है, इमाम ज़हबी ने भी सहमति व्यक्त की है, १/३५९ और देखिए शैख़ अलबानी (रहि) की किताब अहकामुल जनायेज़ पृष्ठ १२५)

५६-बच्चे की नमाज़े जनाज़ा के समय की दुआ

١٦٠ - ((اَللّٰهُمَّ أَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ))

१६०. ऐ अल्लाह इसे क़ब्र के अज़ाब से बचा। (रक्षा कर) (सईद बिन मुसैइब से रिवायत है : कहते हैं कि मैंने अबु हुरैरह के पीछे एक ऐसे बच्चे की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी जिसने कभी भी पाप न किया था तो मैंने उन्हें इन शब्दों में दुआ करते सुना। मुवत्ता १/२८८ इब्ने अबी शैबा ३/२१७ और इसकी सनद को शोऐब अरनाउत ने सहीह कहा है, देखिए शरहुस-

सुन्नह ५/३५७)

और यदि यह कहे तो बेहतर है :

اَللَّهُمَّ اجْعَلْهُ فَرَطاً وَذُخْراً لِوَالِدَيْهِ، وَشَفِيْعاً مُجَاباً. اَللَّهُمَّ ثَقِّلْ بِهِ مَوَازِيْنَهُمَا وَأَعْظِمْ بِهِ أُجُوْرَهُمَا، وَأَلْحِقْهُ بِصَالِحِ الْمُؤْمِنِيْنَ، وَاجْعَلْهُ فِيْ كَفَالَةِ إِبْرَاهِيمَ، وَقِهِ بِرَحْمَتِكَ عَذَابَ الْجَحِيْمِ، وَأَبْدِلْهُ دَاراً خَيْراً مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلاً خَيْراً مِنْ أَهْلِهِ، اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لأَسْلاَفِنَا، وَأَفْرَاطِنَا، وَمَنْ سَبَقَنَا بِالإِيْمَانِ))

ऐ अल्लाह इसे इस के माँ बाप के लिए पहले जाकर मेहमानी की तैयारी करने वला और ज़ख़ीरा बना दे और ऐसा सिफ़ारिशी बना जिसकी सिफ़ारिश क़ुबूल हो । ए अल्लाह! इस के साथ इसके माँ-बाप दोनों के तराज़ू को भारी कर दे और इसके माध्यम से उन दोनों के सवाब को बढ़ा दे और इसे नेक मोमिनों के साथ मिला दे, और इसे इब्राहीम की क़िफ़ालत में कर दे और अपनी रहमत से इसे नरक के अज़ाब से बचा । और इसके घर से अच्छा घर बदल दे और इसके घर वालों से अच्छे घर वाले बदल दे । ऐ अल्लाह! हमारे असलाफ़ और उन भाईयों को भी

क्षमा कर दे जो हम से पूर्व ईमान ला चुके है। (देखिए शैख़ बिन बाज़ (रहि०) की किताब "अद्दुरूसुल मुहिम्मा लिआम्मतिल उम्मा" पृष्ठ १५)

١٦١- ((اَللّٰهُمَّ اجْعَلَهُ لَنَا فَرَطاً،وَسَلَفاً، وَأَجْراً))

१६१. ऐ अल्लाह इसे हमारे लिए पहले से जाकर मेहमानी के लिए तैयारी करने वाला और पेशरव तथा सवाब का ज़रिया बना दे। (बग़वी की किताब शरहुस्सुन्ना ५/३५७ यह दुआ केवल हज़रत हसन बसरी ताबई (रहि०) से साबित है कि वह बच्चे की नमाज़ जनाज़ा में सूरतुल फ़ातिहा पढ़ते थे और यह दुआ कहते थे। इमाम बग़वी फ़रमाते हैं कि इमाम बुख़ारी ने इसे मोअल्लक बयान किया है। २/११३)

५७- ताज़ियत (मृतक के घर वालों को तसल्ली देना) की दुआ

١٦٢- ((إِنَّ لِلّٰهِ مَا أَخَذَ، وَلَهُ مَا أَعْطَى وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُسَمًّى..... فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ))

१६२. अल्लाह ही का है जो उसने ले लिया और उसी

का है जो उसने प्रदान किया और उसके पास हर चीज़ के लिए एक निश्चित समय नियुक्त है, इसलिए आप लोग सब्र एवं धैर्य से काम लो और सवाब की नीयत रखो। (बुख़ारी २/८०, मुस्लिम २/६३६)

और यदि इस प्रकार कहे तो अच्छा है :

((أَعْظَمَ اللهُ أَجْرَكَ، وَأَحْسَنَ عَزَاءَكَ وَغفَرَ لِمَيِّتِكَ))

अल्लाह तआला आप लोगों को अधिक तथा विशाल सवाब दे और आप लोगों को अपनी ओर से अच्छी तसल्ली, संतुष्टि तथा धैर्य प्रदान करे और आप लोगों के मृतक को क्षमा कर दे। (इमाम नववी की किताब अल-अज़कार पृष्ठ १२६)

५८- मय्यत को क़ब्र में दाख़िल करते समय की दुआ

١٦٣ - ((بِسْمِ اللهِ وَعَلَى سُنَّةِ رَسُوْلِ اللهِ))

१६३. अल्लाह के नाम से और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार तुम्हें क़ब्र में दाख़िल कर रहा हूँ। (अबू दाऊद ३/३१४, सनद

सहीह है, मुसनद अहमद के शब्द यह हैं : (بِسْمِ اللهِ وَعَلَى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللهِ) और इस की सनद भी सहीह है।)

५९- मय्यत को दफ़न करने के बाद की दुआ

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मुर्दे को दफ़न करने से फ़ारिग़ होते तो उसकी क़ब्र के पास खड़े होते और फ़रमाते : "अपने भाई के लिए अल्लाह से बख़शिश माँगो और इसके लिए साबित कदम रहने की दुआ करो क्योंकि अब इससे सवाल किया जायेगा। (अबू दाऊद ३/३१५ और इमाम हाकिम ने इसे रिवायत करके सहीह कहा है और इमाम ज़हबी ने इस पर सहमति व्यक्त की है। १/३७०)

١٦٤ - ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُ اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْهُ))

१६४. ऐ अल्लाह इसे क्षमा कर दे, ऐ अल्लाह इसे साबित क़दम रख।

६०- क़ब्रों की ज़ियारत की दुआ

١٦٥ - ((السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

وَالْمُسْلِمِيْنَ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللهُ بِكُمْ لاَحِقُوْنَ [وَيَرْحَمُ اللهُ الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنَّا وَالْمُسْتَأْخِرِيْنَ] أَسْأَلُ اللهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ))

१६५. ऐ इस घर वाले (क़ब्र तथा बर्ज़ख़ी घर वाले) मोमिनों और मुसलमानों! तुम पर सलाम हो और हम भी अगर अलाह ने चाहा तो तुम से मिलने वाले हैं। [और हमारे अगलों और पिछलों पर अल्लाह की रहमत हो] मैं अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह से आफियत का सवाल करता हूँ। (मुस्लिम २/६७१ और इब्ने माजा के शब्द हैं।१/४९४)

६१- हवा चलते समय की दुआ

١٦٦ - ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا, وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا))

१६६. ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस की भलाई का सवाल करता हूँ और मैं इसकी बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ। (अबू दाऊद ४/३२६, इब्ने माजा २/१२२८ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३०५)

١٦٧ - ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا, وَخَيْرَ مَا فِيْهَا، وَخَيْرَ مَا

أُرْسِلتْ بِهِ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ))

१६७. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इसकी भलाई का और उस चीज़ की भलाई का जो इस में है और उस चीज़ की भलाई का जिसके साथ यह भेजी गई है और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इसकी बुराई से और उस चीज़ की बुराई से जो इस में है और उस चीज़ की बुराई से जिस के साथ यह भेजी गई है। (मुस्लिम २/६१६, बुख़ारी ४/७६)

६२- बादल गरजते समय पढ़ी जाने वाली दुआ

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) जब बादल की गरज सुनते तो बातें करनी छोड़ देते और यह दुआ पढ़ने लगते :

١٦٨ - ((سُبْحَانَ الَّذِي يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلاَئِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ))

१६८. पाक है वह ज़ात बादल की गरज जिसकी तस्बीह बयान करती है उसकी प्रशंसा के साथ और फ़रिश्ते भी उस के भय से उसकी तस्बीह पढ़ते हैं। (मोवत्ता २/९९२, शैख़ अलबानी (रहि॰) फ़रमाते हैं कि सहाबी से इस दुआ की सनद सहीह है।)

६३- वर्षा माँगने की कुछ दुआयें

١٦٩ - ((اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا غَيْثًا مُغِيْثاً مَرِيْئاً مَرِيْعاً، نَافِعاً غَيْرَ ضَارٍّ، عَاجِلاً غَيْرَ آجِلٍ))

१६९. ऐ अल्लाह हमें वर्षा प्रदान कर, मदद करने वाली, खुशगवार, सरसब्ज़ करने वाली, लाभ पहुँचाने वाली, हानि न देने वाली, जल्दी आने वाली हो न कि देर करने वाली। (अबू दाऊद १/३०३, शैख़ अलबानी ने इसकी सनद को सहीह कहा है १/२१६)

١٧٠ - ((اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا، اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا، اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا))

१७०. ऐ अल्लाह हमें वर्षा दे, ऐ अल्लाह हमें वर्षा दे, ऐ अल्लाह हमें वर्षा दे। (बुख़ारी १/२२४, मुस्लिम २/६१३)

١٧١ - ((اَللّٰهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ، وَبَهَائِمَكَ، وَانْشُرْ رَحْمَتَكَ وَأَحْيِي بَلَدَكَ الْمَيِّتَ))

१७१. ऐ अल्लाह अपने बन्दों और अपने जानवरों को पानी पिला और अपनी रहमत को फैला दे और अपने मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दे। (अबू दाऊद १/३०५ और शैख़ अलबानी ने इसे हसन कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद १/२१८)

६४- वर्षा उतरते समय की दुआ

١٧٢ - ((اَللّٰهُمَّ صَيِّباً نَافِعاً))

१७२. ऐ अल्लाह इसे नफ़ा देने वाली वर्षा बना दे। (बुख़ारी फ़तहुल बारी के साथ २/५१८)

६५- वर्षा समाप्त होने के बाद की दुआ

١٧٣ - ((مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللهِ وَرَحْمَتِهِ))

१७३. हम पर अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत से वर्षा हुई। (बुख़ारी १/२०५, मुस्लिम १/८३)

६६- वर्षा रुकवाने के लिए दुआ

١٧٤ - ((اَللّٰـهُمَّ حَوَالَيْنَـا وَلاَ عَلَيْنَـا اَللّٰـهُمَّ عَلَـى الآكَـامِ وَالظِّرَابِ، وَبُطُوْنِ الأَوْدِيَةِ، وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ))

१७४. ऐ अल्लाह हमारे आस-पास वर्षा बरसा और हम पर न बरसा। ऐ अल्लाह टीलों और पहाड़ियों पर और वादियों की निचली जगहों में और पेड़ पौधे उगने की जगहों में (अर्थात जंगलों में) वर्षा बरसा। (बुख़ारी १/२२४, मुस्लिम २/६१४)

६७- नया चाँद देखते समय की दुआ

١٧٥ - ((اللهُ أَكْبَر، اَللّٰـهُمَّ أَهِلَّـهُ عَلَيْنَـا بِـالأَمْنِ، وَالإِيْمَـانِ وَالسَّلاَمَةِ، وَالإِسْـلاَمِ، وَالتَّوْفِيْـقِ لِمَـا تُحِـبُّ وَتَرْضَـى، رَبُّنَـا وَرَبُّكَ اللهُ))

१७५. अल्लाह सब से बड़ा है, ऐ अल्लाह तू इसे हम पर प्रकट कर अमन, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ तथा उस चीज़ की तौफ़ीक़ के साथ जिस से

ऐ हमारे रब! तू मुहब्बत करता है और पसन्द करता है। (ऐ चाँद) हमारा रब और तेरा रब अल्लाह है। (त्रिमिज़ी ५/५०४, दारमी १/३३६ शब्द दारमी के हैं और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५७)

६८- रोज़ा खोलते समय की दुआ

١٧٦- ((ذَهَبَ الظَّمَأُ، وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ، وَثَبَتَ الأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللهُ))

१७६. प्यास समाप्त हो गई और रगें तर हो गईं और यदि अल्लाह ने चाहा तो अज्र (पुण्य) साबित हो गया। (अबू दाऊद २/३०६ और देखिए सहीहुल जामिअ ४/२०९)

(अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रज़ि अल्लाहु अन्हुमा) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: रोज़ादार के लिए रोज़ा खोलते समय एक दुआ है जो रद्द नहीं की जाती, इब्ने अबी मुलैका कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (रज़ि अल्लाहु अन्हुमा) रोज़ा खोलते समय

यह दुआ पढ़ते थे :

١٧٧ - ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ أَنْ تَغْفِرَ لِيْ))

१७७. ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी उस रहमत के माध्यम से सवाल करता हूँ जो प्रत्येक वस्तु पर छाई हुई है कि तू मुझे क्षमा कर दे। (इब्ने माजा १/५५७ और हाफ़िज़ ने अल-अज़कार की तख़रीज में इसे हसन कहा है, देखिए अज़कार की शरह ४/३४२)

६९- खाना खाने से पहले की दुआ

١٧٨ - ((إِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ طَعَاماً فَلْيَقُل: بِسْمِ اللهِ، فَإِنْ نَسِيَ فِي أَوَّلِهِ فَلْيَقُل: بِسْمِ اللهِ فِيْ أَوَّلِهِ وَآخِرِهِ))

१७८. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब तुम में से कोई खाना खाये तो पढ़े बिस्मिल्लाह 'अल्लाह के नाम से खाता हूँ' और अगर शुरू में भूल जाये तो कहे : "बिस्मिल्लाह फ़ी अव्वलिही व आख़िरही" अल्लाह के नाम से खाता हूँ

इसके शुरू में और इसके आख़िर में। (अबू दाऊद ३/३४७, त्रिमिज़ी ४/२८८ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/१६७)

(२) जिसे अल्लाह खाना खिलाये वह यह दुआ पढ़े :

١٧٩ - ((اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْراً مِنْهُ))

१७९. ऐ अल्लाह हमारे लिए इसमें बरकत दे और हमें इस से बेहतर खिला।

और जिसे अल्लाह दूध पिलाये वह यह दुआ पढ़े :

((اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ))

ऐ अल्लाह हमारे लिए इस में बरकत प्रदान कर और हमें अधिक दूध प्रदान कर (पिला)। (त्रिमिज़ी ५/५०६ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५८)

७०- खाने से फ़ारिग़ होने के बाद की दुआ

١٨٠ - ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ أَطْعَمَنِيْ هَذَا، وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّيْ وَلاَ قُوَّةٍ))

१८०. प्रत्येक प्रकार की प्रशंसायें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे यह खाना खिलाया और मेरी किसी भी कोशिश और ताक़त के बिना मुझे यह खाना दिया। (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५९)

١٨١ - ((اَلْحَمْدُ لله حَمْداً كَثِيْراً طَيِّباً مُبَارَكاً فِيْهِ غَيْرَ (مَكْفِيٍّ وَلاَ) مُوَدَّعٍ وَلاَ مُسْتَغْنَىً عَنْهُ رَبَّنَا))

१८१. प्रत्येक प्रकार की प्रशंसायें अल्लाह ही के लिए हैं, बहुत अधिक प्रशंसा, पवित्रा प्रशंसा जिस में बरकत की गई है, जिसे न काफ़ी समझा गया है, न छोड़ा गया है और न उस से बेपरवाही की गई है ऐ हमारे रब। (बुख़ारी ६/२१४, त्रिमिज़ी ५/५०७ और यह इसी के शब्द हैं)

७१- मेहमान की दुआ खाना खिलाने वाले मेज़बान के लिए

١٨٢ - ((اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ، وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ))

१८२. ऐ अल्लाह तूने इन्हें जो कुछ दिया है उस में इन के लिए बरकत फ़रमा और इन्हें क्षमा कर दे और इन पर दया कर। (मुस्लिम ३/१६१५)

७२- जो आदमी कुछ पिलाये या पिलाने की इच्छा करे उस के लिए दुआ

١٨٣ - ((اَللّٰهُمَّ أَطْعِمْ مَنْ أَطْعَمَنِيْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِيْ))

१८३. ऐ अल्लाह जो मुझे खिलाये तू उसे खिला और जो मुझे पिलाये तू उसे पिला। (मुस्लिम ३/१२६)

७३- जब किसी घर वालों के यहाँ रोज़ा इफ़्तारी करे तो उनके लिए दुआ करे

١٨٤ - ((أَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُوْنَ، وَأَكَلَ طَعَامَكُمُ الأَبْرَارُ، وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلاَئِكَةُ))

१८४. तुम्हारे पास रोज़ेदार इफ़्तार करते रहें और तुम्हारा खाना नेक लोग खायें और फ़रिश्ते तुम्हारे लिए दुआ करें। (अबू दाऊद ३/३६७, इब्ने माजा १/

५५६ और शैख़ अलबानी (रहि०) ने इसे सहीह कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद २/७३०)

७४- दुआ जब खाना हाज़िर हो और रोज़ादार रोज़ा न खोले

١٨٥- ((إِذَا دعِي أَحَدُكُمْ فَلَيُجِبْ، فَإِن كَانَ صَائِماً فَلْيُصَلِّ وَإِنْ كَانَ مُفْطِراً فَلْيَطْعَمْ))

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब तुम में से किसी को बुलाया जाये तो दावत क़ुबूल करे, अगर रोज़ादार हो तो (दावत देने वाले के लिए) दुआ करे और अगर रोज़े से न हो तो खाना खा ले। (मुस्लिम २/१०५४)

७५- रोज़ादार को जब कोई गाली दे तो क्या कहे?

١٨٦- ((إِنِّي صَائِمٌ، إِنِّيْ صَائِمٌ))

१८६. मैं रोज़े से हूँ, मैं रोज़े से हूँ। (बुख़ारी फ़तहुल बारी के साथ ४/१०३, मुस्लिम २/८०६)

७६- पहला फल देखने के समय की दुआ

١٨٧ - ((اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ ثَمَرِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِيْ مَدِيْنَتِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِيْ صَاعِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِيْ مُدِّنَا))

१८७. ऐ अल्लाह हमारे लिए हमारे फल में बरकत दे और हमारे लिए हमारे शहर में बरकत दे और हमारे लिए हमारे साअ में बरकत दे और हमारे लिए हमारे मुद में (अर्थात नाप-तौल के पैमानों में) बरकत दे। (मुस्लिम २/१०००)

७७- छींक की दुआ

١٨٨ - ((إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلِ الْحَمْدُ لله، وَلْيَقُلْ لَهُ أَخُوْهُ أَوْ صَاحِبُهُ: يَرْحَمُكَ اللهُ، فَإِذَا قَالَ لَهُ: يَرْحَمُكَ اللهُ، فَلْيَقُلْ: يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ))

१८८. जब तुम में से किसी को छींक आये तो कहे "اَلْحَمْدُ لله" (अल्हम्दुलिल्लाह) अर्थात सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है। और (सुनने वाला) उसका भाई

या साथी कहे "يَرْحَمُكَ اللهُ" (यरहमुकल्लाह) अर्थात अल्लाह तुझ पर दया करे, और जब वह उस के लिए "يَرْحَمُكَ اللهُ" कहे तो छींकने वाला उसे यूँ कहे " يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ" (यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम) अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा हाल दुरूस्त करे। (बुख़ारी ७/१२५)

७८- जब काफ़िर छींकते समय अलहम्दु-लिल्लाह कहे तो उसके लिए क्या कहा जाये

١٨٩- ((يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ))

१८९. अल्लाह तुम को हिदायत दे और तुम्हारी हालत दुरुस्त कर दे। (त्रिमिज़ी ५/८२ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/३५४, अहमद ४/४०० तथा अबू दाऊद ४/३०८)

७९- शादी करने वाले के लिए दुआ

١٩٠- ((بَارَكَ اللهُ لَكَ، وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِيْ خَيْرٍ))

१९०. अल्लाह तेरे लिए बरकत करे और तुझ पर बरकत करे और तुम दोनों को भलाई पर एकत्र करे। (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिज़ी १/३१६)

८०- शादी करने वाले की अपने लिए दुआ और सवारी ख़रीदने की दुआ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब तुम में से कोई आदमी किसी स्त्री से शादी करे या लौंडी ख़रीदे तो यह कहे :

١٩١ - ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ))

१९१. ऐ अल्लाह मैं तुझ से इसकी भलाई का सवाल करता हूँ और उस चीज़ की भलाई का सवाल करता हूँ जिस पर तूने इसे पैदा किया है और तेरी पनाह माँगता हूँ उस के शर से और उस चीज़ के शर से जिस पर तूने उसे पैदा किया है।

और जब कोई ऊँट या जानवर ख़रीदे तो उसकी

कोहान की चोटी पकड़ कर यही दुआ पढ़े। (अबू दाऊद २/२४८, इब्ने माजा १/६१७ और देखिए सहीह इब्ने माजा १/३२४)

८१- जिमाअ (सम्भोग) से पहले की दुआ

١٩٢ - ((بِسْمِ اللهِ. اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ، وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا))

१९२. अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह हमें शैतान से बचा और जो संतान हमें प्रदान कर उसे भी शैतान से बचा। (बुख़ारी ६/१४१, मुस्लिम २/१०२८)

८२- ग़ुस्सा (क्रोध) समाप्त करने की दुआ

١٩٣ - ((أَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ))

१९३. मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ। (बुख़ारी ७/९९, मुस्लिम ४/२०१५)

८३- किसी बीमारी या मुसीबत में मुब्तला आदमी को देखे तो यह दुआ पढ़े

١٩٤- ((اَلْحَمْدُ للهِ الَّذِيْ عَافَانِيْ مِمَّا ابْتَلاَكَ بِهِ وَفَضَّلَنِيْ
عَلَى كَثِيْرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلاً))

१९४. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने मुझे उस चीज़ से आफ़ियत दी जिस में मुझे मुब्तेला किया और उस ने मुझे अपने पैदा किए हुए बहुत से लोगों पर फ़ज़ीलत बख़्शी। (त्रिमिज़ी ५/४९४, ५/४९३ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५३)

८४- मजलिस में पढ़ने की दुआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए एक मजलिस में उठने से पहले सौ (१००) बार यह दुआ शुमार की जाती थी। (अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मजलिस में सौ बार यह दुआ पढ़ते थे)

١٩٥ - ((رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَتُبْ عَلَّي إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُوْرُ))

१९५. ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा, नि:संदेह तू ही तौबा कुबूल करने वाला, अति क्षमाशील है। (त्रिमिज़ी और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५३ तथा सहीह इब्ने माजा २/३२१ शब्द त्रिमिज़ी के हैं)

८५- मजलिस के गुनाह दूर करने की दुआ (मजलिस का कफ़्फ़ारा)

١٩٦ - ((سُبْحَانَكَ اَللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ))

१९६. ऐ अल्लाह तू पाक है और तेरे लिए हर प्रकार की प्रशंसा है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत (उपासना) के योग्य नहीं, मैं तुझ से क्षमा चाहता हूँ और तुझ से तौबा करता हूँ। (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५३)

हज़रत आईशा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न कभी किसी मजलिस में बैठे न कभी क़ुरआन पढ़ा न कोई नमाज़ पढ़ी मगर हमेशा इस दुआ के साथ समाप्त किया।

[फ़रमाती हैं कि मैंने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं आप को देखती हूँ कि आप जब किसी मजलिस में बैठते हैं और क़ुरआन से कुछ पढ़ते हैं या कोई नमाज़ पढ़ते हैं तो इस दुआ

سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ

के साथ ख़त्म करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। जो कोई भलाई की बात कहेगा तो यह दुआ उस भलाई वाली बात पर मोहर बना कर लगा दी जायेगी और अगर ज़ुबान से बुरी बात निकल गई है तो उसके लिए यह दुआ कफ़्फ़ारा बन जाती है। (मुसनद अहमद ६/७७)]

८६- जो आदमी कहे "ग़फ़ारल्लाहु लका" अर्थात अल्लाह तुझे बख़्श दे उसके लिए दुआ

١٩٧- ((وَلَكَ))

१९७. और तुझे भी (बख़्श दे)।

अब्दुल्लाह बिन सरजिस फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया तो आप के यहाँ मैंने खाना खाया और इस के बाद मैंने कहा: "ग़फ़ारल्लाहु लका या रसूलल्लाह" ऐ अल्लाह के रसूल अल्लाह तआला आप को बख़्शे, इसके उत्तर में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा : "व लका" और तुझे भी अल्लाह बख़्शे। (मुसनद अहमद ५/८२)

८७- जो अच्छा सुलूक (व्योहार) करे उसके लिए दुआ

١٩٨- ((جَزَاكَ اللهُ خَيْراً))

१९८. जिसके साथ कोई अच्छा सुलूक किया जाये

और वह अच्छा सुलूक करने वाले को कहे : (جَزَاكَ اللهُ خَيْرًا) तुझे अल्लाह तआला बेहतरीन बदला दे। तो उसने प्रशंसा करने में मुबालग़ा (अतियुक्ति) किया। (त्रिमिज़ी हदीस २०३५ और देखिए सहीहुल जामिअ हदीस ६२४४ तथा सहीह त्रिमिज़ी २/२००)

८८- वह दुआ जिसके पढ़ने से आदमी दज्जाल के फ़ितने से सुरक्षित रहता है

١٩٩ - ((من حفظ عشر آيات من أول سورة الكهف عصم من الدجال- (والاستعاذة بالله من فتنته عقب التشهد الأخير من كل صلاة.))

१९९. (१) जो आदमी सूरा कहफ़ के शुरू से दस आयतें याद कर ले वह दज्जाल से महफ़ूज़ रहेगा। (मुस्लिम १/५५५ और एक रिवायत में है कि सूर: कहफ़ के आख़िरी से १/५५६)

(२) हर नमाज़ के आख़िरी तशहहुद के बाद दज्जाल के फ़ितने से पनाह माँगना। (देखिए इसी किताब में दुआ नं॰ ५५,५६)

८९- जो आदमी कहे "मुझे तुम से अल्लाह के लिए मुहब्बत है" उसके लिए दुआ

٢٠٠- ((أَحَبَّكَ الَّذِي أَحْبَبْتَنِي لَهُ))

२००. अल्लाह तुझ से मुहब्बत करे जिस के लिए तूने मुझ से मुहब्बत की। (अबू दाऊद ४/३३३, शैख़ अलबानी ने इसकी सनद को हसन कहा, देखिए सहीह अबू दाऊद ३/९६५)

९०- जो आदमी तुम्हारे लिए अपना माल पेश करे उस के लिए दुआ

٢٠١- ((بَارَكَ اللهُ لَكَ فِيْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ))

२०१. अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे परिवार और माल में बरकत दे। (बुख़ारी फ़तहुल बारी के साथ ४/८८)

९१- क़र्ज (ऋण) अदा करते समय क़र्ज देने वाले के लिए दुआ

٢٠٢- ((بَارَكَ اللهُ لَكَ فِيْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ، إِنَّمَا جَزَاءُ السَّلَفِ الْحَمْدُ وَالأَدَاءُ))

२०२. अल्लाह तआला तेरे लिए तेरे परिवार तथा माल में बरकत दे। क़र्ज का बदला तो केवल प्रशंसा और अदा करना है। (इब्ने माजा २/८०९ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/५५)

९२- शिर्क से बचने की दुआ

٢٠٣- ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ أَنْ أُشْرِكَ بِكَ وَأَنَا أَعْلَمُ، وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لاَ أَعْلَمُ))

२०३. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस बात से कि मैं जानते हुए तेरे साथ किसी को साझी बनाऊँ, और उस(शिर्क) से भी तेरी बख़शिश माँगता हूँ जो मैं नहीं जानता। (मुसनद अहमद ४/४०३

और देखिए सहीहुल जामिअ ३/३२३ और सहीह तरग़ीब व तरहीब १/१९)

९३- जो आदमी किसी को कहे "बारकल्लाहु फ़ीका" (अल्लाह तुझे बरकत दे) तो उस के लिए क्या दुआ की जाये ?

٢٠٤- ((وَفِيكَ بَارَكَ اللهُ))

२०४. जिस आदमी को यह दुआ दी जाये कि: "بَارَكَ اللهُ فِيكَ" अर्थात अल्लाह तुझे बरकत दे तो इस के उत्तर में यह कहा जाये "وَفِيكَ بَارَكَ اللهُ" अर्थात अल्लाह तुझे भी बरकत दे। (इब्नुस्सुन्नी पृष्ठ १३८ हदीस नं॰ २७८ और देखिए इब्नुल कय्यिम की किताब अल-वाबिलुस्सय्यिब पृष्ठ ३०४)

९४- बदफ़ाली को मकरूह समझने की दुआ

अगर किसी के दिल में कोई बदफ़ाली या बदशगूनी की बात उत्पन्न हो जाये तो उससे नजात पाने के लिए यह दुआ पढ़े।

٢٠٥- ((اَللّٰهُمَّ لاَ طَيْرَ إِلاَّ طَيْرُكَ وَلاَ خَيْرَ إِلاَّ خَيْرُكَ وَلاَ إِلَهَ غَيْرُكَ))

२०५. ऐ अल्लाह किसी भी चीज़ में नहूसत नहीं मगर तेरी नहूसत और किसी चीज़ में भलाई नहीं मगर तेरी भलाई और तेरे सिवा कोई इबादत (उपासना) के योग्य नहीं। (अहमद २/२२० और देखिए अल-अहादीसुस्सहीहा ३/५४)

९५- सवारी पर सवार होने की दुआ

٢٠٦- ((بِسْمِ اللهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ (سُبْحَانَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِيْنَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اللهُ أَكْبَرُ، اللهُ أَكْبَرُ، اللهُ أَكْبَرُ، سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ إِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ، فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلاَّ أَنْتَ))

२०६. अल्लाह के नाम से। हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है, पाक है वह ज़ात जिसने इस सवारी को हमारे अधीन और क़ाबू में कर दिया है,

हालांकि हम इसे अपने अधीन में नहीं कर सकते थे और हम अल्लाह ही की ओर लौट कर जाने वाले हैं। सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है। ऐ अल्लाह तू पाक है, ऐ अल्लाह मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है, पस मुझे बख़्श दे क्योकि तेरे सिवा कोई गुनाहों (पापों) को क्षमा करने वाला नहीं। (अबू दाऊद ३/३४, त्रिमिज़ी ५/५०१ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५६)

९६- सफ़र (यात्रा) की दुआ

٢٠٧- ((اللهُ أَكْبَرُ، اللهُ أَكْبَرُ، اللهُ أَكْبَرُ، سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِيْنَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِيْ سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوَى، وَمِنْ الْعَمَلِ مَا تَرْضَى، اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ، اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِيْ السَّفَرِ، وَالْخَلِيْفَةُ فِيْ الأَهْلِ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ

فِيْ الْمَالِ وَالأَهْلِ))

२०७. अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है। पाक है वह जिस ने इसको हमारे क़ाबू में कर दिया, हालाँकि हम इसे अपने क़ाबू में न कर सकते थे। ऐ अल्लाह हम अपने इस सफ़र (यात्रा) में तुझ से नेकी और तक़वा का सवाल करते हैं और उस अमल का सवाल करते हैं जिसे तू पसन्द करे। ऐ अल्लाह हमारा यह सफ़र हम पर आसान कर दे और इसकी दूरी को हमारे लिए समेट कर कम कर दे। ऐ अल्लाह तू ही सफ़र में साथी और घर वालों में नायब है। (अर्थात घर वालों का निरीक्षक है) ऐ अल्लाह मैं तुझ से सफ़र की कठिनाई से और माल तथा परिवार के विषय में ग़मगीन करने वाले मंज़र (दृश्य) से और नाकाम लौटने की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ।

और जब सफ़र से घर की ओर वापस लौटे तो ऊपर की दुआ पढ़े और उसके साथ यह दुआ भी पढ़े।

((آيِبُوْنَ، تَائِبُوْنَ، عَابِدُوْنَ، لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ))

हम वापस लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले और अपने रब ही की प्रशंसा करने वाले हैं। (मुस्लिम २/९९८)

१७- किसी गाँव या शहर में दाख़िल होने की दुआ

٢٠٨- ((اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ، وَرَبَّ الأَرَضِيْنَ السَّبْعِ وَمَا أَقْلَلْنَ، وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنَ وَمَا أَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ أَهْلِهَا، وَخَيْرَ مَا فِيْهَا، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ أَهْلِهَا، وَشَرِّ مَا فِيْهَا))

२०८. ऐ अल्लाह, ऐ सातों आसमानों के प्रभु, और उन चीज़ों के रब जिन पर उन्होंने साया कर रखा है, और सातों ज़मीनों के रब और उनके रब जिन चीज़ों को उन्होंने उठा रखा है, और शैतानों के रब और उन चीज़ों के रब जिन्हें इन्होंने गुमराह किया है, और हवाओं के रब और जो कुछ उन्होंने उड़ाया

है । मैं तुझ से इस गाँव की भलाई और इस गाँव में रहने वालों की भलाई का सवाल करता हूँ और उस चीज़ की भलाई का सवाल करता हूँ जो इसमें है, और मैं इस गाँव की बुराई और इसके रहने वालों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ और उन चीज़ों की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ जो इस में है। (इमाम हाकिम ने इसे रिवायत करके सहीह कहा है और इमाम ज़हबी ने भी इसकी पुष्टि की है। २/१० ० अल्लामा शैख़ बिन बाज़ (रहि०) ने इसे हसन कहा है, देखिए तुहफ़तुल अख़यार पृष्ठ ३७)

९८- बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ

٢٠٩- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لاَّ يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ))

२०९. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी का मुल्क है और उसी के लिए प्रशंसा है, वह ज़िन्दा

करता और मारता है, और वह ज़िन्दा है उसे मौत नहीं आ सकती (अर्थात अमर है) उसके हाथ में भलाई है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (त्रिमिज़ी ५/२९१, हाकिम १/५३८ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/१५२ तथा सहीह इब्ने माजा २/२१ और शैख़ अलबानी ने हसन कहा है।)

९९- सवारी के फ़िसलने या गिरने के समय की दुआ

٢١٠- ((بِسْمِ اللهِ))

२१०. अल्लाह के नाम से। (अबू दाऊद ४/२९६, और इसकी सनद को शैख़ अलबानी ने सहीह कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद ३/९४१)

१००- मुसाफ़िर की दुआ मोक़ीम के लिए

٢١١- ((أَسْتَوْدِعُكُمُ اللهَ الَّذِي لاَ تَضِيْعُ وَدَائِعُهُ))

२११. मैं तुम्हें उस अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ जिसके

सुपुर्द की हुई चीज़ें कभी नष्ट और बरबाद नहीं होती। (अहमद २/४०३, इब्ने माजा २/९४३ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/१३३)

१०१- मोक़ीम आदमी की दुआ मुसाफ़िर के लिए

٢١٢- ((أَسْتَوْدِعُ اللهَ دِينَكَ، وَأَمَانَتَكَ، وَخَوَاتِيمَ عَمَلِكَ))

२१२. मैं तेरे दीन, तेरी अमानत और तेरे कामों के परिणाम को अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। (अहमद २/७, त्रिमिज़ी ५/४९९ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/१५५)

٢١٣- ((زَوَّدَكَ اللهُ التَّقْوَى، وَغَفَرَ ذَنْبَكَ، وَيَسَّرَ لَكَ الْخَيْرَ حَيْثُ مَا كُنْتَ))

२१३. अल्लाह तआला तुझे तक़वा प्रदान करे और तेरे गुनाह बख़्शे और तू जहाँ कहीं भी रहे अल्लाह तआला तुझे नेकी (के काम) मुयस्सर (आसान) करे। (त्रिमिज़ी और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५५)

१०२- सफ़र के बीच (दौरान) तस्बीह और तकबीर

٢١٤- قَالَ جَابِر رَضِيَ اللهُ عَنهُ: ((كُنَّا إِذَا صَعِدْنَا كَبَّرْنَا، وَإِذَا نَزَلْنَا سَبَّحْنَا))

२१४. हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हम ऊपर चढ़ते तो तकबीर "अल्लाहु अकबर" पढ़ते और नीचे उतरते तो तस्बीह "सुब्हानल्लाह" कहते थे। (फ़तहुल बारी ६/१३५)

१०३- मुसाफ़िर की दुआ जब सुबह करे

٢١٥- ((سَمِعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللهِ، وَحُسْنِ بَلائِهِ عَلَيْنَا. رَبَّنَا صَاحِبْنَا، وَأَفْضِلْ عَلَيْنَا عَائِذاً بِاللهِ مِنَ النَّارِ))

२१५. एक सुनने वाले ने हमारी ओर से अल्लाह की प्रशंसा और उसके हम पर जो अच्छे इनामात तथा एहसानात हैं उनका शुक्र सुना। ऐ हमारे रब! हमारा साथी बन जा और हम पर फ़ज़्ल (दया) फ़रमा, आग

से पनाह माँगते हुए यह दुआ करता हूँ। (मुस्लिम ४/२०८६)

१०४- सफ़र के दौरान जब मुसाफ़िर किसी मंजिल (मोक़ाम) पर उतरे उस समय की दुआ

٢١٦- ((أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ))

२१६. मैं अल्लाह के सम्पूर्ण कलिमात के साथ पनाह चाहता हूँ, उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की हैं। (मुस्लिम ४/२०८०)

१०५- सफ़र से वापसी की दुआ

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी युद्ध या हज से लौटते तो हर ऊँची जगह पर तीन बार अल्लाहु अकबर कहते फिर यह दुआ पढ़ते :

٢١٧- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، آيِبُوْنَ، تَائِبُوْنَ، عَابِدُوْنَ، لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ، صَدَقَ اللهُ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ

الأَحْزَابَ وَحْدَهُ))

२१७. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी का राज्य है और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। हम वापस लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले और केवल अपने रब की प्रशंसा करने वाले हैं। अल्लाह ने अपना वादा सच्चा कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद की और अकेले अल्लाह ने सारी सेनाओं (लश्करों) को शिकस्त दी। (पराजित कर दिया) बुख़ारी ७/१६३, मुस्लिम २/९८०)

१०६- खुश करने वाली या ना पसंदीदा चीज़ पेश आने पर क्या कहे?

२१८. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब कोई ख़ुश करने वाली चीज़ पेश आती तो फ़रमाते : ((الْحَمْدُ لله الَّذِي بِنِعْمَتِهِ تَتِمُّ الصَّالِحَات)) सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसके फ़ज़्ल से अच्छे काम मुकम्मल होते हैं। और जब कोई ऐसी चीज़

पेश आती जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नापसन्द होती तो फ़रमाते: ((اَلْحَمْدُ للهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ)) हर हालत में तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है। (शैख़ अलबानी (رحمه الله) ने सहीहुल जामिअ में इसे सहीह कहा है, ४/२०१ और हाकिम ने इसे सहीह कहा है १/४९९)

१०७- रसूलुल्लाह ﷺ पर सलात (दरूद) भेजने की फ़ज़ीलत

٢١٩-قال ﷺ ((مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا))

२१९. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "जो आदमी मुझ पर एक बार सलात (दरूद) पढ़े अल्लाह तआला उस पर दस बार अपनी रहमत भेजता है।" (मुस्लिम १/२८८)

٢٢٠-وقال ﷺ ((لا تجلعوا قبري عيداً وصلوا علي، فإن صلاتكم تبلغني حيث كنتم))

२२०. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया : "मेरी क़ब्र को मेलागाह मत बनाना और तुम जहाँ कहीं भी रहो वहीं से मुझ पर सलात पढ़ो, क्योंकि तुम जहाँ कहीं भी रहो तुम्हारी सलात मुझ तक पहुँचाई जाती है। (अबू दाऊद २/२१८, अहमद २/३६७ और अलबानी ने इसे सहीह कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद २/३२३)

٢٢١-وقال ﷺ ((البخيل من ذكرت عنده فلم يصل علي))

२२१. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "कंजूस वह है जिस के सामने मेरा ज़िक्र किया जाये और वह मुझ पर दरूद (सलात) न भेजे।" (त्रिमिज़ी ५/५५१ और देखिए सहीहुल जामिअ ३/२५ और सहीह त्रिमिज़ी ३/१७७)

٢٢٢-وقال ﷺ ((إن لله ملائكة سياحين في الأرض يبلغوني من أمتي السلام))

२२२. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते ज़मीन में घूमते फिरते रहते हैं जो मेरे उम्मतियों का सलाम मुझ तक पहुँचाते हैं।" (नसाई, हाकिम

२/४२१ और इस हदीस को शैख़ अलबानी (रहि॰) ने सहीह कहा है, देखिए नसाई १/२७४)

٢٢٣-وقال ﷺ ((ما من أحد يسلم علي إلا رد الله علي روحي حتى أرد عليه السلام))

२२३. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जब कोई भी आदमी मुझ पर सलाम पढ़ता है तो मेरी रूह (आत्मा) को अल्लाह तआला मेरे बदन में लौटा देता है यहाँ तक कि मैं उसके सलाम का जवाब देता हूँ। (अबू दाऊद हदीस नं॰ २०४१ और शैख़ अलबानी (रहि॰) ने इस हदीस को हसन कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद १/३८३)

१०८- सलाम का फैलाना

٢٢٤-وقال ﷺ ((لا تدخلوا الجنة حتى تؤمنوا، ولا تؤمنوا حتى تحابوا، أولا أدلكم على شيء إذا فعلتموه تحابتم، أفشوا السلام بينكم))

२२४. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया : "तुम स्वर्ग में दाख़िल नहीं हो सकते यहाँ तक कि मोमिन बनो और मोमिन नहीं बनोगे यहाँ तक कि एक-दूसरे से प्रेम करो। क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ कि जब तुम उस पर अमल करोगे तो एक-दूसरे से प्रेम करने लगोगे, वह अमल यह है कि सलाम को खूब फैलाओ।" (मुस्लिम १/७४)

٢٢٥-وقال ﷺ ((ثلاث من جمعهن فقد جمع الإيمان: الإنصاف من نفسك، وبذل السلام للعالم، والإنفاق من الإقتار))

२२५. हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि तीन चीज़ें ऐसी हैं कि जो आदमी इन तीनों को हासिल कर ले तो उस ने ईमान जमा कर लिया। (१) अपनी ज़ात के साथ इंसाफ़ (२) तमाम संसार वालों के लिए सलाम फैलाना (३) और तंगदस्ती तथा ग़रीबी में (अल्लाह की राह में) ख़र्च करना। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ १/८२ मौकूफ़, मोअल्लक यह सहाबी अम्मार (रज़ि अल्लाहु अन्हु) का फ़रमान है।)

٢٢٦- وعن عبد الله بـن عمـر رضـي الله عنـهما: أنّ رجـلا سـأل النبي ﷺ أي الإسـلام خير قـال:((تطعـم الطعـام، وتقرأ السلام على من عرفت ومن لم تعرف))

२२६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हुमा) फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि इस्लाम की कौन-कौन सी चीज़ें सब से अच्छी हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "यह कि तू (लोगों को) खाना खिलाये और जिसे पहचानता है और जिसे नहीं पहचानता सब से सलाम करे।" (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ १/५५, मुस्लिम १/६५)

१०९- जब काफ़िर सलाम कहे तो उसे किस प्रकार जवाब दिया जाये

٢٢٧- ((إذا سلم عليكم أهل الكتاب فقولوا: وَعَلَيْكُمْ))

२२७. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

फ़रमाते हैं कि जब तुम से यहूद व नसारा सलाम करें तो तुम उन्हें जवाब में "وَعَلَيْكُمْ" (और तुम पर भी) कहो । (बुख़ारी फ़तहुलबारी के साथ ११/४२, मुस्लिम ४/१७०५)

११०- मुर्ग़ बोलने और गदहा हींगने के समय दुआ

٢٢٨- ((إذا سمعتم صياح الديكة فأسألوا الله من فضله، فإنها رأت ملكاً وإذا سمعتم نهيق الحمار فتعوذوا بالله من الشيطان، فإنه رأى شيطاناً))

२२८. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब तुम मुर्ग़ की बाँग सुनो तो अल्लाह तआला से उसका फ़ज़्ल माँगो यानी यह पढ़ो : ((اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ)) हे अल्लाह मैं तुझ से तेरा फ़ज़्ल माँगता हूँ, क्योंकि उसने फ़रिश्ता देखा है और जब गदहे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह माँगो क्योंकि उस ने शैतान देखा

है । यानी यह पढ़ो : ((أَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ)) मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह (शरण) चाहता हूँ। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ६/३५०, मुस्लिम ४/२०९२)

१११- रात में कुत्तों का भूँकना (तथा गदहों का हींगना) सुन कर यह दुआ पढ़े

٢٢٩- ((إذا سمعتم نباح الكلاب ونهيق الحمير بالليل فتعوذوا بالله منهن فإنهن يرين ما لا ترون))

२२९. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब तुम रात में कुत्तों का भूँकना और गदहों का हींगना सुनों तो उन से अल्लाह की पनाह माँगों क्योंकि वह ऐसी चीज़ देखते हैं जो तुम नहीं देखते । (अबू दाऊद ४/३२७, अहमद ३/३०६ और शैख़ अलबानी ने इस हदीस को अल-कलिमुत्तैय्यिब की तख़रीज में सहीह कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद ३/९६१)

११२- उस आदमी के लिए दुआ जिसे तुम ने बुरा भला कहा हो या गाली दी हो

٢٣٠- ((اَللّٰهُمَّ فَأَيُّمَا مُؤمِنٍ سَبَبْتُهُ فَاجْعَلْ ذٰلِكَ لَهُ قُرْبَةً إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ))

२३०. अबू हुरैरा (रज़ि अल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह दुआ करते हुए सुना: اَللّٰهُمَّ فَأَيُّمَا مُؤمِنٍ سَبَبْتُهُ فَاجْعَلْ ذٰلِكَ لَهُ قُرْبَةً إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ऐ अल्लाह जिस मोमिन को मैंने बुरा भला कह दिया हो तो क़ियामत के दिन मेरे इस बुरा भला कहने को उसके लिए अपने क़रीब होने का माध्यम बना दे। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ११/१७१, मुस्लिम ४/२००७)

११३- कोई मुस्लिम जब किसी मुस्लिम की प्रशंसा करे

٢٣١- قال ﷺ ((إِذَا كَانَ أَحَدُكُمْ مَادِحاً صَاحِبَه لاَ محالة

فَلْيَقُل: أَحْسِبُ فُلاَناً وَاللهُ حَسِيبُهُ وَلاَ أُزَكِّي عَلَى اللهِ أَحَداً أَحِسبُهُ- إِنْ كَانَ يَعْلَمُ ذَاكَ- كَذَا وَكَذَا))

२३१. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम में से किसी को ज़रूर ही किसी की प्रशंसा करनी हो तो यह कहे:

मैं फ़लाँ के बारे में गुमान करता हूँ और अल्लाह उसका हिसाब लेने वाला है और मैं किसी को अल्लाह के सामने पाक नहीं समझता। मैं फ़लाँ को ऐसा-ऐसा (नेक या मुख्लिस वग़ैरह) समझता हूँ। यह प्रशंसा भी उस समय करे जब ख़ूब अच्छी तरह जानता हो। (मुस्लिम ४/२२९६)

११४- जब किसी मुसलमान आदमी की प्रशंसा की जाये तो वह क्या कहे

٢٣٢- ((اَللَّهُمَّ لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا يَقُولُونَ، وَاغْفِرْ لِي مَا لاَ يَعْلَمُونَ [وَاجْعَلْنِي خَيْراً مِمَّا يَظُنُّونَ]))

२३२. ऐ अल्लाह जो लोग मेरे बारे में कह रहे हैं

उस पर मेरी पकड़ मत करना और उस चीज़ के विषय में मुझे क्षमा कर दे जो वे नहीं जानते हैं [और मुझे उससे बेहतर बना दे जो वे मेरे बारे में गुमान करते हैं ।] (सहीहुल अदबिल मुफ़रद नं॰ ५८५)

११५- हज या उमरा का इहराम बाँधने वाला कैसे तलबिया कहे

٢٣٣- ((لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ، وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لاَ شَرِيْكَ لَكَ))

२३३. मैं हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई साझी नही, मैं हाज़िर हूँ, नि:संदेह सब प्रशंसा और कृपा (नेमत) एवं राज्य तेरे ही लिए है, तेरा कोई शरीक नहीं । (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ३/४०८, मुस्लिम २/८४१)

११६- हज्रे अस्वद वाले कोने पर अल्लाहु अकबर कहना चाहिए

٢٣٤- ((طاف النبي ﷺ بالبيت على بعير كلما أتى

الركن أشار إليه بشيء عنده وكبر))

२३४. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैतुल्लाह का तवाफ़ ऊँट पर बैठ कर किया, जब आप हज्रे अस्वद वाले कोने पर आते तो उसके पास पहुँच कर उसकी ओर किसी चीज़ (लाठी) से इशारा करते और फ़रमाते: "अल्लाहु अकबर"। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ३/४७६, 'किसी चीज़ से मुराद छड़ी है' देखिए बुख़ारी फ़त्ह के साथ ३/४७२)

११७- रुक्ने यमानी और हज्रे अस्वद के बीच (दरमियान) की दुआ

٢٣٥- ((رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ))

२३५. ऐ हमारे रब हमें दुनिया और आख़िरत में भलाई प्रदान कर और हमें नरक के अज़ाब से बचा। (अबू दाऊद २/१७९, अहमद ३/४११ शरहुस्सुन्ना लिल बग़वी ७/१२८)

११८- सफ़ा और मरवा पर ठहरने की दुआ

٢٣٦- ((إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ الله ... أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللهُ بِهِ ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ))

२३६. हज़रत जाबिर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हज का बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़ा के क़रीब पहुँचे तो यह दुआ पढ़ी :
((إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ الله ... أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللهُ بِهِ))
निःसंदेह सफ़ा और मरवा यह दोनों पहाडियाँ अल्लाह की निशानियों में से हैं। मैं उसी से शुरूआत कर रहा हूँ जिससे अल्लाह ने शुरूआत की है।

फिर आप ने सफ़ा से सई शुरू की उस पर चढ़े यहाँ तक कि बैतुल्लाह नज़र आने लगा और आप क़िब्ला की ओर मुँह करके अल्लाह की वहदानियत और बड़ाई बयान करते हुए यह दुआ पढ़ने लगे :

((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ))

अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के योग्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी का राज्य है और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है | अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं, वह अकेला है, उसने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की सहायता (मदद) की और अकेले अल्लाह ने सारी सेनाओं (लश्करों) को शिकस्त दी |

आप ﷺ ने इस दुआ को तीन बार दुहराया और इसके बीच में आप ने और भी दुआयें कीं, तथा आप ने मरवा पर भी ऐसे ही दुआ पढ़ी जैसे सफ़ा पर पढ़ी थी | (मुस्लिम २/८८८)

११९- अरफ़ा के दिन (९ ज़िलहिज्जा) की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : सब से बेहतर दुआ अरफ़ा के दिन की दुआ है और (उस दिन) मैंने और मुझ से पहले नबियों ने जो कुछ कहा है उस में सब

से बेहतर और अफ़ज़ल यह दुआ है :

٢٣٧- ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ))

२३७. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी का राज्य है और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (त्रिमिज़ी और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८४ और शैख़ अलबानी ने इसे हसन कहा है।)

१२०- मशअरे हराम के पास की दुआ

२३८. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़सवा (ऊँटनी) पर सवार हो गये जब मशअरे हराम के पास पहुँचे तो क़िब्ला की ओर मुँह करके अल्लाह से दुआ की, अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाह और कलिमा तौहीद कहते रहे, अच्छी तरह रौशनी होने तक यूँ ही ठहरे रहे, फिर सूर्य निकलने से पहले यहाँ से चल पड़े। (मुस्लिम २/८९१)

१२१- जमरात की रमी के समय हर कंकरी के साथ तकबीर

२३९. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीनों जमरात के पास जब भी कँकरी फेंकते अल्लाहु अकबर कहते फिर आगे बढ़ते और पहले तथा दूसरे जमरा के बाद दुआ करते, यहाँ तक कि आख़िरी जमरा की रमी करते हुए हर कंकरी के साथ अल्लाहु अकबर कहते और उसके पास बग़ैर रुके वापस हो जाते | (बुख़ारी फ़तहुल बारी के साथ ३/५८३, ५८४मुस्लिम ने भी इसे रिवायत किया है)

१२२- तअज्जुब या ख़ुशी के वक्त की दुआ

٢٤٠ - ((سُبْحَانَ اللهِ))

२४०. अल्लाह पाक है | (बुख़ारी फ़त्ह के साथ १/२१०, ३९०, ४१४, मुस्लिम ४/१८५७)

٢٤١ - ((اللهُ أَكْبَرُ))

२४१. अल्लाह सब से महान है | (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ८/४४१ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/१०३,

२/२३५ और अहमद ५/२१८)

१२३- ख़ुशख़बरी मिलने पर क्या करे?

२४२. नबी ﷺ को किसी ख़ुश करने वाली चीज़ की ख़बर मिलती तो आप अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हुए सजदा में गिर पड़ते । (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और देखिए सहीह इब्ने माजा १/२३३ और इर्वाउल ग़लील २/२२६)

१२४- जो आदमी अपने बदन में दर्द (तकलीफ़) महसूस करे वह कौन सी दुआ पढ़े

रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है कि बदन के जिस हिस्से में तकलीफ़ हो उस पर अपना हाथ रखो और तीन बार بسم الله (अल्लाह के नाम से) और सात बार यह दुआ पढ़ो :

٢٤٣- ((أَعُوْذُ بِاللهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ))

२४३. मैं अल्लाह तआला की इज़्ज़त और क़ुदरत की पनाह चाहता हूँ उस चीज़ के शर (बुराई) से जो मैं पाता हूँ और जिससे डरता हूँ। (मुस्लिम ४/१७२८)

१२५- जिसको अपनी ही नज़र लगने का भय हो तो क्या कहे

२४४. रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई आदमी अपने भाई या अपने यहाँ या अपने माल में प्रसन्न करने वाली चीज़ देखे तो उसे बरकत की दुआ करनी चाहिए, क्योंकि नज़र (लग जाना) हक (सत्य) है। (अहमद ४/४४७, और इब्ने माजा तथा मालिक और अलबानी ने सहीहुल जामिअ में सहीह कहा है १/२१२)

१२६- घबराहट के समय क्या कहा जाये?

٢٤٥- ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ))

२४५. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ६/१८१ तथा मुस्लिम ८/२२०८)

१२७- जानवर ज़िब्ह करते या क़ुर्बानी करते समय की दुआ

٢٤٦- ((بِسْمِ اللهِ وَاللهُ أَكْبَرُ [اَللَّهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ] اَللَّهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّي))

२४६. अल्लाह के नाम से (ज़िब्ह करता हूँ) अल्लाह सब से बड़ा है। [ऐ अल्लाह यह (क़ुर्बानी) तेरा प्रदान किया हुआ है और तेरे ही लिए है।] ऐ अल्लाह (यह क़ुर्बानी) मेरी ओर से क़ुबूल फ़रमा। (मुस्लिम ३/१ ५५७, बैहक़ी ९/२८७ बरैकिट के बीच में जो शब्द है वह बैहकी आदि का है, और अन्तिम शब्द मुस्लिम की रिवायत का अर्थ है)

१२८- सरकश शैतानों की ख़ुफ़िया तदबीरों के तोड़ के लिए दुआ

٢٤٧- ((أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِيْ لاَ يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلاَ فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، وَبَرَأَ وَذَرَأَ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا، وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِيْ الأَرْضِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ إِلاَّ طَارِقاً يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمَنُ))

२४७. मैं अल्लाह के मुकम्मल कलिमात की पनाह माँगता हूँ जिनसे कोई नेक और कोई बुरा आगे नहीं ग़ुजर सकता, हर उस चीज़ की बुराई से जिसे उसने

गढ़ा और पैदा किया और फैलाया, और हर उस चीज़ की बुराई से जो आकाश से उतरती है और उस चीज़ की बुराई से जो उसमें चढ़ती है और उस चीज़ की बुराई से जो उसने ज़मीन में फैलाया और उसकी बुराई से जो उससे निकलती है और रात तथा दिन के फ़ितनों की बुराई से और हर रात को आने वाले की बुराई से, सिवाये उस रात को आने वाले के जो भलाई के साथ आये, ऐ महान कृपालु तथा दयालु अल्लाह। (अहमद ३/४१९ सहीह सनद के साथ और मजमउज़्ज़वाईद १०/१२६)

१२९- अल्लाह से क्षमा (बख़्शिश) माँगना तथा तौबा व इस्तिग़फ़ार एवं क्षमा याचना करना

٢٤٨- قَالَ رسول الله ﷺ: ((والله إني لأَسْتَغْفِرُ اللهَ وأَتُوب إِلَيْه فِي اليوم أكثر من سبعين مرة))

२४८. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह की क़सम मैं दिन में सत्तर से अधिक बार अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ और उस की ओर तौबा करता हूँ। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ११/१०१)

٢٤٩- قَالَ رسول الله ﷺ: ((يا ايها الناس توبوا إلى الله فإنّي أتوب في اليوم إليه مائة مرة))

२४९. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ लोगो अल्लाह की ओर तौबा करो और नि:संदेह मैं उसकी ओर एक दिन में सौ (१००) बार तौबा करता हूँ। (मुस्लिम ४/२०७६)

٢٥٠- قَالَ رسول الله ﷺ: ((من قال أَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيمَ الَّذِيْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ غفر الله له وإن كان فر من الزحف))

२५०. और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो आदमी यह दुआ पढे: अल्लाह तआला उसे क्षमा कर देता है चाहे वह मैदाने जिहाद से भागा हुआ हो।

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيمَ الَّذِيْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ.

मैं उस महान और बड़े अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ जिसके सिवा कोई पूजा के योग्य नहीं, जो जीवित

सहायक आधार है और मैं उसी ओर तौबा करता हूँ| (अबू दाऊद २/८५, त्रिमिज़ी ५/५६९ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८२)

٢٥١- وَقَالَ ﷺ: ((أقرب ما يكون الرب من العبد في جوف الليل الآخر فإن استطعت أن تكون ممن يذكر الله في تلك الساعة فكن))

२५१. और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला बन्दे के सब से क़रीब रात के अंतिम (आख़िरी) हिस्से में होता है, अगर तुम उन लोगों में शामिल हो सको जो उस समय अल्लाह को याद करते हैं तो हो जाओ | (नसाई १/२७९ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८३)

٢٥٢- وَقَالَ ﷺ: ((أقرب ما يكون العبد من ربه وهو ساجد فأكثروا الدعاء))

२५२. और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : बन्दा अपने रब से सब से अधिक क़रीब सज्दे की हालत में होता है तो सज्दे में अधिक से अधिक दुआ करो | (मुस्लिम १/३५०)

٢٥٣-وَقَالَ ﷺ: ((إنه ليغان على قلبي وإني لأستغفر الله في اليوم مائة مرة))

२५३. रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मेरे दिल पर पर्दा सा आ जाता है और मैं अल्लाह से दिन में सौ (१००) बार क्षमा माँगता हूँ। (मुस्लिम ४/२०७५) इब्नुल असीर फ़रमाते हैं कि पर्दा सा आने से मुराद भूल है, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा अधिक से अधिक ज़िक्र व अज़कार और अल्लाह की इबादत में मशग़ूल रहते थे, लेकिन जब कभी इन में किसी चीज़ से कुछ ग़फ़लत हो जाती या आप भूल जाते तो उसे अपने लिए गुनाह शुमार करते और ऐसी हालत में अधिक से अधिक तौबा व इस्तिग़फ़ार करते। (देखिए जामिउल उसूल ४/३८६)

१३०-तस्बीह (سُبْحَانَ الله) तहमीद (الحمد لله) तहलील (لا إله إلا الله) और तक्बीर (الله أكبر) की फ़ज़ीलत

٢٥٤- قَالَ ﷺ: مَن قَالَ ((سُبْحَانَ الله وَبِحَمْدِهِ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ حطت خطاياه ولو كانت مثل زبد البحر))

२५४. और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं : जो आदमी (سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ) एक दिन में सौ (१००) बार कहे उसके गुनाह (पाप) माफ़ कर दिये जाते हैं चाहे समुद्र की झाग के बराबर हों। (बुख़ारी ७/१६८, मुस्लिम ४/२०७१)

٢٥٥- وَقَالَ ﷺ: ((مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ عشر مرار. كان كمن أعتق أربعة أنفس من ولد إسماعيل))

२५५. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जिसने दस बार यह दुआ पढ़ी :

لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी का राज्य है और उसी के लिए प्रत्येक प्रकार की प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। वह उस आदमी की तरह होगा जिसने इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से चार ग़ुलाम आज़ाद

किये हों। (बुख़ारी ७/६७, मुस्लिम ४/२०७१)

٢٥٦- وَقَالَ ﷺ: ((كلمتان خفيفتان على اللسان، ثقيلتان في الميزان، حبيبتان إلى الرحمن: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ))

२५६. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि दो कलमे (वाक्य) ज़बान पर हल्के हैं लेकिन मीज़ान (तराज़ू) में भारी हैं और अल्लाह को बड़े प्यारे हैं : سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ पाक है अल्लाह और उसी के लिए हर प्रकार की प्रशंसा है, पाक है अज़मत वाला अल्लाह। (बुख़ारी ७/१६८, मुस्लिम ४/२०७२)

٢٥٧- وَقَالَ ﷺ: ((لأن أقول سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ للهِ، وَلاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ، أحب إلي مما طلعت عليه الشمس))

२५७. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं मेरे नज़दीक सुब्हानल्लाह, अलहम्दु-

लिल्लाह और ला इलाहा इल्लल्लाह तथा अल्लाहु अकबर का कहना [अल्लाह पाक है, और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, और अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं और अल्लाह महान है] सारी दुनियाँ से अधिक महबूब (प्रिय) है। (मुस्लिम ४/२०७२)

٢٥٨- وَقَالَ ﷺ: ((أيعجز أحدكم أن يكسب كل يوم ألف حسنة فسأله سائل من جلسائه كيف يكسب أحدنا ألف حسنة؟ قال: يسبح مائة تسبيحة، فيكتب له ألف حسنة أو يحط عنه ألف خطيئة))

२५८. हज़रत सअद (रज़ि अल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे थे तो आप ने फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई इससे भी आजिज़ है कि हर दिन एक हज़ार नेकी कमाये? आप के पास बैठे हुए साथियों में से एक ने कहा हम में से कोई हज़ार नेकी कैसे कमा सकता है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सौ बार तस्बीह कहे तो उसके लिए हज़ार

नेकी लिखी जायेगी या उस से एक हज़ार गुनाह समाप्त कर दिया जायेगा। (मुस्लिम ४/२०७३)

٢٥٩- من قَالَ:((سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهِ غرست له نخلة في الجنة))

२५९. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जो आदमी यह दुआ سُبْحَانَ اللهُ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهِ पढ़े [अल्लाह अपनी अज़मतों (महानताओं) और प्रशंसा के साथ पाक है] उसके लिए जन्नत (स्वर्ग) में खजूर का एक पेड़ लगा दिया जाता है।

٢٦٠-وَقَالَ ﷺ:((يا عبد الله بن قيس ألا أدلك على كنز من كنوز الجنة؟ فقلت: بلى يا رسول الله، قال: قل لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ))

२६०. अब्दुल्लाह बिन क़ैस कहते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ अब्दुल्लाह बिन क़ैस क्या मैं तुझे स्वर्ग के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना न बताऊँ? मैंने कहा या रसूलुल्लाह

क्यों नहीं ज़रूर बताईये, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कहो لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ अल्लाह की तौफ़ीक़ के बिना (पाप से) बचने का साहस है न (नेकी करने की) शक्ति। (बुख़ारी फ़त्ह के साथ ११/२१३ तथा मुस्लिम ४/२०७६)

٢٦١- وَقَالَ ﷺ: ((أحب الكلام إلى الله أربع: سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ للهِ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ، لا يضرك بأيهن بدأت))

२६१. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि सबसे महबूब कलाम चार कलिमात (वाक्य) हैं : سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ للهِ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ [अल्लाह पाक है, और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, और अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं और अल्लाह महान है] और इन में से जिससे भी चाहो शुरू कर लो तुम्हें कोई नुकसान नहीं। (मुस्लिम ३/१६८५)

٢٦٢- جاء أعرابي إلى رسول الله ﷺ فقال: علمني كلاما أقوله: قال: ((قل: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، اللهُ أَكْبَرُ كَبِيْراً وَالْحَمْدُ للهِ كَثِيْراً، سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ)) قال فهؤلاء لربي فما لي؟ قال: ((قُلْ اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لِيْ، وَارْحَمْنِيْ، وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ))

२६२. [साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि अल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि] रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक देहाती आया और कहने लगा मुझे कुछ दुआयें सिखाईये जो मैं पढ़ा करूँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कहो :

(لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، اللهُ أَكْبَرُ كَبِيْراً وَالْحَمْدُ للهِ كَثِيْراً، سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ)

अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, अल्लाह सब से

बड़ा है, बहुत बड़ा और तमाम प्रशंसा केवल अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह बहुत पवित्र है जो सारे जहानों का रब है। कोई शक्ति नहीं और न कोई क्षमता मगर अल्लाह की सहायता से जो ग़ालिब हिक्मत वाला है।

देहाती ने कहा इस में तो मेरे महान रब की प्रशंसा है, मेरे लिए क्या है? तो आप ने फ़रमाया कहो: ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ، وَارْحَمْنِيْ، وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ)) ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे और मुझ पर दया कर और मुझे हिदायत दे और मुझे रोज़ी दे। (मुस्लिम ४/२०७२, और अबू दाऊद ने इस शब्द की ज़्यादती के साथ बयान किया है कि जब देहाती वापस जाने लगा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अवश्य उस आदमी ने अपने दोनों हाथ भलाई से भर लिए। १/२२०)

٢٦٣- كان الرجل إذا أسلم علمه النبي ﷺ الصلاة ثم أمره أن يدعو بهؤلاء الكلمات: ((اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي، وَارْزُقْنِي))

२६३. जब कोई आदमी मुसलमान हो जाता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे नमाज़ सिखाते फिर उसे इन कलिमात के साथ दुआ करने का आदेश देते :

«اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي، وَارْزُقْنِي»

ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे, मुझ पर दया कर, मुझे हिदायत दे, मुझे आफ़ियत दे और मुझे रोज़ी दे। (मुस्लिम ४/२०७३, तथा मुस्लिम की एक दूसरी रिवायत में है कि यह कलिमात तेरे लिए तेरी दुनिया और आख़िरत एकत्र (इकठ्ठा) कर देंगे।)

٢٦٤- «إن أفضل الدعاء الْحَمْدُ لله وأَفْضل الذكر لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ»

२६४. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि सब से अफ़ज़ल दुआ الْحَمْدُ لله 'अलहम्दु लिल्लाह' है (सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है) और सब से अफ़ज़ल ज़िक्र «لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ» 'ला इलाहा इल्लल्लाह' है

[अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं है] (त्रिमिज़ी ५/४६२, इब्ने माजा २/१२४९ तथा हाकिम १/५०३ और इसे सहीह कहा है)

٢٦٥- الباقيات الصالحات: ((سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ للهِ، وَلاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ، وَ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ))

२६५. अलबाक़ियातुस्सालिहात 'अर्थात बाक़ी रहने वाला नेक अमल' यह हैं :

(سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ للهِ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ، وَ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ)

अल्लाह पाक है, और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं, अल्लाह महान है, कोई शक्ति नहीं और न कोई क्षमता मगर अल्लाह की सहायता से। (अहमद हदीस नं॰ ५१३)

१३१- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तस्बीह कैसे पढ़ते थे

٢٦٦- عن عبد الله بن عمرو رضي الله عنهما قال: ((رأيت النبي ﷺ يعقد التسبيح بيمينه))

२६६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं कि मैंने नबी ﷺ को देखा आप दायें हाथ से तस्बीह गिनते थे। (अबू दाऊद २/८१, त्रिमिज़ी ५/५२१ और देखिए सहीहुल जामिअ ४/२७१)

१३२- मुख़्तलिफ़ (अनेक प्रकार की) नेकियां और जामिअ आदाब

٢٦٧- ((إذا كان جنح الليل - أو أمسيتم - فكفوا صبيانكم، فإن الشياطين تنتشر حينئذ، فإذا ذهب ساعة من الليل فخلوهم، وأغلقوا الأبواب واذكروا اسم الله، فإن الشيطان لا يفتح باباً مغلقاً، وأوكوا قربكم واذكروا اسم الله، وخمروا آنيتكم واذكروا اسم الله، ولو أن تعرضوا عليها شيئاً وأطفئوا مصابيحكم))

२६७. रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब रात का अंधेरा छा जाये या फ़रमाया कि जब शाम हो जाये तो अपने बच्चों को रोक लो क्योंकि शैतान उस समय फैलते हैं और जब रात का कुछ हिस्सा बीत जाये तो उन्हें छोड़ दो और दरवाज़े बिस्मिल्लाह पढ़ कर बन्द कर लो, क्योंकि शैतान बन्द दरवाज़ा नहीं खोलता और अपने मश्कीज़ों के मुँह तस्में से बाँध दो और अल्लाह का नाम लो यानी बिस्मिल्लाह पढ़ो और अपने बरतन ढाँक दो और अल्लाह का नाम लो यानी बिस्मिल्लाह पढ़ो अगर ढाँकने के लिए कुछ न मिले तो कोई चीज़ ही उस पर रख दो और अपने चिराग़ बुझा दो । (बुख़ारी फ़त्ह के साथ १०/८८ तथा मुस्लिम ३/१५९५)

وَصَلَّى اللهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ أَجْمَعِيْنَ.

अल्लाह की रहमत और सलामती और बरकत हमारे नबी मुहम्मद ﷺ और उनकी संतान तथा आप के सब साथियों पर अवतरित (नाज़िल) हो ।

حصن المسلم

تأليف

سعيد بن علي بن وهف القحطاني

باللغة الهندية

وكالة المطبوعات والبحث العلمي
وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد
المملكة العربية السعودية

١٤٣٦ هـ